G20

भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

St. Paul Teachers' Training College Birsinghpur

उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

Volume-04
Year
2023

अपराजिता

ST. PAUL TEACHERS TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR (BIHAR)

अपराजिता

Editor

Surendra Prasad Chaudhary **(Chief Editor)**

Sm. Tahseen Alam Quadri

Arpana Kumari

Sweta Kumari

Hasan Abad

Aditya Prakash

Technical Support

Suraj Kumar

Amarjeet Kumar

Sponsored By

ST. PAUL TEACHERS TRAINING COLLEGE

BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR (BIHAR)

KHEL SAHITYA KENDRA

7/26, Ansari Road, Darya Ganj,

New Delhi – 110 002

Published by:

KHEL SAHITYA KENDRA

7/26, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi – 110 002.
Phones 011-42564726, 47090343, 43551324, (M) 9811088729
E-mail: khelsahitya@rediffmail.com, vivekthani@gmail.com
Website: www.khelsahitya.com, www.kskpublisher.com

© 2023 – Editors

ISBN**: 978-93-5877-880-9**

PRINTED IN INDIA 2023

No part of this publication may be re-produced, stored in a retrieval system or published/distributed in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning, web or otherwise without the written permission of the Publisher. Author has obtained all the information in this book from the sources believed to be reliable and true. However, Publisher or its editors or illustrators don't take any responsibility for the absolute accuracy of any information published, and the damages or loss suffered thereupon.

Typeset by:

K.S.K. DTP UNIT, DELHI

Printed at:

ASIAN OFFSET, DELHI

संपादक मंडल

संत पॉल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका अपराजिता का चौथा संस्करण प्रकाशित करने जा रहा है। यह क्षण महाविद्यालय परिवार के लिए हर्ष का विषय है। हमलोग शिक्षा के क्षेत्र मे कुछ अलग करना चाहते हैं इसलिए इस दिशा में हमलोग लगातार अपनी पूरी क्षमता से प्रयासरत हैं। संत पॉल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय मिथिला विश्वविद्यालय में अपनी एक अलग पहचान रखता है। ऐसा इसलिए संभव हो सका है क्योंकि महाविद्यालय के सचिव श्री अविनाश कुमार दूरदर्शिता एवं शिक्षा के क्षेत्र में कुछ अलग और बेहतर करने की चाह में इस महाविद्यालय कों दिनों –दिन कामयाबी की उँचाईयों पर ले जा रहे है। हमारे महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 रोली द्विवेदी जी का भी इस महाविद्यालय को सफलता की उँचाईयों पर ले जाने का पूरा श्रेय है क्योंकि वे इस संस्थान के लिए पूरी तरह से समर्पित है। इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देशय प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। इस पत्रिका के माध्यम से उन्हे अपने विचारों को रखने का अवसर मिलता है। इसके द्वारा उनमें सृजनात्मक, कल्पनात्मक आदि शक्ति का विकास होता है। दूसरी बात यह है कि यह पत्रिका एक प्रकार से दर्पण है जो हमारे महाविद्यालय को प्रतिबिम्बित करती है। इस पत्रिका के प्रकाशन में हमारे महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक श्री सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी एवं प्राध्यापकों की भी महती भूमिका है। इसके अतिरिक्त तकनीकि कर्मचारियों ने भी इस पत्रिका के प्रकाशन मे पूरा सहयोग दिया है।

मै सभी व्यक्तियों का ह्रदय से अभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होनें इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका बुद्धिजीवियों एवं छात्रों को एक नई दिशा दिखाने की ओर अग्रसर रहेगी।

APRAJITA

Editorial Team

Chief Editor

Surendra Prasad Chaudhary
Asst. Professor

Sm. Tahseen Alam Quadri
Asst. Professor

Arpana Kumari
Asst. Professor

Aditya Prakash
Asst. Professor

Hasan Abad
Asst. Professor

Sweta Kumari
Asst. Professor

Technical Support

Suraj Kumar

Amarjeet Kumar

संदेश

जीतने का वादा करो, कोशिश हमेशा ज्यादा करों

किस्मत भी रूठे पर हिम्मत न टूटे, मजबूत इतना ईरादा करों।

डॉ0 रोली द्विवेदी
प्राचार्या

"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे आप दुनिया को बदल सकते हैं।" – नेल्सन मैन्डेला

मानव सभ्यता की उन्नति षिक्षा से अत्यन्त प्रभावित है। इसलिए समय के साथ–साथ लोगों के सीखने के तरीकों में भी परिवर्तन आया है, और विकासषील प्राद्यौगिकी के परिणामस्वरू ये सब कार्य व्यवहारिकता मे सम्मिलित हो चुके हैं। इन्टरनेट और अन्य डिजिटल प्रौद्योगिकी का आभार करती हूँ क्योंकि पारम्परिक कक्षाओं की तुलना में आनलाईन सीखने–सिखाने का वातावरण अधिक लोकप्रिय हो रहा है।

षिक्षा द्वारा कौषल और सुख सामृद्धि प्राप्त की जा सकती है। यदि व्यक्ति को सुखी जीवन व्यतीत करना है तो उसे अपने अन्दर विभिन्न प्रकार के कौषलों के विकसित करने की आवष्यकता है, जिसकों षिक्षा के अभाव मे पूर्ण नहीं किया जा सकता है। वर्तमान समय में इन्टरनेट और डिजिटल प्रौद्योगिकी ऐसे साधन है जो षिक्षार्थियों के कौषल विकास में सहायक सिद्ध हो सकते है।

षिक्षा के महत्व को देखते हुए इसे अधिक व्यापक बनाने की आवष्यकता हैं। षिक्षा के जन–जन तक फैलाने के लिए अनेक कारगर उपाय किए जा सकते हैं इन उपायों द्वारा षिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है।

हम शिक्षार्थियों में कौशल विकास करते है। हम अपने शिक्षार्थियों को अपनी क्षमता की पहचान करने में सहयोग करते हैं और निरंतर प्रयास, धैर्य और ध्यान के माध्यम से लक्ष्य की ओर मार्ग प्रशस्त करते हैं । हम शिक्षार्थियों को कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित करते है । हमारे महाविद्यालय की समस्त गतिविधियों का उद्देश्य केवल शैक्षिक उपलब्धि हासिल करवाने पर नहीं है, बल्कि शिक्षार्थियों की समाज उपयोगी एवं सामर्थ्य को समझने, परोपकार की ज्योति जलाने, राष्ट्रीयता का विकास करने का हैं।

हम आशा ही नहीं करते पूर्ण विश्वास करते हैं कि एक दिन हमारे शिक्षार्थी, हमारे महाविद्यालय का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराएगें। हमारा प्रयास हैं कि सभी शिक्षार्थी अच्छे सवप्न देखें और उन्हे पूरा करने के लिए सतत् प्रयास करें ।

धन्यवाद !

क्र0 सं0	विवरण		पृष्ठ
1	भगवान बुद्ध के विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता	डॉ0 रोली द्विवेदी	1
2	Globalization of Higher Education in India: Prospects and Problems	Manoj Kumar	4
3	शिक्षा में बहुभाषिता चुनौतियाँ एवं संभावनाए	सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी	10
4	Value Based Education Need of time	S.M.Tahseen Alam Qudari	13
5	Impact of Digitalization of Education	Chandra Bhushan Mishra	13
6	प्रिन्ट मीडिया और मूल्य शिक्षा का व्यक्तित्व पर प्रभाव	मो0 निजामुद्दीन	14
7	Intership Programme for Prepration of quality teacher in context to India	Shyam Kishor Sing	17
8	Impact of digitalization of education	N.K.Thakur	19
9	Education reform in India	Mukesh Kumar	22
10	भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से शिक्षक शिक्षा	मिथिलेश कुमार	24
11	नई शिक्षा नीति	डॉ0 पवन कुमार	26
12	Phubbing Behaviour	Arpana kumari	27
13	माध्यमिक स्तर के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन	श्वेता कुमारी	30
14	Reinventing Teacher Education in context of NEP-2020	Shipra kumari	33
15	भारतीय उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं शिकारी पत्रिकाओं का फैलता जाल एक समीक्षा	मीना कुमारी	35
16	Innovative Techniques and Methods in Teaching English language	Partha Ghosh	38
17	समाजिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका	आदित्य प्रकाश	41
18	Awareness about inclusive education among elementary school teacher	Hasan Abad	44
19	प्राथमिक स्तर के प्रभावी अधिगम में अभिभावकों एवं विद्यालय की सहभागिता	प्रियंका शर्मा	48
20	पेंटिंग का महत्त्व	आवृति चन्द्रश	51
21	NEP 2020 के संदर्भ में शिक्षा को बदलना	संजीव कुमार सिंह	52
22	नई शिक्षा के आलोक में महर्षि अरविन्दो एवं स्वामी विवेकानन्द के दिग्दर्शन	अवनीत कुमार	53
23	शिक्षा मे मनोविज्ञान का महत्व	कुमार सौरव	55
24	शिक्षा द्वारा समाज का निर्माण	सूरज कुमार	56
25	Role of motivation in education	Amarjeet Kumar	57
26	भारत में व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता और दायरा	Pawan Kumar	59
27	Value of Discipline in Student's Life	Gulshan Kumar	60
28	Impact of digitalization on education	Manisha kumari	61
29	Importance of Research and Innovations in Teacher Education	Shubham Priyesh	62
30	The Importance of Education	Manish Kumar	62
31	The Impact of Digitalization Education	Kundan Kumar	63

32	अपनी मिट्टी से लगाव	साक्षी कुमारी	63
33	A Society's Guide for Women: Desire-Duty Conflict through Disney's Lens	Priti kumari	64
34	आजादी के बाद का भारत	अनामिका कुमारी	65
35	स्वामी विवेकानन्द के वो पाँच शब्द...	अंकित कुमार	66
36	मेरे सपनों का भारत 2047	दिव्यांशु	66
37	हिन्दी भाषा	लक्ष्मी कुमारी	67
38	''जल है तो कल है''	खुशबू कुमारी	68
39	लक्ष्य	खूशी कुमारी	69
40	ऑनलाइन शिक्षा : एक विकल्प	चाँदनी कुमारी	70
41	भारत में डिजिटल शिक्षा का प्रभाव	Ajay Kumar	71
42	दीर्धआयु से उत्तम गुणवत्तापूर्ण जीवन	Badri Kumar	72
43	शिक्षा पर आधुनिकीकरण का प्रभाव	प्रवीण कुमार	73
44	"शिक्षा में कला एवं नाटक का एकीकरण"	Shivangi Raj kiran	74
45	शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का महत्त्व	शिवम् कुमार	75
46	शिक्षा का महत्व	अनिष कुमार	76
47	हौसलों की उड़ान	चाँदनी कुमारी	76
48	हमारी संस्कृति	अभिज्ञान रंजन	77
49	ऑनलाइन शिक्षा के फायदे और नुकसान	ज्योति कुमारी	78
50	Youth: Social Inclusion and Responsibilities	Rajnisha Kumari	79
51	सफलता का मंत्र	शिक्षांजली कुमारी	80
52	जंतु विज्ञान का महत्व	लक्ष्मी कुमारी	81
53	आदर्श शिक्षक	वंदना कुमारी	82
54	असली शांती	शालिनी कुमारी	83
55	आधुनिक युग में नारी शिक्षा का महत्व	Sushma Swaraj	84
56	Destiny of a nation is shaped in its classrooms	Kajal Kumari	85
57	एक फासला :सफलता और असफलता के बीच	ज्योति कुमारी	86
58	शिक्षा में समानता	नेहा कुमारी	87
59	अर्थषास्त्र और इनके महत्व	चाँदनी कुमारी	88
60	Biomedical waste management	Sharda Kumari	89
61	गुरू की सलाह का महत्व	सिम्पी कुमारी	90
62	प्रकृति और समाज	मो. मेराज	91
63	परमाणु शक्ति शाांति हेतु	भव्या कुमारी	92
64	आधुनिक समाज में शारीरिक शिक्षा का महत्व	Julee Kumari	93
65	Terrorism - A threat to Global peace	Shambhvi	94
66	शिक्षा एवं मानव	रागनी कुमरी	95

भगवान बुद्ध के विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता

डॉ0 रोली द्विवेदी
प्राचार्या

आज संपूर्ण विश्व चतुर्दिक हिंसा एवं साम्प्रदायिक दंगों की विभिषिका में घिर कर विश्व – युद्ध के कगार पर खड़ा हुआ है। अशांति एवं स्वार्थ के चरमोत्कर्ष का ही परिणाम है कि व्यक्ति संत्रास्त, कष्टग्रस्त एवं दुःखी है। संदेह एवं अविश्वास ने संपूर्ण वातावरण को विषम बना डाला है मनुष्य ही मानवता का भक्षक बना हुआ ळें धर्म के नाम पर पाखण्ड एवं दिखावा कर्म के नाम पर हिंसा, छल, कपट धोखा, बेइमानी प्रत्यक्षतः दृष्टिगत होता है। मर्यादाओं का परित्याग कर स्वच्छन्दता एवं उद्दण्डता को अपनाकर असहिष्णु बन गया है। जो संघर्ष की स्थिति को स्वयमेय जन्म देती है परिणामस्वरूप मनुष्य के मन में स्वार्थ, ईर्ष्या चोरी, झूठ, हिंसा ने स्थान बना लिया है। जिन संस्कारों एवं मर्यादाओं के पालन से आदर्शों की परिधि एवं मानवता की बृद्धि होती थी, वही मानवता, वर्तमान में स्वार्थ लोलुपता एवं संस्कारहीनता के अंधकूप में अत्यधिक गहराई तक पतनोन्मुख होती जा रही है। देश, धर्म एवं सम्प्रदाय के नाम पर विभक्त हो रहा है। धर्म का स्वरूप विकृत होकर व्यावहारिक रूप में मात्रा पाखण्ड बनकर अपना अर्थ, स्वरूप एवं व्यापकता खोकर संकीर्ण हो चुका है। असत्य, चोरी एवं लिप्सा की बढ़ती घृणास्पद प्रवृत्ति से संघर्ष हेतु हमें अपनी प्राचीन परंपराओं का ही अनुगमन करना पडेगा। आज के भारतीय जीवन दर्शन में मानव के अस्तित्व की लड़ाई को जीतने के लिए समस्त तथ्यों की आवश्यकता है, जो भारतीय दर्शन के मूल में हैं एवं लोक मंगल की भावना से ओत – प्रोत है।

बौद्ध शिक्षा दर्शन मानव के उत्थान हेतु मानव मूल्यों को जाग्रत करने में तथा मानव मूल्यों की स्थापना करने में सक्षम है। भारतीय जीवन दर्शन का मूलाधार चार तत्व है। बौद्ध दर्शन भी इन चारों में अद्भुत समन्वय स्थापित करता है, धर्म तो जीवन का विशिष्ट व्यवहारिक तत्व है। जो व्यक्ति बिना किसी अहित एवं बिना किसी को कष्ट पहुॅचाये जीवन व्यतीत करता है वही सच्चे अर्थो में धर्म का पालन करता है उसी को धार्मिक कहा जाता है। बौद्धदर्शन के अन्तर्गत धर्म को नैतिक आचारपरक संहिता के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है। अर्थ तथा काम को बौद्ध दर्शन मर्यादाओं के भीतर स्वीकार्य करता है। इससे बौद्ध शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया गया है। मोक्ष तो बौद्ध दर्शन का परम लक्ष्य माना गया है। भगवान ने मोक्ष के मार्ग की खोज हेतु अपना जीवन व्यतीत कर दिया, बुद्ध का मोक्ष मार्ग समस्त मानव के लिए था।

बुद्ध, संघ धर्म बौद्ध शिक्षा के तीन अंग थे। बुद्ध का अर्थ है आचार्य तथा ज्ञान की प्राप्ति हेतु संघ का होना परमावश्यक है, तत्कालीन संघ का तात्पर्य शिक्षा केन्द्र से माना जाता है। ज्ञान प्राप्ति हेतु संघ में प्रवेश लेना परमावश्यक था। तत्कालीन संघों में सुयोग्य विद्वान एवं आचार्यों द्वारा प्रदान की जाती है। 'धर्म' बौद्ध ज्ञान का तृतीय महत्वपूर्ण लक्ष्य तथा अंग था। धर्म के ज्ञान से ही सच्चे तथा वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति होती है। वर्तमान ज्ञान के संरचना में शिष्य, गुरू एंवम तालीम केन्द्र, पाठ्यक्रम आदि के महत्ता को माना गया, किन्तु धर्म का प्रवेश स्वीकार्य नहीं है। धर्म से ही नैतिकता का प्रादुर्भाव सम्भव है। अधुनातन शिक्षा प्रणाली का प्रमुख आधार समानता तथा सर्वधर्म समभाव है। तथा विद्वानों द्वारा समकालीन शिक्षा में नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना के कोशिश किया जा रहा है, किन्तु नवीन जीवन मूल्य नैतिकता का विकास करते हैं वे भारतीय जीवनदर्शन एवं जीवन मूल्यों को अपनाने से ही संभव हैं क्योंकि भारतीय जीवन मूल्यों के अनुसार ही मानव जीवन का सम्पूर्ण विकास सम्भव हैं, ये प्राचीन जीवनादर्श सांस्कृतिक, सभ्य, अनुशासनबद्ध एवं सदाचारी बनाते है। सामाजिक समानता तथा आर्थिक एवं राजनैतिक समानता, प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों को वर्तमान ज्ञान के स्वरूप में बिना समावेशन के संभव नहीं है। भारतीय जीवन मूल्यों के स्तम्भ पर ही मानव जीवन का सम्पूण उन्नति संभव है। बौद्ध दर्शन की प्रेरणा से ही

'सर्वेभवन्तु सुखिनः' की कल्पना साकार की जा सकती है। समकालीन शिक्षा स्वरूप में जो ज्ञान व्यवस्था प्राप्त होती है वह बहुत कुछ अप्रत्यक्ष रूप से बौद्धधर्म एवं दर्शन से प्रभावित है। पाठ्यक्रम विस्तृत, उपयोगी तथा अलग–अलग थे। नालन्दा, तक्षशिला, बल्लभी, विक्रमशिला, काशी, ओदन्तपुरी में बड़े–बड़े शिक्षा केन्द्रों की स्थापना थी जहां सुयोग्य विद्वानों तथा आचार्यो ं द्वारा हजारों की संख्या में विद्यार्थियों को अलग–अलग प्रकार की शिक्षा नियमबद्ध एवं अनुशासन के वातावरण में प्रदायित थी। इन केन्द्रों को विश्वविद्यालय की संज्ञा दी गयी है। इनमें सभी वर्णों के तथा सुदूरवर्ती क्षेत्रों एवं देशों के छात्र अपनी शिक्षा हेतु आते थे, विदेशी यात्रियों ने भी इन शिक्षालयों में शिक्षा प्राप्त की थी। चीन, तिब्बत, मलाया, लंका, जावा, सुमात्रा आदि अनेक सुदूरवर्ती राष्ट्रो से छात्र इन शिक्षा केन्द्रों में ज्ञान प्राप्त हेतु प्रवेश के लिए उत्सुक रहते थे। वर्तमान में विश्व के अन्य देशों द्वारा भारत को विश्वगुरू मानने का मुख्य वजह इन्हीं प्राचीन शिक्षा केन्द्रों को माना जाता था, इन केन्द्रों की शिक्षा विश्वव्यापी तथा सर्वोत्कृष्ट थी। भारतीय शिक्षा के सभी उच्चादर्श इनमें विद्यमान थे। यदि आज किसी लुप्त भारतीय ग्रन्थ का चीनी भाषा में अनुवाद प्राप्त होता है या किसी महत्वपूर्ण पालि या संस्कृत ग्रन्थ की हस्तलिपि चीन, जापान, तिब्बत या मध्य एशिया या दक्षिण पूर्व एशिया में प्राप्त होती है तो इसका श्रेय भी बौद्ध शिक्षा प्राप्त कर ग्रन्थों की प्रतिलिपि स्वभाषा एवं स्वदेश में करते थे। इस प्रकार बौद्ध केन्द्रों मे ं प्रचलित शिक्षा के स्वरूप ने शिक्षा को भारत तथा विश्व के कई देशों मे ं सर्वग्राह्य किया था। वर्तमान ज्ञान के स्वरूप में आधुनिक मनुष्य सामाजिक पशु बनता जा रहा है, वर्ग–भेद, वर्ण–भेद, क्षेत्रीयतावाद, तथा अन्य कई वादों ने मानवजाति एवं विश्व की शान्ति को खतरे में डाल दिया है। विश्व बन्धुत्व एवं सर्वधर्म समभाव की भावना मृतप्राय है, इस कारण समस्त विश्व के विवेकशील, वैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनयिक, शिक्षा शास्त्री तथा चिन्तको ने इस व्यवस्था में सुधार लाने के उपायों की खोज करने लगे है कि किस प्रकार विश्व में एक संस्कृति का उदय हो जिसमें मानव मात्र का कल्याण हो तथा विश्व शान्ति की स्थापना हो, इस दर्शन का परमोद्देश्य मानव मात्र का कल्याण, विश्वबंधुत्व की स्थापना तथा सर्वधर्म समभाव था। बौद्ध दर्शन का अन्य आधारभूत तत्व उसका कर्मवाद है। 'धर्म' आधारित कर्म ही जीवन का विकास करते हुए 'मोक्ष' की प्राप्ति मे सहायक होता है। अच्छे कर्मों द्वारा ही व्यक्ति मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है। जिससे व्यक्ति मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा चारित्रिक विकास द्वारा सर्वांगीण विकास बौद्ध ज्ञान दर्शन का पवित्र लक्ष्य है। इससे वर्तमान शोध की समस्या अवश्य अपने आप ही परिलक्षित होता है। वर्तमान भारतीय ज्ञान का स्वरूप शासन की देन है। जिससे यह ज्ञान का स्वरूप अपने विशिष्ट, कृत्रिम संरचित वातावरण के फलस्वरूप स्वाभाविक भारतीय सामाजिक वातावरण के साथ समुचित सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाती, अतः शिक्षा वास्तविक जीवन से दूर, व्यावहारिकता से बहुत दूर, औपचारिकता के शिकंजों से जकड़ी होने के कारण अपना वास्तविक स्वरूप और उद्देश्य खो बैठी है। समकालीन शिक्षा स्वरूप में गुरू भी कोरे ज्ञान की गठरी लिए अव्यावहारिकता एवं अकर्मण्यता का प्रतिपादन करते फिरते हैं और हाल यह है कि विद्यार्थी उनका अनुसरण करते हुए निरूद्देश्य नौकरियों की प्राप्ति हेतु व्यग्र रहते है। जिसके कारण वर्तमान ज्ञान का स्वरूप शिक्षित बेरोजगारी, सामाजिक असंतुलन को जन्म देती है, यह एकबन्द वृत्त के समान है जिसके अनुसार अध्ययन करने पर जीवन में ठहराव सा आ जाता है वस्तुतः वर्तमान शिक्षा इस उम्मीद पर अवलम्बित है कि विद्या जीवन की तैयारी के लिए है।यह केवल प्रमाण पत्र एवं उपाधियाँ वितरित करने का यंत्र है। यह केवल 'मैट्रीकुलेटों' एवं 'ग्रेजुएटों' के आंकडों में वृद्धि करती है। लेकिन मानव मन ज्ञान की पिपासा जाग्रत कर वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन की उन्नति में सहायक नहीं बन पाती है। वर्तमान समय में पश्चिमी सभ्यता एवं शिष्टाचार का अंधानुकरण तीव्रगत से हो रहा है कामुक भावों का प्रदर्शन, जन्म दिवस पर केक काटना तथा दीप बुझाना, विवाहोत्सव आदि में पाश्चात्य ढंग से नृत्य करना आदि रीतियां बढ़ रही है। भारतीय समाज में यह प्रवृत्तियां नैतिकरूप से पतन मानी जाती है। वर्तमान शिक्षा भी इन भौतिकवादी प्रवृत्तियों का शिकार हो चुकी है। भौतिकवादी युग की शिक्षा का भौतिक होना स्वाभाविक है। वर्तमान शैक्षिक वातावरण भौतिकता में इतना अधिक दूषित हो गया कि गुरू, छात्र का लक्ष्य परीक्षा उत्तीर्ण हो जाती है, चाहे वह प्रमाण पत्र

अनुचित माध्यमों से क्यों न प्राप्त हुआ है। अनुशानहीनता, नकल की प्रवृत्ति, अभद्र व्यवहार तथा अस्वस्थ नेतागिरी का नग्न प्रदर्शन शिक्षा केन्द्रों में प्रतीत हो रहा है। शैक्षिक संस्थाओं में शिक्षण का वातावरण मृतप्राय है। गुरू शिष्य के मध्य सम्बंधों में पवित्रता का अभाव होता जा रहा है। गुरू को सर्वाधिक महत्व देने की बात इतिहास एवं कथा–कहानियों का विषय बनती जा रही है। प्राचीन शिक्षा में गुरू–छात्र के मध्य पिता–पुत्र का सम्बन्ध है, गुरू को माता–पिता, सखा तथा ईश्वर से सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जाता था, आज अपने संकीर्ण स्वार्थो की पूर्ति हेतु न तो शिष्य अपने कर्तव्यों का पालन कर रहा है, न ही गुरू अपने उत्तरदायित्वों की पूर्ति कर रहा है। नैतिक मूल्यों में दिनों दिन ह्रास हो रहा है। समकालीन पद्धति में पाश्चात्य शिक्षा दर्शन से सम्बन्धित सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, वहीं दूसरी ओर वैदिक कालीन पर अनुसंधानकर्ताओं ने खास जोर नहीं दिया यद्यपि वर्तमान एंव पूर्व दशकों में इस दिशा में शोध कार्य आरम्भ तथा सम्पन्न हुए है। अरविन्द, राधाकृष्णन, विवेकानन्द, गांधी, टैगोर आदि दार्शनिकों के जीवन तथा विचार दृष्टिपात एवं विश्लेषण अनेकेशोध ग्रन्थों में मिलता है, अनेक अनुसंधानकर्ता प्रायः यह भ्रान्ति धारण किये रहते है कि ज्ञान का स्वरूप प्राचीन शिक्षा प्रणाली में परिलक्षित होता है। वास्तविकता तो यह है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान दर्शन एवं वैदिक ज्ञान प्रणाली दोनो ही पृथक एवं स्वतंत्र विषय है, इस दिशा में अनुसंधानों में अपर्याप्त कार्य ही इस भ्रान्त धारणा का प्रमुख कारण है। अतएव प्राचीन ग्रन्थों में भारतीय शिक्षा दर्शन सम्बन्धी तथ्यों के वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध विवेचना तथा शोधकार्यो की महती आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान का स्वरूप से सम्बन्धित सामग्री महाकाव्यों, धार्मिक ग्रन्थों, पुराणों, बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इन पर क्रमबद्ध विश्लेषणात्मक अनुसंधानों की आवश्यकता है। भारतीय बौद्ध कालीन शिक्षा पद्धति अत्यन्त प्राचीन है गौरवमयी है जिस कारण आज भी समकालीन स्वरूप में अप्रत्यक्ष रूप से यत्र–तत्र परिलक्षित होती है। अतएव समकालीन भारतवर्ष की शिक्षा में व्याप्त अव्यवस्थाओं एवं दोषों की समाप्ति हेतु यह परमावश्यक है कि प्राचीन भारतीय बौद्ध शिक्षा दर्शन का सर्वांगीण अवलोकन किया जाए। वर्तमान शिक्षा को धर्म, संस्कृति दर्शन, नैतिक मूल्यों, जीवन मूल्यों तथा आध्यात्मिक आदर्शो से युक्त करना होगा और इसकी निरन्तरता को स्थापित करना होगा।

Globalization of Higher Education in India: Prospects and Problems

Manoj Kumar
Assit. Prof.

Introduction

Globalization "is the flow of technology, economy, knowledge, people, values, ideas...across the borders. Globalization affects each country in a different way due to a nation's individual history, traditions, culture and priorities." To cope with the 'Globalization', the higher education system has to re-orient its structure and function besides enlarging the scope of its provisions to meet the challenges of Globalization. This re-orientation process is termed as Internationalization. Internationalization of Higher Education is one of the ways a country responds to the demands of globalization. Thus, the terms 'Globalization' and 'Internationalization are to be seen as distinct but linked concepts so far as the higher education is concerned. Globalization is the cause and the internationalization is the effect in response. In broad terms, the strategies to be followed to internationalize the higher education at the national level and to respond to the various demands rising out of the globalization of economies and related activities, must be outlined. Developing this strategic plan and implementing it speedily is crucial for any nation to succeed in the highly competitive knowledge driven global economy.

The globalization of economies brings in the mobility of knowledge workers and seekers across the world in volume unprecedented in the history. If a particular country cannot produce the graduates with the skills that employers want, especially in areas like information technology, then the employers in that country may seek the employees from wherever they are available. This need not necessarily mean an influx of skilled labor into that country. There are already examples of employment in the 'knowledge based industries' moving to the workers rather than the workers moving. Whether the employer moves or the potential employee moves, the mobility will be dependent on the quality and standards of the qualifications offered by the educational institutions. Ensuring the quality and standards of the educational offering will constitute the first step towards internationalization of higher education. This in turn would involve restructuring of the contents, duration, quality and standards of educational offerings in line with the broad frame of higher educational systems in vogue in most of the countries of the world. Fortunately, ensuring the parity of the content and the duration of studies with those of others may not be a major problem, since the qualification framework followed in most of the countries by and large fall into a common pattern, though there may be some extent of contextualization to the national culture, language and values. This is largely due to the fact that the higher education system - universities and colleges- throughout the world are patterned after the medieval European model by the historical accident. Almost all the third world countries have had their institutions built on the pattern in vogue in the countries of their European rulers. On the other hand, the issues of quality and standards are the main concerns, and they need to be ensured to internationally acceptable levels through careful planning.

Hold of world trade organization on higher studies

A huge giant in the form of WTO (World trade organization) has been born in the international business world. WTO is proceeding towards the monarchy on world after undertaking more than 150 countries of the world. Various socialist, Political and Economical systems, which help and support the poor and downtrodden, are in their last stage. There is a big question mark

on the principles of economy and their capability assumption. The importance of geographical borders of the independent nations and their Integrity is on the edge of ending.

Principles of WTO

There are two main principles of WTO:-

1 Most favored nations

2. National treatment clause.

A. normal agreement has been made on service trade by taking such principles into consideration. According to this agreement higher study is also a selling product. This is to note here that primary education has been separated from it because profitable capacity of this product is doubtful and this forms the base of the nation's globalization of WTO. According to the sub clause - 1 of paragraph 2 of the GATS agreement, most favored nations related principle meant that every member nation will give entry to the service product of other nations into their border limits with any obstruction and no one can make any law to differentiate between local and Foreign Service products. Through this 'globalized nations have been prevented from right of making law for their own benefit and on the other land most favoured nations have been given full access to tress pass the other countries by world trade organization.

It is a serious matter when we talk about service products like education and higher education since structure of education of any country is made by taking into account the social and cultural needs of that country. Education socially nurtures a person and moulds him according to the need of the nation. Can a package of higher education only made to make profit can fulfill the social, cultural economic and humanitarian needs of any nation? Under the sub clause - 1 of paragraph 17 of GATS, according to the principles regarding legal clause for behaving with member nations, the nations who will sell higher education product will not be compared with local higher educational institutions means government can not given any grant to the working Universities, Management and technical education institution, students from SC, ST OBC and other poor classes. All the syllabuses will be the same and degree will change into an international form. It is cleared that government and other educational institution with weak infrastructure will not be able to complete with foreign educational institutes fully decorated with strong infrastructure and high-tech labs and equipments. The medium of education will also be international language English then what will be the condition of the national language Hindi. This is a question to consider.

According to such clause any type of course and course material will be able to send to any country freely with full access through distance education and internet. This procedure is called cross border supply. Foreign universities and technical institutes will be free to start their offices in any country and they will be able to appoint their franchises. It will not be a wonder to see reputed universities like Leicester and other foreign educational institutes to public themselves through hoardings in our cities. This procedure is given the name commercial presence.

Foreign universities and education institutes can initiate an advertisement war to admit students in any country. The target groups of such foreign institutions are the students from higher income category. The criteria for their admission are a degree of 10+2 with any division and only a personal interview. Fee is from 50 thousand to 3.50 lacs per syllabus. The admitted students are first given education in their own country for 1-2 months and then they are sent to foreign countries. It has nothing to do with the goal of quality education and nation formation. The decorate degree from Ukraine is an example of this. This whole procedure is called as consumption abroad.

Foreign teachers and professors can enter into any country on attractive agreement and government of that country can control it through any legal procedure as the agreement will be between local universities, education institution and foreign teachers. This procedure is named natural person. The foreign scenario of higher education is eye-opening.

To fulfill the high cost of education, financial institutions and banks have been pressurized to make available the loans for higher education. Students can pay the amount ilgher studies.after taking education loan with interest easily after getting job on completion of their studies.

The main obstacle in such a procedure is that education is not a guarantee of employment. This is a question to the globalization of higher education that what we want to achieve with such charges in education? Does this procedure can be beneficial to the whole nation. To talk about Indian scenario, after 1995-96, many foreign universities and higher education institutions have started marketing of their courses. Management and technical institutions working abroad have started to admit Indian students by attracting them through needs for a better education. This would require huge money and hence, huge investments. Education which encourages innovation and creativity When farmers in the villages of Punjab make a vehicle from the diesel engine and nameit Maruta (A male version of Maruti), that is innovation. When villagers of the Rajasthan and Gujarat transform the Bike 'Enfield Bullet' into a local auto rickshaw, which is creativity. How many automobile engineering students could do likewise? The question is, how many? The major problems before the Indian higher education are Co modification of education

Higher education is becoming a marketing commodity. It is a multi-billion dollarbusiness. Foreign universities are trying to have share of Indian education markets, and have prepared for this during the last decade or more. This shift from education as a social good to marketable commodity is against the Indian culture, and suffers in these changes will be poor and disadvantaged people of India.

Global competitiveness the competition will essentially be for offering quality education recognized at the international level and relevant to the local needs. The major issue is how to raise the quality and standards of Indian education and make it globally competitive, locally relevant and enable it to offer marketing paradigm appropriate for developing societies. Concerns of weaker institutions

High disparities in educational standards and quality of education offered by Indian universities and of colleges are of great concern to all. National and global competition may create problems of survival of weaker universities and colleges. Developmental disparities and unsolved Indian problems

Many colleges and universities were started in India for removing regional imbalances and for supporting education of weaker and disadvantaged classes, particularly of women. These institutions and other development programs for weaker classes are still resource constraints, which are further aggravated by ignorance, poverty and disadvantages of the people they serve. This is resulting in widening divides and keeping many educated from weaker and disadvantages section outside the job and employment markets. The challenge of these marginalized and deprived to the system of education is enormous.

Weak linkage of education with developmental processes: Is creating frustration amongst graduates they find that education is not so useful in employment and in work situation. A challenge is to transform the system from its present model of education to developmental education linking education to developments in society, industry and service sectors. High cost of higher education

The unit cost of traditional education, particularly of professional education, is quite high and has gone out of reach of the Indian middle and lower classes. Many private entrepreneurs have started educational institutions for offering creamy courses with marketing approach; and have raised fees not affordable to majority. Subsidy to the education by the state is not the right solution in the present situations, when numbers aspiring for higher education is large and ever increasing. The deprived are already creating pressure on the state to make education accessible; and have raised an issue of socio-economic equity and justice. The issue has already become extremely volatile in some states like Maharashtra. Privatization of Higher

Education not for Quality but for Commercialization although the good institutions have come up in the field of education with some foreign universities but this trend has also led to mushroom growth of low quality institutions without proper infrastructure. More of the same will note offer the way out. The major issue and challenge is to use IT and evolve a new system of education that may enable educational institutions to develop appropriate paradigm of development and education, and to increase coverage by serving larger numbers so as to move towards education for all essential for knowledge- based society.

Suggestions the dreams of attractive salary package to the students of creamy layer category. The workers have been appointed for this. In 1999, approx. 20 thousand student took admission in foreign universities whereas up to this year only 1500 students from south-east Asian countries to seek admission in the colleges of our country. By a fresh survey done by the foreign universities it is come to know that a 40 billion dollar higher education business in available in the Indian market.

Government has permitted Indian universities to establish a separate cell or department for the globalization of higher education and they can also open their offices abroad to admit foreign students and can also export their courses and course material. The question is can our universities, courses and course material can withstand the foreign university and institution in such a competition? Especially when we have deemed universities in more than half numbers in our country.

Not any deep thinking consultation has been done on such a complicated matter which is directly related to the nation's benefit and government has signed the; Gates agreement. Not only this but from the 10th five year plan; suitable clauses has been given for the globalization of higher education. According to a report given in favour of globalization of higher education by kumar Manglam Birla, Mukesh Ambani Committee, Neepa organized a seminar in 2000 for the condition of foreign universities in the country and to make a policy for a the same in which the so called educationist and favored the globalization of higher education on the basis of this university grant commission released direction and instruction to carry forwarded this procedure.

Objectives

To have a detailed study of the subject one has to collect data. Data's are of two types viz: Primary data, Secondary data

Primary data: The data originally collected from an investigation is the primary data. Such data are original in character.

Secondary data: Data which are not originally collected rather obtained from published & unpublished sources.

In the present Paper' I have used Secondary data which are published in the Report of Higher Education Department, M.P., Books, journals, University News, websites, newspaper articles and summary of different souvenirs on this particular topic.

Expected results from such an efforts

A revolution means big changes. We expect the revolution in education to bring lots of changes. These changes will result into: Best talents of the country working in the education sector

Today, education is not the career of choice, but it is the career of compromise. If you are a teacher, people sympathize; they curse the prevalent unemployment in the country. Education is one of the highest profit making 'industries' in the service sector, but its workers are the least paid compared to those working in somewhat glamorous sectors like the IT industry. This has to change. A world class infrastructure

The experience of shopping at malls is better than the old dirty bazaars. The experience of traveling in a metro train is much better than suffering in the city buses. The experience of driving on four or six lane highways is much better the same way. The same way, infrastructure

has a meaning in education. World class universities and schools with world class libraries, laboratories and classrooms, in a world class building make a world class infrastructure for education. Faculty Mobility

It is important of globalization of higher education as it provide an effective mechanism for the exchange of ideas, thoughts, value and sharing of experience among the teachers as regular practioners as well as researcher. Greater investments into education, public as well as private

We need world class infrastructure and best talents in all schools and universities of India. These resources should not remain limited to a handful of IIT's or IIM's. Each village should have a school with all resources and facilities. Each university should have whatever it needs for a better education. This would require huge money and hence, huge investments. Education which encourages innovation and creativity

When farmers in the villages of Punjab make a vehicle from the diesel engine and name it Maruta (A male version of Maruti), that is innovation. When villagers of the Rajasthan and Gujarat transform the Bike 'Enfield Bullet' into a local auto rickshaw, which is creativity. How many automobile engineering students could do likewise? The question is, how many?

The major problems before the Indian higher education areCo modification of education

Higher education is becoming a marketing commodity. It is a multi-billion dollar business. Foreign universities are trying to have share of Indian education markets, and have prepared for this during the last decade or more. This shift fromeducation as a social good to marketable commodity is against the Indian culture, and suffers in these changes will be poor and disadvantaged people of India. Global competitiveness

The competition will essentially be for offering quality education recognized at the international level and relevant to the local needs. The major issue is how to raise the quality and standards of Indian education and make it globally competitive, locally relevant and enable it to offer marketing paradigm appropriate for developing societies.

Concerns of weaker institutions

High disparities in educational standards and quality of education offered by Indian universities and of colleges are of great concern to all. National and global competition may create problems of survival of weaker universities and colleges. Developmental disparities and unsolved Indian problems

Many colleges and universities were started in India for removing regional imbalances and for supporting education of weaker and disadvantaged classes, particularly of women. These institutions and other development programs for weaker classes are still resource constraints, which are further aggravated by ignorance, poverty and disadvantages of the people they serve. This is resulting in widening divides and keeping many educated from weaker and disadvantages section outside the job and employment markets. The challenge of these marginalized and deprived to the system of education is enormous.

Weak linkage of education with developmental processes: Is creating frustration amongst graduates they find that education is not so useful in employment and in work situation. A challenge is to transform the system from its present model of education to developmental education linking education to developments in society, industry and service sectors. High cost of higher education

The unit cost of traditional education, particularly of professional education, is quite high and has gone out of reach of the Indian middle and lower classes. Many private entrepreneurs have started educational institutions for offering creamy courses with marketing approach; and have raised fees not affordable to majority. Subsidy to the education by the state is not the right solution in the present situations, when numbers aspiring for higher education is large and ever increasing. The deprived are already creating pressure on the state to make education accessible; and have raised an issue of socio-economic equity and justice. The issue

has already become extremely volatile in some states like Maharashtra. Privatization of Higher Education not for Quality but for Commercialization Although the good institutions have come up in the field of education withsome foreign universities but this trend has also led to mushroom growth of low quality institutions without proper infrastructure. More of the same will note offer theway out. The major issue and challenge is to use IT and evolve a new system of education that may enable educational institutions to develop appropriate paradigm of development and education, and to increase coverage by serving larger numbers so asto move towards education for all essential for knowledge-based society.

SuggestionsFor the globalization of the higher education, it is necessary that Indian Universities collaboration with the other countries universities. Government can fix criteria for the appoinunent of Teachers which actually supports the quality of the education.Best Quality of Education supports the globalization of the higher education.

Basic facilities like Infrastructure, Library, E- library, IT etc are to be increased. Goverrtnent can also support students för education i6 foreign unixrsities by the says of various scholarship schemes, Loan facility etc. Various facilities like orientation progrmnmes refresher courses, workshops etc, are arranging for the teachers which indirect helps in improving Quality of education.

Political system is to be changed according to the requirement.

Formation of strong education structure, which gives employment assurance to the students.

Conclusion

The Integrity of the independent nations, their geographical borders, independence and nationality are in a great danger because of the pressure made by the economic powers for the so called aiming on the establishment of world gcmernment. Are we ready to sacrifice such basic value which nourishes our life and self respect only for the economic development and prosperity? This is the ultimate question of the present scenario, for which we have to find out an answer. Private sectors have giving very good facilities of education to the students. Now it is becoming easy for all students to be educated. There in India there is high range of private institution, colleges and universities. There are some foreign universities who are providing the quality of edycation according to the students needs and they are also opening the institution in India for the better accessibility. Thus we can say that now a day it is easy to be educating, you just need motivation and good level of mind. The education is becoming accessible for the rural students too. Now as the girls through media becoming aware for better qualitative education and globalization playing an important role for providing good education and courses according to the choice of the students.

References

1 Joshi, Rozi & Kapoor, Sangam, Business Environment, Kalyani Publication.

2. Dayal Sharma, Business Environment, Ramesh Book Depo, Jaipur.

3. Cherunilam Francis, Business Environment, Himalaya Publication House.

4. Recent Recession in India -- concept, causes and cures, Green Gourav Nyas Publication, Thinkline 1999 by h Vinayak Govilkar.

5. Takwale Ram, Challenges and opportunities of globalization for Higher Education in India, UGC Golden Jubilee Lecture Series.

6. Economic Survey —Published by Govt. of India.

7. Monthly bulletin published by R,B.J.

8. The Impacts of Globalization in Higher Education Module by: Navin Singh.

9. Encyclopaedia of Education System in India, New Delhi: Deep and Deep Publications Dennison, M. George. 2003

10, University news voJume -50 No-53. 31st Dec., 2012 to 1st Jan. 2013

शिक्षा में बहुभाषिता चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी
सहायक प्राध्यापक

भूमंडलीकरण के इस युग में आज विश्व के सभी देश सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनौतिक इत्यादि जीवन के सभी क्षेत्रों में एक दूसरे पर निर्भर है। वैशवीकरण की यह प्रक्रिया एक तरफ तो विभिन्न भाषा, संस्कृति के लोगो को एक– दूसरे के निकट लाती है। वही दूसरी ओर उनके समक्ष अनके चुनौतियाँ भी खड़ी रहती है। इस समय पुरे विश्व में लगभग 6909 भाषाएँ अस्तित्व में है, जिनमें से कुछ विलुप्तता के कगार पर है। भारत में 22 भाषाएँ भारतीय संविधान की 8वी अनुसूचि में सुचीबद्ध है तथा लगभग 700 से अधिक भाषाएँ व्यवहारिक रूप से बोली जाती है। पूरे विश्व में एक भाषा एवं संस्कृति को फैलाने का प्रयास एक प्रमुख चुनौती है। भाषाई सांस्कृतिक साम्राज्यवाद या भाषाई सांस्कृतिक वर्चस्व स्थापित करने का प्रायास भूमंडलीकृत विश्व में बहुभाषिता के लिए प्रमुख चुनौति है। इसके लिए भूमडलीकरण के कारण उपजी परिस्थितिया ही जिम्मेदार है। अपने लेख मे शभूनाथ का भी यही मानना हैकि आज व्यक्ति की नजर में किसी भाषा की महत्ता समान्यतया इस से तय नही होती कि इसका सम्बध उसकी जातीय और सांस्कृतिक पहचान से है। अथवा यह उसकी मातृभाषा है, बल्कि इससे यह तय होता हैकि यह भाषा बजार मे कितनी दौर सकती है। यदि भूमंडलीकरण निरंकुश ढंग से इसी प्रकार जारी रहा तो यह विश्व कि सैकडों भाषाओं का चेहरा विगार सकता है। भारत एक बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक , बहुधार्मिक एव बहुजातीय देश है और यही इसकी अनुठी विशेषता भी है। इसे देश की एकता , अखंडता एवं विभिन्न जाती , धर्म, भाषा एवं संस्कृति के लोगों के समन्वीत विकास के लिए संरक्षित एवं समवर्द्धित है किया जाना अतिआवश्यक हैं। यह कार्य भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में बहुभाषिता को अपना कर ही किया जा सकता है। हमे विभिन्न भाषा , संस्कृति एवं क्षेत्र के विद्यार्थियों को उनकी स्वभाविक भाषाई, सांसकृतिक एवं क्षेत्रिय विशेषताओं–विभिन्नताओं के साथ स्वीकार करना होगा तभी हम अपनी शैक्षिक व्यवस्था मे सभी विद्यार्थियों को समावेशित कर पायेगे किन्तु यह एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। इस सोध पत्र में भारतीय परिपेक्ष्य मे शिक्षा के अन्तर्गत बहुभाषिता के समक्ष आने वाली चुनौतियों एवं संभावनाओं को विश्लेशित किया गया है।

पारस्परिक निर्भरता के इस युग में विश्व समुदाय को वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है, जिसमें पूरे विश्व में एक भाषा एवं संस्कृति को फैलाने का प्रयास एक प्रमुख चुनौती है। भाषाई–सांस्कृतिक साम्राज्यवाद या भाषाई सांस्कृतिक वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास इस भूमंडलीकृत विश्व में बहुभाषिकता के लिए प्रमुख चुनौती है। इसके लिए भूमंडलीकरण के कारण उपजी परिस्थितियाँ ही जिम्मेदार हैं। अपने लेख में शंभूनाथ का भी यही मानना है कि, "आज व्यक्ति की नजर में किसी भाषा की महत्ता सामान्यतया इससे तय नहीं होती कि इसका सम्बन्ध उसकी जातीय और सांस्कृतिक पहचान से है अथवा यह उसकी मातृभाषा है, बल्कि इससे तय होता है कि यह भाषा बाजार में कितनी दौड़ सकती है... यदि भूमंडलीकरण निरंकुश ढंग से इसी प्रकार जारी रहा, तो यह विश्व की सैकड़ों भाषाओं का चेहरा बिगाड़ देगा, सैकडों भाषाओं को चबा जायेगा और सांस्कृतिक विविधता को उजाड़ देगा।

भाषा मानव मन की भावनाओं को अभिव्यक्त पि करने का सशक्त साधन है। साथ ही लोगों को स्त एक–दूसरे से जोड़ने का माध्यम भी। शैक्षिक एवं वि सामाजिक संदर्भ में हम देखें तो भाषा के मुख्यतः अ तीन पक्ष हैं। एक तो यह कि भाषा संप्रेषण का में माध्यम है और इसके द्वारा ही मनुष्य अपने समाज का निर्माण करता है। इसके बिना किसी समाज का निर्माण नहीं हो सकता, क्योंकि भाषा के बिना लोग वि आपस में विचार–विनिमय ही नहीं कर सकते। दूसरा अ यह कि भाषा का बुनियादी कार्य मनुष्य को सजग और सचेत बनाना है। इस प्रकार आत्म–बोध और जगत–बोध, दोनों का माध्यम भाषा ही है। भाषा का मे तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उसमें मनुष्य अपनी सृजनशीलता व्यक्त करता है। मनुष्य जो कुछ रचता है, उससे ही संस्कृतियों का निर्माण होता है। भाषा के बिना संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। हम देखते हैं तो पाते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों के नाम उनकी भाषाओं से जुड़े हुए हैं, जैसे दृ बांग्ला संस्कृति, मराठी संस्कृति, तमिल संस्कृति इत्यादि। इसी तरह हम विश्व में जर्मन संस्कृति, रूसी संस्कृति, चीनी संस्कृति इत्यादि को भी देख सकते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि विभिन्न भाषाओं के विकास एवं संवर्द्धन द्वारा ही मानव समाज की विभिन्न संस्कृतियों का विकास एवं संवर्द्धन संभव है। भारत की भाषाई विविधता – एक अवलोकन भारत केवल इस मामले में ही अनूठा नहीं है कि यहाँ अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, वरन् इनभाषाओं में अनेक भाषा परिवारों का प्रतिनिधित्व भी है। दुनिया के किसी भी अन्य देश में पाँच भाषा परिवारों की भाषाएँ नहीं पाई जातीं। संरचना के स्तर पर भारतीय भाषाएँ इतनी भिन्न हैं कि उन्हें विभिन्न पाँच भाषा परिवारोंकृदृइण्डो–आर्यन, द्रविड़, ऑस्ट्रो–एशियाटिक, तिब्बती–बर्मन एवं अंडमानी में वर्गीकृत किया जा सकता है। सर्वप्रथम ब्रिटिश भारत में सर जी. ए. ग्रियर्सन (1927) ने भारत की भाषाई विविधता को संहिताबद्ध करने का प्रयास किया। 1886 ई. से 1927 ई. के मध्य किए गए अपने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में उन्होंने 179 भाषाओं एवं 549 बोलियों की पहचान की। तत्पश्चात् स्वतंत्र भारत में 1951 ई. की जनगणना में 845 भाषाओं एवं बोलियों को सूचीबद्ध किया गया। इसके पश्चात् 1961 ई. की जनगणना में भाषाई बहुलता को व्यापक दायरे में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हुए 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' के भाषा वर्गीकरण को संदर्भ के रूप में अपनाया गया। 1961 की जनगणना द्वारा 1652

मातृभाषाओं को चिह्नित कर उन्हें 193 भाषाओं में वर्गीकृत किया गया। 2001 की नवीनतम भाषाई जनगणना के अनुसार भारत में 122 भाषाएँ एवं 234 मातृभाषाएँ हैं। इनमें से 96.56 प्रतिशत भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओं को बोलने वाले हैं।

भारतीय संविधान में भाषा–विषयक उपबंध न भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक वर्णित है। इसके हाँ अतिरिक्त अनुच्छेद 29, 30, 120 तथा 210 एवं न आठवीं अनुसूची में भी दिए गए हैं। ''मूल संविधान 8वीं अनुसूची में संविधान द्वारा 14 भाषाओ असमिया, बंगला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगू, उर्दू को प्रादेशिक भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई थी। कालान्तर में समय–समय पर अन्य भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई। 21वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1967 द्वारा सिन्धी को, 71वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा नेपाली, कोंकणी तथा मणिपुरी को एवं 2003 के 92वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा बोडो, डोगरी, मैथिली तथा संथाली को 8वीं अनुसूची में सम्मिलित करने के पश्चात अब यह संख्या 22 हो गई है" (मंगलानी, 2009, पृ. 505) 1

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय संविधान द्वारा भारत की विभिन्न भाषाओं के संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास के लिए व्यापक प्रावधान कर भारत की बहुभाषिक संस्कृति को संरक्षित किया गया है।

भारतीय **प**रिप्रेक्ष्य **में शि**क्षा **में ब**हुभाषिकता **के स**मक्ष **चु**नौतियाँ

भारतीय संदर्भ में यदि हम देखें तो शिक्षा में प्र बहुभाषिकता को अपनाना आसान नहीं है। इस मार्ग म में अनेक कठिनाइयाँ एवं चुनौतियाँ हैं, जिन्हें हम प निम्न रूपों में देख सकते हैं–

• एक भाषा में अपने बोलने वालों की पहचान, क उनकी अभिवृत्ति, उनकी आकांक्षाओं एवं उनकी संस्कृति को अभिव्यक्त करने की असीम यह शक्ति होती है। किसी समाज में कुछ सामाजिक प्रि एवं राजनीतिक कारक उस समाज की कुछ भाषाओं को अन्य भाषाओं से प्रतिष्ठित बना

• देते हैं, जिससे वे उस समाज में एक मानदण्ड के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती हैं। समाज के सभी सदस्य उस भाषा से ही अपनी पहचान, सम्मान एवं योग्यता को जोड़कर देखने लगते हैं। यह बहुभाषिकता के लिए खतरनाक है। भारतीय परिदृश्य में भी परिस्थितियाँ कुछ ऐसी ही हैं। आज भारत में अंग्रेजी एक वर्चस्वशाली भाषा की स्थिति में है। यह उच्च एवं संभ्रांत वर्ग की भाषा मानी जाती है और लोग इसे पद, प्रतिष्ठा एवं रोजगार से जोड़कर भी देखते हैं। डॉ. राम मनोहर लोहिया का भी मानना था कि, "अंग्रेजी के साथ–साथ जो रूतबा और पैसा जुड़ा हुआ है, इसलिए अंग्रेजी चल रही है" (लोहिया, 2013, पृ. 88) 1आज अंग्रेजी वैश्विक रूप एक शक्तिशाली भाषा है। विद्यालय से लेकर बाजार तक यह भाषाई पदानुक्रम में सबसे ऊपर स्थित है। अतः ऐसे परिदृश्य में अभिभावक भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में ही पढ़ाना चाहते हैं, जिससे उन्हें अपनी सफलता के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो सकें। "हमारी प्रारम्भिक से उच्च शिक्षा तक आज भी अंग्रेजी की मुहताज है या बना दी गई है। धीरे–धीरे पूरी शिक्षा पद्धति अंग्रेजी के मकड़जाल में और फँसती जा रही है। गाँव–गाँव में इंग्लिश मीडियम में बच्चों को पढ़ाने का चलन बढ़ा है" (मिश्र, 2017, पृ. 12)।

इस प्रकार शैक्षिक व्यवस्था में एक ही भाषा का यह बढ़ता हुआ वर्चस्व शिक्षा में बहुभाषिकता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रहा है।

• भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में बहुभाषिकता के विकास के मार्ग में एक अन्य सबसे प्रमुख

चुनौती भारत की भाषाई राजनीति है। स्वतंत्रता के पश्चात् 1960 के दशक में भारत में भाषा की राजनीति विकराल एवं जटिल रूप में उभरी है। राजनीतिक दलों ने अपने संकीर्ण राजनीतिक लाभ के लिए भाषा के आधार पर लोगों की क्षेत्रीय भावनाओं को बढ़ावा दिया। एक ओर उत्तर भारत के राज्यों में 'अंग्रेजी विरोधी' प्रदर्शन एवं उपद्रव हुए तो दूसरी ओर दक्षिण के राज्यों के नेताओं को ऐसा लगा कि उन पर हिंदी थोपी जा रही है। अतः उन्होंने 'हिंदी विरोध' को उग्र रूप दिया, जैसे – तमिलनाडु में 'द्रविड़ मुनेत्र कड़गम' ने 1965 ई. में एक विशाल भाषा आंदोलन को प्रायोजित किया और 1967 ई. के चुनाव में इसने भाषाई आंदोलन की पृष्ठभूमि में चुनाव लड़कर राजनीतिक सफलता भी प्राप्त की। इस प्रकार इन संकीर्ण भाषाई आंदोलनों से भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में बहुभाषिकता प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई एवं इससे अंग्रेजी का भाषाई वर्चस्व और बढ़ा एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का विकास अवरुद्ध हुआ। इसने भाषाई असहिष्णुता को बल प्रदान किया। हमारे देश में विद्यालयों की संरचनात्मक बाधाएँ भी बहुभाषिकता को बढ़ावा देने में कठिनाई उत्पन्न करती हैं। विद्यालय के पास प्रत्येक विषय के शिक्षण के लिए कुछ निर्धारित समय होता है और इस निर्धारित समय में ही शिक्षकों को अपना पाठ्यक्रम पूरा करना पड़ता है।

शिक्षकों के पास बहुभाषिकता को बढ़ावा देने हेतु नवीन रणनीतियों के निर्माण के लिए पर्याप्त समय नहीं होता है। उन्हें शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य गैर–शैक्षणिक शासकीय कार्य भी करने पड़ते हैं। अतः इससे शिक्षा में बहुभाषिकता का विकास अवरुद्ध होता है। भारत में शिक्षक–प्रशिक्षण का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम भी शिक्षा में बहुभाषिकता के समक्ष एक प्रमुख चुनौती है। हमारे देश में शिक्षकों का प्रशिक्षण इस ढंग से नहीं हो पा रहा है कि वे विभिन्न सांस्कृतिक,

सामाजिक, क्षेत्रीय एवं भाषाई पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों की भाषाई विशिष्टताओं को समझ सकें, उनसे उनकी भाषा में विमर्श कर सकें तथा उनके प्रश्नों को संबोधित करते हुए कक्षा में विमर्श का एक बहुभाषिक वातावरण तैयार कर सकें।

• हमारे देश की दोषपूर्ण भाषा–नीति भी शिक्षा में बहुभाषिकता के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती है। भारत में सैकड़ों भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं। किंतु हमारे संविधान में मात्र 22 भाषाओं को ही आठवीं अनुसूची में संवैधानिक दर्जा दिया गया है। प्रश्न उठता है कि आठवीं अनुसूची में भारत की जिन भाषाओं को हमने स्थान दिया है, उसका आधार क्या है? और जिन भाषाओं को उसमें स्थान नहीं दिया गया है, वह किस आधार पर नहीं दिया गया है? इसके साथ ही हमारे देश में ऐसी बहुत–सी भाषाएँ हैं, जिन्हें स्थानीय बोलियाँ कहा जाता है। इन्हें महत्वहीन मानकर क्या हम इनके बोलने वालों के साथ अन्याय नहीं कर रहे हैं। एक बहुभाषिक राज्य में भाषा और बोली में फर्क करना अनुचित, अन्यायपूर्ण, अमानवीय तथा जनतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध है। इस संदर्भ में लिंग्विस्टिक इंपीरियलिज्म पुस्तक में रॉबर्ट फिलिपसन द्वारा उद्धृत फ्रांसीसी भाषा–विज्ञानी काल्वेत का यह कथन हमेशा याद रखने लायक है कि, "बोली और कुछ नहीं केवल एक हरा दी गयी भाषा है और भाषा एक बोली ही है, जो राजनीतिक रूप से जीत गयी है" (उपाध्याय और उपाध्याय, 2008, पृ. 44)।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इन स्थानीय बोलियों को हमने अपने शैक्षिक पाठ्यक्रम और विमर्श का हिस्सा नहीं बनने दिया, जिससे आज अधिकांश बोलियाँ विलुप्तता के कगार पर पहुँच गई हैं। इससे बहुभाषिकता को गहरा आघात पहुँचा है। इसके साथ ही हमने शैक्षिक व्यवस्था में त्रिभाषा फार्मूले को भी उसकी अवधारणात्मक कमियों को दूर कर सच्ची भावना के साथ लागू करने का प्रयास नहीं किया है।

इसके अलावा, भारत की अनेक क्षेत्रीय भाषाओं एवं बोलियों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी रूप से हमने समृद्ध बनाने का सच्चे मन से प्रयास नहीं किया। जिसके कारण ये भाषाएँ उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान की भाषा नहीं बन सकीं तथा लोगों का इनसे मोहभंग हुआ और शैक्षिक व्यवस्था में कुछ भाषाओं का वर्चस्व स्थापित हो गया। ''अगर आजादी के बाद भारतीय भाषाओं का विकास किया गया होता तो हमारी भाषाएँ अंग्रेजी से टक्कर ले सकती थीं। लेकिन उनका विकास नहीं किया गया और अंग्रेजी को विभाजन के औजार के रूप में बनाये रखा गया। इसी का नतीजा है कि हमारी भाषाओं में विज्ञान एवं तकनीकी की बहुत सारी शब्दाबली नही हैं और अंग्रेजी की शब्दाबली से काम चलाना पड़ता है।

सामाजिक जीवन से जुड़ी होती हैं। शैक्षणिक विमर्श में यदि इन बोलियों को सम्मिलित किया जाए तो इससे भी बहुभाषिकता को बढ़ावा मिलेगा। इस तथ्य पर बल देते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा 'भारतीय भाषाओं के शिक्षण' पर गठित राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र में भी कहा गया है कि, "यदि हम चाहते हैं कि ऐसा जनतंत्र पनपे जिसमें सभी की भागीदारी संभव हो सके तो हमें प्रत्येक बच्चे को उसकी भाषा में सुनना होगा.... त्रिभाषा–सूत्र को कार्यान्वित करने के लिए कड़े नियमों के बजाए बहुभाषिकतावाद को बनाये रखने व इसे जीवंतता प्रदान करने का प्रयास किसी भी भाषा, योजना का केन्द्र होना चाहिए" (राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, 2009, पृ. 21)।

इसके साथ ही, शिक्षा में बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी क्षेत्रीय भाषाओं एवं बोलियों को संरक्षित एवं विकसित कर वैज्ञानिक एवं तकनीकी रूप से उन्हें दक्ष बनाएँ। जिससे ये भी इंटरनेट, उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान की भाषा बन सकें तथा इन क्षेत्रों में कुछ भाषाओं का जो वर्चस्व स्थापित है, वह समाप्त हो सके। शिक्षा में बहुभाषिकता के लिए जरूरत इस बात की है कि पाठ्यचर्या निर्माता, पाठ्यपुस्तक लेखक, शिक्षक, माता–पिता या अभिभावक बहुभाषिकता की महत्ता को समझें ताकि वे बच्चों को अपने इर्द–गिर्द मौजूद सांस्कृतिक और भाषिक विविधता के प्रति सुग्राही बना सकें और उन्हें अपने विकास के संसाधन के रूप में प्रयुक्त करने के प्रति प्रोत्साहित करें। इस तथ्य पर बल देते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा 'भारतीय भाषाओं का शिक्षण' पर गठित राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र में भी कहा गया है कि, "हम पाठ्यचर्या निर्माताओं, पाठ्यपुस्तक लिखने वालों, शिक्षकों और माता–पिता का ध्यान अल्पसंख्यकों व आदिवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं और विलुप्तता के कगार पर खड़ी भाषाओं की ओर दिलाना चाहते हैं। ये भाषाएँ हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं और ज्ञान व्यवस्था का खजाना हैं और हमें उन्हें जीवंत रखने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। विद्यालयी पाठ्यचर्या में इनके लिए प्रावधान रखकर ही हम इस कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं" (राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, 2009,)।

यही बात राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी कही गई है कि, "बच्चे प्रारम्भ से ही बहुभाषिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। 'त्रिभाषा फार्मूला' को उसके मूलभाव के 'त्रिभाषा–फार्मूला' साथ लागू किए जाने की जरूरत है, ताकि वह बहुभाषी देश में बहुभाषी संवाद के माहौल को बढ़ावा दे" (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,) ।

इस प्रकार, भाषा को लेकर पाठ्यचर्या में ऐसी नीति अपनाने से विद्यालयों में बहुभाषिकता को बढ़ावा मिलेगा। शिक्षा में बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापक–प्रशिक्षण कार्यक्रम, शिक्षकों को भाषा की प्रकृति, संरचना और प्रकार्यों, भाषिक सम्प्राप्ति, भाषिक परिवर्तनों एवं विविध

Value Based Education Need of time

S.M.Tahseen Alam Quadri
Asst. Prof.

Value education means inculcating in the students, a sense of humanism, a deep concern for the well being of others and the nation. Value education teaches us to preserve whatever is good and worthwhile in what we have inherited from our culture.

Dr. A. P.J Abdul Kalam, our honorable President in his book remarked that “If” you are a Teacher in what ever capacity, you have a very special role to play because more then anybody else it is you who are shaping the future generation. A teacher has a higher responsibility as compared to other professionals an as students look upon the teacher as an embodiment of perfection. Education has long been recognized as a central elements in is development.There is an acute need for incorporative values on the realms of religion, education social service, economics and politics in India.

The term “value” refers to a development of "heart". Value-based education is highly needed in our modern society because our lives have become more miserable. The quantity of education has considerably increased, but the quality has decreased, why? Therefore we need value based education. Importance of Education tells us the values education in of our life. Education means a lot in everyone's life as it facilitates our learning, knowledge Skills. It completely changes our mind and personality and help us to attain in positive attitudes. School education plays great role in everyone's life. Value based education is very important tools for everyone to succeed in life and get something different. Without the knowledge of values Society can not sustain. Values tell a man to differentiate between good and bad. They bring quality and meaning to our life. Values gives a persons his identity and character.

Impact of Digitalization of Education

Chandra Bhushan Mishra
Asst. Prof.

In 21st century teachers are expected to become technologically oriented and responsible not only for their teaching but also for their students’ learning. The digitalization of education play a vital role for knowledge access such as e-education, e-governance, e-heath, e-commerce information and knowledge delivery strategies and pedagogical skills for teachers towards handling classes in teaching etc.

The digital knowledge serves as a tool for knowledge indicators for knowledge access and sharing information. The effect of e-knowledge communication access and its impact on knowledge sharing values for sustainable development in education sectors. Highlights the policy guidelines for issues related sources and implementing strategies for promoting Teacher Education and empowering students in education sectors towards sustainable development in present Digital Knowledge Society.

प्रिन्ट मीडिया और मूल्य शिक्षा का व्यक्तित्व पर प्रभाव

मो0 निजामुद्दीन
सहायक प्राध्यापक

शिक्षा और देश की प्रगति इन दोनों में सकारात्मक सहसंबंध है । शिक्षा भी ऐसी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति को अंतर्निहित शक्तियों का सर्वांगीण विकास हो । यह संपूर्ण विकास तभी हो सकता है जब शिक्षा को मानव मूल्यपरक बना सके , इसका मतलब मानव को जीवन सार्थक रूप से जीने के लिए जो संपूर्ण विश्व में सामाजिक , धार्मिक , नैतिक मूल्य हैं उनको शिक्षा से जोड़ा जाय । सर्वांगीण विकास का अभिप्राय शारीरिक , मानसिक , आध्यात्मिक , भावात्मक , सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों का विकास करना है ।

"मूल्य वही होते हैं जो व्यक्ति के अंतर्मन की गहराई से लेकर उन तमाम अच्छे गुणों का पालन अपने आचरण में लाए "। कोई भी मूल्य आपस में लड़ना , झगड़ना नहीं सिखाता , किसी को द्वेष नहीं सिखाता , किसी पर क्रोध , मत्सर , हीनता नहीं सिखाता । मनुष्य जन्म से लेकर अपने अंतिम समय तक सीखता रहता है , जिससे उसके अनुभवों में अभिवृद्धि होती रहती है तथा वह ऐसे अनुभव प्राप्त करता है जो उसके व्यवहार को निर्देशित करते हैं । ये निर्देशक तत्व जीवन को दिशा प्रदान करते हैं । इन्हें ही मूल्य कहते हैं । आलपोर्ट का मत है कि "मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है ।"

प्राचीनकाल से ही गुरुकुल की शिक्षा में मानव मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी । वैदिककाल में धर्म , कर्म , काम , मोक्ष पर आधारित शिक्षा व्यक्ति को अच्छा व्यक्ति बनाने तथा उसके विकास के लिए दी जाती थी । जैन दर्शन में पांच महाव्रत अहिंसा , सत्य , अस्तेय , ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह और दस गुणधर्म क्षमा , कोमलता , सत्य , सरलता , संयम , मन तथा शरीर की शुद्धता , तप , त्याग , अमरत्व और ब्रह्मचर्य इन पांच महाव्रतों और दस गुणधर्म को जिसने अपने जीवन में स्थान दिया हो उन्हीं को शुद्ध रूप से सच्चरित्र व्यक्ति कहा गया है । बौद्ध शिक्षा में समानता , बन्धुता तथा नैतिक जीवन आचरण को शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य माना है । ' अत्त दिप भव ' , ' भवतु सब्ब मंगल ' , ' बहुजन हिताय बहुजन सुखाय ' आदि शिक्षाओं से शिक्षा के हर पक्ष में चरित्र निर्माण पर जोर दिया गया है । तथागत भगवान बुद्ध के द्वारा त्रिशरण , पंचशील , चार आर्यसत्य तथा अष्योगक मार्ग मानव जीवन कल्याणकारी होने के लिए तथा जीवन में दुख – सत्य समझ के उसका निराकरण करने की कुंजी दी है । इसके द्वारा व्यक्ति एक नेक और सदाचारी व्यक्ति के रूप में रूपांतरित हो जाता है तथा विश्व कल्याण हेतु शांति स्थापित करने के लिए आगे बढ़ता है । आज का दौर आज हर शिक्षाशास्त्री और समाजशास्त्री मूल्य शिक्षा की बात बड़े जोर से और दुनिया भर के शब्दों को उलट – पुलट के अपनी लेखन शैली की ताकत से कर रहा है । लेकिन क्या हमारा समाज उन मूल्यों के प्रति प्रभावित है ? आजादी को 75 साल पूरे हुए हैं फिर भी आज देश में मूल्यहीनता या अनैतिकता का दिन – ब – दिन बोलबाला बढ़ रहा है । भरे बाजार में सरे आम कत्ल हो रहे हैं । हिंदू – मुस्लिम के धर्म के नाम पर दंगे होते जा रहे हैं , गोधरा कांड , अयोध्या कांड , बांबे में 1992 का बम विस्फोट इसी के उदाहरण हैं । ऊंच – नीच की भावना अभी भी बढ़ रही है । हम स्त्री – पुरुष समानता की बात करते हैं लेकिन स्त्रियों के अत्याचार और बलात्कार के प्रमाण बढ़ रहे हैं । धर्म के नाम पर चुनाव जीते जाते हैं । दूधवाला भी दूध में पानी मिलाकर बेचता है । व्यापारी लोग अनाज में कंकड़ मिलाकर बेचते हैं । सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत के कोई काम नहीं होता । आज ऐसा दृष्टि में आता है कि जो सच्चाई के रास्ते पर चलता है वह भूखा मरता है और जो झूठा है उसी का पेट भरता है । इस प्रकार आज समाज में चारों ओर नैतिक , सामाजिक , सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है , इसी की वजह से शिक्षा के क्षेत्र में गिरावट देखने को मिलती है । इसके कारण अनुशासनहीनता , उदासीनता , अनुत्तरदायित्व आदि का जन्म हुआ है । अतः जब तक सही मूल्य शिक्षा के माध्यम से एवं कई प्रसार माध्यमों के जरिए नहीं बढ़ाया गया तो देश के विकास में रुकावट आने से कोई बचा नहीं सकता । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी कहा गया है कि भारत का राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन एक ऐसे कंटकाकीर्ण मार्ग से गुजर रहा है जो सदियों से पोषित एवं स्वीकृत मूल्य के लिए खतरा पैदा कर रहा है । समाज में अनिवार्य मूल्यों में निरंतर कमी तथा बढ़ती हुई स्वेच्छाचारिता के कारण पाठ्यक्रमों में परिवर्तन आवश्यक हो गया है ताकि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके । इसलिए पाठ्यचर्या के माध्यम से भारतीय संविधान में निहित मूल्यों का पोषण कर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सुसंबद्धता को प्रोत्साहित एवं विकसित करने का दृढ़ता के साथ पक्ष लिया जा रहा है । इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के द्वारा चिह्नित दस केंद्रित घटकों को पुनः प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है । ये घटक इस प्रकार है :

1. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास
2. संवैधानिक दायित्व
3. राष्ट्रीय पहचान के पोषण के लिए आवश्यक विषय – वस्तु
4. भारत की सामान्य सांस्कृतिक विरासत
5. समतावाद
6. लोकतंत्र और पंथ निरपेक्षता

7. स्त्री – पुरुष समानता
8. पर्यावरण का संरक्षण
9. प्रगति में बाधक सामाजिक व्यवधान को समाप्त करना
10. ' छोटा परिवार ' का मानक अपनाना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना ।

भारतीय संविधान के भाग 4 अ के अनुच्छेद 51 अ में मौलिक कर्तव्यों को भी केंद्रित घटकों में शामिल करने की सिफारिशों में कहा है कि " लोकतंत्र , धर्मनिरपेक्षता , समाजवाद , वैज्ञानिक स्वभाव , स्त्री – पुरुष , समता , ईमानदारी , सत्यनिष्ठा , शौर्य , सभी जीवों का आदर , विभिन्न संस्कृतियों एवं भाषाओं आदि मूल्यों का वर्णन करते हैं जो कि राष्ट्र की एकता तथा अखंडता के लिए अनिवार्य है । "विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 के अनुसार " विद्यालयी पाठ्यचर्या में वे तत्व निहित होने चाहिए जो आवश्यक मूल्यों का पूर्ण रूप से संचार करें । प्रत्येक शिक्षक को मूल्य – शिक्षक बनना होगा । प्रत्येक क्रियाकलाप , इकाई और अंतर्क्रिया का परीक्षण मूल्य – पहचान , मूल्य – प्रसार , मूल्य – प्रवलन और इसके पश्चात मूल्यों को अमली जामा पहनने के लिए संतुलित और समुचित कार्यनीति संबंधी निर्णयों के आधार पर निर्णय लेने चाहिए । इन मूल्यों को विद्यालयी लक्ष्यों , स्टाफ और छात्रों की भागीदारी द्वारा विकसित अनुशासन का स्पष्ट उल्लेख करके प्राप्त किया जा सकता है । मूल्य निष्पादन के लिए दो पक्षीय संवाद , कल्याण , संचाएं , जरूरतमंद छात्रों को मदद , उपचारात्मक शिक्षण , पुनर्मूल्यांकन और कमतर उपलब्धियों वाले छात्रों को निरस्त न करने का भाव आवश्यक है । इसके लिए ऐसे नियमों का निर्माण करना आवश्यक होगा जिनसे प्रत्येक छात्र की खेलकूदों , विद्यालयी क्रियाकलापों और उनकी रुचियों से जुड़े कार्यक्रमों में सहभागिता सुनिश्चित की जा सकेगी । "

मूल्य शिक्षा की सामग्री के बारे में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2000 के अनुसार " विभिन्न विषयों के लिए पाठ्यपुस्तकें , पूरक पाठ्यसामग्री और अन्य सामान्य वाचन सामग्री में सार्वभौम मानव मूल्यों का समावेश करना होगा । ऐसी सामग्री का सावधानीपूर्वक लिखवाना और उसकी अनवरत समीक्षा करवाना आवश्यक है ताकि वह विपरीत प्रभाव पैदा न करें । वाचन सामग्री सपाट और उपदेशात्मक नहीं होती चाहिए ।वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा का आयोजन इस प्रकार हो जिसमें मानवता , राष्ट्रीयता , धर्मनिरपेक्षता , विवेकशील , चरित्र , प्रज्ञा , करुणा , अनुशासन , स्वाभिमान एवं स्वावलंबन के मूल्य हो और यह मूल्य का प्रसार पाठ्यक्रम और मीडिया के द्वारा प्रसारित हो ।

संचार माध्यम (मीडिया)

आज का युग संचार क्रांति का युग है । आज संचार माध्यमों का आकर्षण निरंतर बढ़ता जा रहा है । यह संचार माध्यम किसी वस्तु विचार या घटना को स्वच्छंद एवं मूर्त रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं । यह माध्यम अपनी अधिकांश प्रस्तुतियों में भाषा के जरिए समाज में जागृति निर्माण करते हैं तथा समाज के मूल्यों को घर घर में पहुंचाने का कार्य करते हैं । मीडिया मानव व्यवहार के अन्य मनोसामाजिक पक्ष पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ रहा है ।

आज के संक्रमणकालीन दौर में सरकार की छवि को बनाने तथा बिगाड़ने में प्रिंट मीडिया , समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं की भूमिका अत्याधिक महत्वपूर्ण हो गई है । वैसे भी ' प्रेस ' को लोकतंत्र में विधायिका , कार्यपालिका , न्याय पालिका के बाद ' फोर्थ स्टेट ' (चौथा स्तंभ) की संज्ञा दी जाती है । लोकतंत्र में सरकार तक जनता को आवाज को पहुंचाने में समाचार–पत्र पत्रिकाएं ही कारगर भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

इलेक्ट्रानिक मीडिया– टी.वी., रेडियो तथा इंटरनेट द्वारा देश में विविध क्षेत्र के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है , उसी तरह प्रिंट मीडिया–समाचार–पत्रों,

जैसे – अपघात , खून , चोरी , दंगा , हिंसा इस तरह की खबरें ली गई हैं । सांस्कृतिक विभाग में धार्मिक , मनोरंजन , सामाजिक , ऐतिहासिक , शादी , फैशन शो इत्यादि प्रकार की खबरें ली गई हैं । शिक्षा क्षेत्र के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित सभी ख़बरें ली गई हैं । अन्य विभाग में आर्थिक व्यापार , विविध विषयों के लेख , भविष्य , कॉमिक्स , विशेष रिपोर्ट , प्रेम , न्याय , क्राइम रिपोर्ट , लॉटरी , कथाएं इन सभी विषयों के लेखें को अंतर्भुत किया गया है ।

विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में एक सप्ताह के समाचार पत्रों के आंकड़ों का औसत लेकर प्रतिशत के रूप में प्राप्तांकों को तालिका में प्रदर्शित किया गया है । सबसे तालिका पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि द टाइम्स ऑफ इंडिया में ज्यादा 81. 8% विज्ञापनों की छपाई की जाती है एवं शिक्षा के क्षेत्र के लेख सबसे कम 1.8% और सांस्कृतिक लेख 1.99% हैं । इंडियन एक्सप्रेस में 34.7% विज्ञापनों को छपवाया जाता है तो शिक्षा में 6.69% और सांस्कृतिक क्षेत्र के 6.45% लेख छपाए जाते हैं एवं 14.6% लेख समाचार होते हैं हिंदुस्तान में भी सबसे अधिक 50.78% विज्ञापन और दूसरा क्रमांक समाचारों का आता है जो 11.68% है । इस समाचार पत्र में शिक्षा पर 2.38% सबसे कम लेख एवं सांस्कृतिक क्षेत्र के 3.5% लेख दृ ष्टिपात होते हैं । अन्य लेखों का 20.9% पाया गया है । द हिंदू में सबसे अधिक 39.2% विज्ञापन और सबसे कम शिक्षा क्षेत्र पर 4.28% एवं सांस्कृतिक क्षेत्र पर 6% , न्यूज पर 21.2% लेख पाए जाते हैं ।

चार समाचार पत्रों में से शिक्षा और सांस्कृतिक क्षेत्र के लेख सबसे अधिक द इंडियन एक्सप्रेस में और सबसे कम लेख द टाइम्स ऑफ इंडिया में होते हैं ।

तालिका 2 पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि कुल समाचार पत्रों के विविध लेखों में से सबसे अधिक 60.97% विज्ञापनों को छपवाया जाता है सबसे कम 2.92% लेख शिक्षा क्षेत्र के ऊपर एवं 3.56% सांस्कृतिक क्षेत्र के लेख पाए गए हैं । राजकीय क्षेत्र के लेख 5.26% पाए गए हैं । चार ही समाचार पत्रों में से तीसरा क्रमांक समाचारों का है जिसके 10. 28% लेख छपाए जाते हैं । तो अन्य खबरें 11% और खेल जगत के 5.93% खबरें पाई गई हैं ।

तालिका–1

समाचार–पत्रों के विविध क्षेत्रों के लेखों के आंकड़े

क्रमांक	समाचार–चत्र	राजकीय	न्यूज	विज्ञापन	शिक्षा	सांस्कृतिक	खेल	अन्य
1.	द टाइम्स ऑफ इंडिया	2.21	4.25	81.8	1.8	1.99	2.50	5.37
2.	द इंडियन एक्सप्रेस	11.29	14.6	34.7	6.79	6.45	16.9	9.17
3.	हिंदुस्तान टाइम्स	7.17	11.6	50.7	2.38	3.5	3.5	20.9
4.	द हिंदू	6.5	21.2	39.2	4.28	6.0	12.0	10.5

तालिका–2

कुल समाचार–पत्रों के विविध क्षेत्र के लेखों के प्रतिशत

विविध क्षेत्रों के लेखों के प्रकार	राजकीय	न्यूज	विज्ञापन	शिक्षा	सांस्कृतिक	खेल	अन्य	कुल
प्रतिशत	5.29%	10.28%	60.97%	2.92%	3.5%	5.93%	11.02%	100%

निष्कर्ष

द टाइम्स ऑफ इंडिया , द इंडियन एक्सप्रेस , हिंदुस्तान टाइम्स एवं द हिंदु इन चार समाचार पत्रों का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रिंट मीडिया में सबसे अधिक विदेशी कंपनियों के विज्ञापनों का प्रसारण होता है । दूसरा क्रमांक अन्य विभाग के लेखों का आता है इसमें भी सबसे अधिक आर्थिक व्यापार के लेख होते हैं । क्रिमनल , प्रेम कहानियां , चुटकुले , भविष्य , ई लेख होते हैं जिसमें सामाजिक मूल्य कम पाए जाते हैं । तीसरा क्रमांक न्यूज का आता है जिसमें चोरी , डकैती , दंगा , मस्ती , खून , हड़ताल की अधिक खबरें होती हैं जिससे यह दृष्टिपात होता है कि सामाजिक मूल्य का हनन हो रहा है । शिक्षा और सांस्कृतिक लेखों के माध्यम से और नैतिक मूल्यों का प्रसार समाचार–पत्रों में बहुत कम किया जाता है ।

सुझाव

अध्ययन के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि प्रिंट मीडिया में सबसे अधिक देशी विदेशी प्रत्येक पृष्ठ पर विज्ञापन कंपनियों के विज्ञापनों का प्रतिशत होता है , समाचार पत्रों की ही संख्या अधिक होती है इसलिए कहीं समाचार पत्र विज्ञापनों के प्रसार के लिए । तो नहीं बना ? या वह पैसा कमाने का माध्यम तो नहीं ? ऐसा होना नहीं चाहिए इसलिए ' प्रेस ' इस सीमा तक शक्तिशाली हो कि वह धन प्राप्ति की परवाह किए बिना ही जनता के दुख दर्द की कहानी सरकार के कर्ता–धर्ताओं को पहुंचाते रहें ।

प्रेस को समाज के विद्वानों को मूल्यों पर आधारित लेखें का लेखन करने के लिए अधिक से अधिक प्रोत्साहन देकर उन्हें समाचार पत्र में छपवाना चाहिए जिससे देश के बुद्धिजीवी वर्ग , शिक्षाशास्त्री , समाजशास्त्री , लेखक , कवि आदि मूल्य शिक्षा पर लेख लिखने में प्रेरित हों और प्रिंट मीडिया के द्वारा समाज जागृत हो । अगर देश में ' मूल्य ' का पालन हर व्यक्ति करने का प्रयास करेगा जिससे संपूर्ण समाज का , देश का साथ में समूचे संसार का कल्याण ही होगा।

Intership Programme for Prepration of quality teacher in context to India.

Shyam Kishor Sing
Asst. Prof.

Introduction:

The role of teacher is very Crucial in the development of a learner. Almost all Commission and Committer on education rightly stressed this aspect when they come up with recommendations. the recommendations given by these Commissions in the form of restructuring teachereducation programmer based on the needs of the learner is still not yet operationdize in Complete Sense, National Curriculum Frame Work For teacherEducation (NEFTE) - 2009 Clearly emphasized the role of teacher in the learner development. It emphas's "The quality and extent of learner achievement are determined primarily by teacherCompetence, Sensitivity and teacherthe motivation.

The teachereducation Programme leading to the Diploma in Elementry Education (D.El.Ed). 1 aims at preparing for the elementy stage of education that is classes I-VIIIRight of children of 6-14 years to free and Compulsory Education Act (RTEAct) was enacted as central Act in 2009. The Act highlights. the need and importance of having Well qualified and Professionally trained teachers to Facilitate relization of the goals of (RTF) the Diploma in Elementry Educat (D.El.Ed.) Programme, which is an Intial teache & Prepration Programme at Elementry level. According to the recommendation of the justice verma Commission which had been accepted by the goverment of India. The NCTE is currently in the process of Comper hensively reviewing of of Education.

Systems and processes with a views to promote Professional quality of teaches, education at all stages of education in accordance with the main trust of national Curriculum Framework for teacherEducation

Teacher Intership programme in India has been Ferrouilated after a research of team of experts in Education area. They have compared and extracted a globalized teacher training Internship Programme.

Objectives

1. To acquaint with school environment as a whole and its Variousdimensions in the Context of All round Development of Student.
2. To Evoluate School textbooks and other resource material critically in the Context of Children's development and Pedagogical approach used.
3. To Under Stand and reflect upon the teaching learning process, practiced in classroom by the O regular teacher.
4. Develop understanding and skill to practices. (CCE) and Implement it appropriately.
5. Develop plan and Conduct Classroom based action research

Research Methodology:-

This paper is basically descriptive in nature. The data used is purely secondary according to the need of Study.

Importance and Concept of internship programme in elementary level.

Two-year D.El.Ed. programme should provide ample opportunities for the student teachers to engage with various stage holders like Child community and school on a partnership model teaching practice and Intesustip is meant for providing First hand experiences to the student teacher in class room. Teaching and Whole school life in general. This will also need to give the student teachers. Change to link in the theoritical knowled with its practical knowledge.

School Internship:-

School internship and standards for D.El.Ed. notified in the Gazette of India. N.C.T.E. Regulation (2014) States the D.El.Ed. programme shall provide for Sustained engagement with learners and the school. The programme shall include visits to Innovation Centers of pedagogy and learning. Innovative schools educational resource centers' teaching learning centers. School Internship would stipulation in. the RTE on the duties of the teacher and Community engagement.

School Internship Frame Work and Guidelines (2016) developed by National Council for teacher Education Further elaborate that out of 16 Weeks Full time. School internship, two weeks shall be Community Work and rest for practice teaching and all school-based activities.

Preparation for Internship.

a. Selection of School for Internship.
b. Preparing lab schools.
c. Preparing mentor teachers.
d. Preparingteacher educators.
e. Developing guidelines for assessment of Internship.

Role and Responsibilities of Student teachers.

1. Unit/ lesson planning.
2. Class room teaching.
3. Lesson observation.
4. Developing and using teaching learning materials.
5. ICT integration.
6. Preparation of CCF activities including Unit tests.
7. Preparation of diagnostic test and identifying learning difficulties.
8. Preparation in school activities.
9. Community and school.
10. Interacting with parents.
11. National knowledge commission (2009)
12. Resource book NCERT New Delhi.
13. H.K.Mathur Innovation in India Education System- Shipra publication
14. Panner selvam, Teacher Education New Delhi APH Publication Corporation.

IMPACT OF DIGITALISATION OF EDUCATION

Nandesh Kumar Thakur
Asst. Prof.

“Technology can become the 'wings' that will allow the educational world to fly farther and faster than ever before; if we will allow it.” - Jenny Arledge ABSTRACT We are running into the 21st century where technology knows no bounds. This is the phase of radical development where technology is taking over every niche and corner. Smartphones, laptops, and tablets are no more unknown words. During this phase the education system is evolving for the sake of betterment, as this generation's students are not born to be confined by the limits of simple learning; their curiosity is vast and cannot be catered with educational systems that were designed earlier. If we kept on teaching our children the way we taught them yesterday, we would deprive them of their tomorrow. Our old educational system lacks the capability to stand a chance in the 21st century. So we are compelled to use digitalization in our educational system Every human being requires education, and digital education is the current trend and requirement for all students or learners to become more focused in their studies. Digital education makes it easier and more diverse than ever before for students or learners to acquire knowledge. It also cuts down on the amount of time it takes to learn anything new. Schools,

Teachers, and the print media have traditionally been the primary sources of education. By registering with schools, teachers, and libraries, students were able to access information sources. Prior to the digital era, the majority of people didn't have access to information, and those who did couldn't get up-to-date information in today's context. The primary goal of this study is to examine the impact of technology and digitalization on Indian education and learning in a concise manner. Questionnaire survey approach was utilised in this study. According to the findings of this study, substantial changes in the way universities and colleges deliver education will occur in the next years. This rapid adoption of digital technologies in both education and assessment is not a passing trend; it will have long-term repercussions that will shape the new normal future. We will see a plethora of opportunities emerge from digital education to empower India's youth in the near future Digital transformation in education plays a vital role in providing high-quality education and equal opportunities to learners all over the world. Since the outbreak of the COVID-19 pandemic, over 1.5 billion students have switched to online education. To make the learning process smooth and seamless for every student, educational institutions and governments develop digital transformation plans and implement necessary changes. Education is one of the world’s single largest industries, making up more than 6% of GDP. It is expected that the global spendings will nearly double in the next five years, reaching $404 billion by 2025. In many ways, this contributes to impact of digitalization on education

Benefits of digitalising education

The current period in time is known as the digital age for a very good reason. Technology and automation have made their way into nearly every aspect of life, and many parameters indicate

that it has been beneficial for us. With regards to education; there are many benefits associated with digitalisation.

Students can access all their study material online, including pre-recorded lessons on video. They also have the option to attend online classes instead of being physically present at an institution, which brings in an element of convenience and flexibility.

Younger students in middle school and high school are able to grasp a functional understanding of various types of software quickly while attending online classes, or taking examinations online. It is evident that the future is digital, and a functional understanding of computers can prove to be a great boon for students in terms of employability down the road. Digitisation of regular text into captivating graphics and visuals has been proven to improve the retention of information. The option to employ digitisation into day-to-day lessons delivered via digital education has greatly increased the desire in students to attend school and simplified learning about complex concepts or ideas.

Digitalization refers to the process of creating a digital representation of objects or attributes that are physical. For instance, scanning a document and converting it into a PDF can be referred to as digitalization. It is the conversion of a non-digital item into a digital artifact or representation. In simple words, it is the conversion of processes and data. Digitalization has influenced almost all industries in the modern age. From business industries to educational institutions, the impact and influence of digitalization cannot be overlooked as it is hugely prevalent. Due to this huge transition brought by the reliance on digital elements and tools, the modern world is often referred to as the 'digital world'.

Impact of Digitalization on Education

The impact of digitalization on education in India are as follows:

- Better Opportunities: Through digitalization, individuals gain access to a wider variety of tools and better educational opportunities so they do not have to limit their choices.
- Increase Information Sources: Learners have started using the internet to search for answers and solve their queries which is evidence that digitalization has yielded various sources of information.
- Digital learning: Due to the advancements in technology, education and learning are no longer limited to textbooks or confined to the four walls of the classroom. Various elearning platforms facilitate learning from home and various digital devices that facilitate learning.
- Better Teaching Resources: Before digitalization took place, teaching materials were limited to the blackboard, chart papers, and other physical materials but nowadays, teachers can use PowerPoint presentations and the like to teach learners.
- High-quality education: In urban areas, the quality of education is much better than in rural areas due to the use of digital tools. Digital tools facilitate the ease of learning which is why it increases the quality of education immediately.
- Source of knowledge: Previously, the main source of knowledge for learners was books. The advent of the internet has changed this scenario because they can Google anything these days and find the answer they are looking for.
- Increased Employment Opportunities: The rise of digitalization yields the need to learn new digital skills such as content marketing, graphic designing, and the like which has led to the introduction of a new field of employment opportunities.

A word of caution

There are undoubtedly several benefits associated with digital education, but we cannot overlook the drawbacks of this sudden change in the education system. Life for today's students is becoming increasingly virtual. The students, from primary school kids to college graduates, are experiencing and displaying a change in communication methods. For example; they would rather receive or send a text instead of a phone call or a face-to-face meeting. We see the youth spending more time on digital platforms and endorsing technology that further digitalises their life, which reduces offline personal interaction in their daily lives. People are increasingly concerned that digital devices will leave their kids unable to adequately interact with the real world around them. The drastic increase in the number of hours children spend on screens has only aggravated the fear of social and cognitive impairment in children. The adoption of digital devices in schools has greatly contributed to the reduction in attention spans. Kids nowadays have to deal with numerous pieces of information on one screen, jumping from tab to tab. Even during online classes, we see kids juggling 3-4 different applications at the same time. Many individuals and institutions are concerned about the impact this lack of attention span will have in the future. Will it get worse or will it enable these children to effectively work on multiple tasks at the same time? Only time will tell. The benefits and drawbacks of digitalisation in education can be discussed ad nauseam. But one thing is certain that the future is digital. Digitalisation as a process affects not only education, but nearly every aspect of life. Hence, it is imperative that students learn to use this convenience the way it was intended to be used as a tool to improve life, and not one to replace crucial aspects of it. Digital transformation in the education industry helps improve the learning experience for both students and teachers, as well as other people involved in the process. Such changes focus on

Improving engagement and accessibility through interactive and customizable learning. As a result, online education gets cheaper, more comprehensive, and more inclusive. Some of the opportunities that digital transformation in higher education enables are microlessons, interactive videos or tests, and even games or AI-based learning methods. All these options help a student get more involved in the process and interact with respective elements or tasks. People with disabilities also get an education with no barriers or difficulties thanks to textto-speech or colorblind-friendly visualization, for example. Digital transformation for educational institutions is a huge step forward in enhancing the learning process and automating plenty of operations: from printing countless essays and coursework to evaluating tests and calculating the GPA. If you have thought of launching digital transformation processes in your company, Softermii can help you out. With over seven years on the market, we can bring change to your business despite its size and industry.

EDUCATION REFORM IN INDIA

Mukesh Kumar
Asst. Prof.

Education is very important for any individual as well as nation. Education helps in all round development of personalities which ultimately help the nation in becoming great and powerful. Unfortunately educational planning and implementation has not been quite satisfactory. Many shortcomings have come to the forefront which ultimately derail the developmental activities. That is why educational reforms have become the most in India to correct the shortcomings andfailures.Education is not merely the being one literate, i.e., how to write and read. Education is more than mere literacy. Education involves reason, the correct approach to life, helps one to know that is right and wrong and be moral. Education helps in broadening one's outlook. It removes superstitions and develops critical faculty in individuals. Education helps in increasing awareness of surroundings, social and political issues. It makes people knowledgeable and develops wisdom. Literacy is the beginning or first step towards making one educated.But unfortunately, in the last 50 years half of the population of India has been literate. Compulsory primary education was to be provided after 10 years of enforcement of Constitution. But it has not been done so. The literacy rate according to 1991 Census is only 52%. The condition of women is still worse, their literacy rate is only 36%. It is said that if you educate a man you educate an individual but if you educate a woman you educate a family. Such is the importance of education of women.Other lacunae on the education front is that we have been producing only clerks in the system as done by British policy of education. Schooling pattern is not uniformall over India. Various educational policies have been implemented but net result is not upto the mark. Basic education is faulty. Upto Class V the medium of education is not in its mother tongue. The burden of books is greater at lower classes in schools. The effort is not towards learning and asking questions but they are being told just to cram and reproduce in the examination without understanding. The standard of teaching has also gone down. Teachers donot teach properly. The condition of government schools is even worse. But public schools charge high fees by which poor children are deprived of good school education. As a result they lag behind in their lives.Teaching at schools have not become functional. They do not provide jobs as if the education becomes useless later in life, it is felt. So efforts towards vocationalisation should be made so that it becomes functional and useful. Government's negligence towards education has added the worries. The government's expenditure has been less than 6% of its GDP. Initially it was only 2%. It was recommended by educational policy makers and Commissions that at least it should be 6%. Government has to come out with new education policy to ensure quality education to children and grownups.At higher levels, campuses have become centres for politics and violence. There is often closure of colleges. Even when they are open, very few classes are held which disappoint students. Centres of learning practice agitations and hartals. Some science institutes like IITs and IIMS are only doing better but practice of brain drain is quite rampant which a wastage of national resources is. This practice needs to be checked. Lack of moral education leads to many problems on the campus and outside the campus. Moral education should be imparted right from the earlier years and at homes. That is why we see degeneration of social values in people. If correct values are instilled at right time, there will not be serious problems of corruption, communalism, casteism, etc. Eve teasing and sexual harassment can also be controlled with

right kind of education. Actually education helps in broadening outlook which can change social attitudes and stereotypes which exist in our society. Many of social evils can be nipped in the bud itself like dowry, violence, etc.

So educational reforms become urgently necessary. Government should come out with new education policy by making the education system a uniform system. Medium of instruction should be in the mother tongue upto Class V. Moral education and coeducation should be the norm. Teachers should be retrained and retaught to teach. Only good teachers should be selected not only on the basis of knowledge but also on the basis of attitude and interest in teaching. Higher education should be streamlined .Only seriously interested in higher studies should be allowed to go for it. Degrees should be delinked from jobs. Examination system should be made tight at all levels. They should be made educated in such a way that they should be capable to start their own livings not dependent on few government jobs. Efforts should be made towards encouraging and not cramming. Girls should be encouraged to go for education which can help in reducing the population also Reforms in education is long awaited. New education policy of 1985 could not come out with concrete results. The situation has not improved much as it was before 1985. The conditions of government schools need more attention. The infrastructure for education needs urgent attention. The government should spend more than 6% of its GDP on education. Autonomy has to be given to various research institutes but at the same time accountability has to be demanded in a more forceful manner. The whole system needs overhauling in order to give a better education. Only right kind of education at this juncture can help in solving myriads of problem facing this country.After Independence, there have been set up several education commissions and committees to bring reforms in the Indian education system. But, as we know, there has been only a limited success in this field. Of course, now there exist many schools which may be considered much better than most of the schools during the pre-Independence period, but much more needs to be done .At present, we have on the government level a system of 10+2+3. There is high school teaching upto class ten. Then there is 2 year schooling known as 10+2 after that and thereafter there is graduation which covers three years. Thereafter, M.Phil. Requires one year and Ph.D. at least two years.
There is actually no end to higher education and then there are so many courses, diplomas and degrees in various disciplines which require different periods of study. The most crucial question, however, is the general, basic and such education which may be elementary in nature though whatever names, nomenclatures, compartments and components it might be having. This general education is essential for broadening and evolving the mind.In the public school system of education, education starts with playway methods, nursery, KG-I, KG-11, Class I to VIII, etc.The most important point in all types of education is that it should be affordable to the common man. There should be no discrimination on any basis. It should be need-based. It should mould the child's personality to the constructive and positive side. It should eliminate cramming and copying. The child should be at the center-stage in this system.

भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से शिक्षक शिक्षा

मिथिलेश कुमार
सहायक प्राध्यापक

प्राथमिक शिक्षा जीवन में वही महत्व है जो दृढ़ एवं स्थायी भवन के निर्माण में उसकी आधारशिला का शिक्षा मनुष्य को मानवता सिखाने वाला प्रथम सोपान हैं। शिक्षा के विभिन्न स्तरों प्राथमिक, माध्यमिक, तथा उच्च शिक्षा में, प्राथमिक शिक्षा ही समस्त शिक्षा की आधारशिला है। किसी भी राष्ट्र के विकास के जितना महत्व प्राथमिक शिक्षा का है उतना माध्यमिक या उच्च शिक्षा का नहीं है। राष्ट्रीय विचार धारा एवं चरित्र का निर्माण करने में इसका जितना महत्वपूर्ण स्थान है। उतना किसी दूसरी सामाजिक, राजनीतिक या शैक्षणिक गतिविधि का नही है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि सब व्यक्तियों की शिक्षा या जन साधारण की शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है। प्राचीन काल में प्राथमिक शिक्षा का दायित्व परिवार या घर को प्राप्त था। बालक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए ही गुरूकुलों में प्रवेश लेता था चूंकि उस काल में प्राथमिक शिक्षा की बागडोर ब्राह्मणों के हाथ में नही थी। इसलिए उसकी घोर अवहेलना हुई परिणाम स्वरूपं देश का पतन हुआ। अतः इसका उत्थान करके ही देश का कल्याण हो सकता है। उन्नति की दौड़ में तथा आज के राष्ट्रीय परिक्षेप्य में प्राथमिक शिक्षा ही राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता की आधारशिला है। वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन प्राथमिक शिक्षा ही है। कुल मिलाकर प्राथमिक शिक्षा हमारे संविधान द्वारा प्रतिष्ठित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हैं।प्राथमिक शिक्षा का महत्व इस बात से और भी बढ़ जाता है कि अधिकतर नागरिकों के लिए सम्पूर्ण शिक्षा इसी स्तर पर समाप्त हो जाती है अतः इस नींव को ससक्त बनाना बहुत आवश्यक है। इस सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि– ''मेरे विचार से जनसाधारण की अवहेलना महान राष्ट्र पाप हैं और हमारे पतन के कारणें में से एक है। सब राजनीति उस समय तक विफल रहेगी जब तक कि भारत में जन साधारण को एक बार फिर भली प्रकार शिक्षित नहीं कर लिया जायेगा। सन् 1898 ई 0 में तत्कालीन बडौदा नरेश ने यह घोषणा की कि उनके राज्य मे अमरेली नगर के एक क्षेत्र के 9 गांवों में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य होगी। उन्हीं के प्रयासों के परिणाम स्वरूप 1906 में 2 गांवों में अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था थी। इसी वर्ष नियम बनाकर सारे राज्य में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी। बड़ौदा नरेश के प्रयासों से प्रभावित होकर गोपाल कृष्ण गोखले ने भी तत्कालीन सरकार से प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता की माँग की। प्रारम्भ में उन्हें असफलता मिली किन्तु उन्हीं के प्रयासों के परिणाम स्वरूप 1917 में ब्रिटिश प्रशासन को भली यह महसूस हुआ कि स्वशासन संस्थाओं को चलाने के लिए जनता का शिक्षित होना आवश्यक है। अतः प्रान्तीय सरकारो ने इस दिशा मे कुछ कार्य किये। इस प्रकार बम्बई, बिहार, उड़ीसा, मद्रास, बंगाल, उत्तर प्रदेश और पंजाब में प्राथमिक शिक्षा की प्रगति 1930 तक निरन्तर होती रही। किन्तु 1931 से 1937 तक इसके विकास में अवरोध उत्पन्न हो गया। इसके दो मुख्य कारण थे।

1. विश्व व्यापी आर्थिक अवसाद तथा दूसरा 1927 में होग समिति की नियुक्ति तथा प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार का प्रस्ताव। फलस्वरूप स्वतन्त्रता प्राप्ति तक देश में बालकों के लिए 229 नगरों व 10,017 ग्रामों में तथा बालिकाओं के लिए दस नगरों में व 1,404 ग्रामों में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था हो चुकी थी। 26 जनवरी 1950 में भारतीय संविधान की धारा 45 में यह घोषणा की गई थी कि दस वर्ष के अन्दर 6 से 14 वर्ष तक के समस्त बालक–बालिकाओं के लिए प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य कर दी जायेगी। भारतीय शिक्षा आयोग ने भारत के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण अंग माना है। शिक्षा की गुणवत्ता को जो ऊंचाई प्राप्त करनी चाहिये थी वह नही प्राप्त कर रहा है। सर्वेक्षण के आधार पर यह देखा गया है कि आज शिक्षित समाज का अशिक्षित समाज पर दबदबा बना हुआ है। शिक्षा की खराब व्यवस्था व्यवस्थित जीवन–यापन के तरीके को भी प्रभावित कर रही है। यह छात्र के साथ–साथ समाज व राष्ट्र के लिए भी दुखद है। आज किसी को यह ख्याल नहीं है कि प्राथमिक शिक्षा विश्वविद्यालयी और तकनीकी शिक्षा की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

इसकी अवहेलना के कारण ही बच्चे छोटे उम्र में ही हीनता का शिकार होते जा रहे हैं। ध्यान रखना होगा कि प्रारम्भिक शिक्षा उच्च शिक्षा व तकनीकी शिक्षा से अधिक जरूरी व महत्वपूर्ण है। तकनीकी शिक्षा में प्रति छात्र जितनी राशि आवंटित की जाती है गैर तकनीकी शिक्षा या विश्वविद्यालयी शिक्षा पर इसके आधे से भी कम खर्च होती है। प्राथमिक शिक्षा पर तो सरकारी खर्च नाममात्र का है। इस वजह से भी प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट आई है। अनिवार्य होने के साथ क्या साधन की अनिवार्यता नहीं होनी चाहिए। सरकारों को यह कौन बतायें कि प्राथमिक शिक्षा पर व्यय होने वाला धन

न्यूनतम है। पहले सभी स्कूलों में खेल के मैदान होते थे अब धीरे–धीरे सब व्यवस्था छिन्न–भिन्न होती जा रही है। विज्ञापनों में तो विभिन्न साधन बताये जाते हैं और उनका शुल्क भी लिया जाता है लेकिन व्यवस्था उपलब्ध नही करायी जाती। पाठ्यक्रम में भी समानता नही है आज प्राथमिक विद्यालयों का यदि सर्वांगीय अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि प्राथमिक विद्यालय बच्चों और अभिभावकों को प्रोत्साहित करने का माध्यम न होकर हतोत्साहित करने का केन्द्र हो गया है। पब्लिक स्कूल दूसरी प्रकार की हीनता का माध्यम बन रहे हैं केवल भाषा की दृष्टि से ही नहीं वरन् संसाधनों की दृष्टि से भीं। यदि नींव के स्तर पर ही बच्चों में नफरत और हीनता का मिट्टी–गारा भर दिया जायेगा तो भवन का निर्माण कैसा होगा। हमें मैकाले के शैक्षिक विचारों वाली सोच से बाहर निकलना होगा तभी शैक्षिक समस्या का समाधान हो सकता है। पब्लिक व सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता की तुलना करने से बेहतर यह होगा कि हम इस विषय पर सोचें कि प्राथमिक शिक्षा की किस तरह की हो, उसका उद्देश्य क्या है, उसकी आवश्यकता और जरूरतें क्या हैं। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य वैश्वीकरण का पोषण है या आने वाली पीढ़ी को आत्मनिर्भरता और समानता की ओर ले जाना। इस विषय पर चर्चा बन्द कमरों में न होकर सार्वजनिक रूप से होनी चाहिए। आज की शिक्षा राजनीतिक हो गई है, जबकि शिक्षा राजनीति नहीं हैं और न ही जरूरत की पूर्ति के लिए उत्पाद बढ़ाने का जरिया ।

सरकार द्वारा '' प्राथमिक शिक्षा योजना के अन्तर्गत –शिल्प केन्द्रत या कार्यानुभव शिक्षा मात्र भाषा शिक्षा, जीवनोपयोगी शिक्षा, किया आधारित शिक्षा, स्वालम्बन हेतु शिक्षा, निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, बच्चों के पोषण हेतु पोषाहार की व्यवस्था है।सुविधा की दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं को निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं–

1 आर्थिक समस्याएं
2 राजनैतिक समस्याएं
3 भौगोलिक समस्याएं
4 शैक्षिक समस्याएं
5 अन्य समस्याएं जैसे

(1) बच्चे स्कूल क्यों नहीं जाते हैं। यूनिसेफ 1995 ने भारत के सन्दर्भ में आम तौर पर स्कूल न जाने के निम्नलिखित कारण बताए हैं–

- जरूरत से ज्यादा भीड़–भाड़ वाले कक्षा कक्ष
- स्कूल खुलने की गैर लचीली समय योजना
- शिक्षकों का अपर्याप्त प्रशिक्षण
- शिक्षकों की अनियमित उपस्थिति तथा बहुत ज्यादा अनुपस्थित रहना
- असंगत शिक्षा तथा भारी भरकम पाठ्यक्रम
- माता–पिता की लापरवाही ।

(2) 100 प्रतिशत से ज्यादा का सकल नामांकन अनुपात इसका निहितार्थ क्या है।
(3) प्राथमिक स्तर पर बच्चों की निराशाजनक उपलब्धियाँ
(4) नैतिक मूल्य तथा चरित्र शिक्षा का आभाव
(5) जनसंख्या शिक्षा
(6) एक या दो अध्यापकों वाले स्कूल बहुश्रेणी अथवा बहुकक्षा शिक्षण
(7) बाल विकास सम्बन्धि महत्वपूर्ण तथ्य तथा अध्यापक
(8) छात्र केन्द्रीत शिक्षा तथा आदर्श प्रगाथमिक विद्यालय का चित्रण
(9) पर्यावरण शिक्षा

1997–1998 के इण्डिया टुडे के सर्वेक्षण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हमारे यहाँ की शिक्षा व्यवस्था विश्व में दूसरा स्थान रखती हैं। वर्तमान रूपये 610 हजार प्राथमिक और 185 हजार उच्च प्राथमिक सरकारी विद्यालय तथा 1.87 मिलियन शिक्षक और 110 मिलियन छात्र मान्यता प्राप्त विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हमारे यहां प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या पड़ोसी देश बांगला की जनसंख्या से भी अधिक हैं अतः इसमें कोई शक नहीं है। कि हमारे यहाँ की शिक्षा व्यवस्था विश्व में एक बड़ी शिक्षा व्यवस्था है। परन्तु दावा नही किया जा सकाता कि हम दक्षता, गुणवत्ता तथा अधिगम क्षमता में भी उतने ही अग्रणी हैं।

सन्दर्भ **ग्रंथ–**

- मदन मोहन एवं मालती सारस्वत– भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं
- त्यागी गुरूसरन दास – भारती शिक्षा का परिदृश्य
- किशोर गिरिराज– 'अमर उजाला' दैनिक समाचार पत्र

नई शिक्षा नीति

Dr. Pawan Kumar
Asst. Prof.

21वीं सदी के 20 वे साल में भारत में नई शिक्षा नीति आई है। भारत में सर्वप्रथम 1968 में नई शिक्षा नीति बनाई गई थी उसके बाद 1986 में बनाई गई जिसके बाद नई शिक्षा नीति को 1992 में संशोधित किया गया। लगभग 34 साल बाद 2020 में पुनः नई शिक्षा नीति को लेकर अहम बदलाव किए गए हैं। जिसमें शिक्षा सम्बन्धित बहुत से नियमों में बदलाव किया गया है। वही हाल ही में मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय ने शिक्षा नीति में बदलाव के साथ साथ अपने मंत्रालय का नाम भी बदल दिया है, मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय को अब शिक्षा मंत्रालय के नाम से जाना जाएगा।

वर्ष 1986 के बाद भारत में यह तीसरी शिक्षा नीति है जो भारत में लागू होने जा रही है। जिसके तहत म्कनबंजपवद च्वसपबल में बहुत से बदलाव किये जा रहें हैं। आर्टिकल के माध्यम से नेशनल एजुकेशन पालिसी (नई शिक्षा नीति) की सभी जानकारियां नीचे दी जा रही हैं। छमू म्कनबंजपवद च्वसपबल की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए आर्टिकल को पढ़ें। नई शिक्षा नीति के तहत 2030 तक शैक्षिक प्रणाली को निश्चित किया गया है और वर्तमान में चल रही 10. 2 के मॉडल के स्थान पर पाठ्यक्रम में 5. 3. 3. 4 की शैक्षिक प्रणाली के आधार पर पाठ्यक्रम को विभाजित किया जाएगा। नई शिक्षा नीति 2020 के लिए केंद्र तथा राज्य सरकार के निवेश का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया है जिसमें केंद्र तथा राज्य सरकार शिक्षा क्षेत्र सहयोग के लिए देश की 6ः जीडीपी के बराबर शिक्षा क्षेत्र में निवेश करेगी। NEW NATIONAL EDUCATION POLICY का उद्देश्य शैक्षिक क्षेत्र में भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाना है और भारत के लिए नई शैक्षिक नीतियां के माध्यम से संपूर्ण भारत में शिक्षा का उचित स्तर प्रदान करना है जिससे शैक्षिक क्षेत्र की गुणवत्ता उच्च हो सके।

भारत में बच्चों को तकनीकी तथा रचनात्मकता के साथ–साथ शिक्षा की गुणवत्ता का महत्व से अवगत कराना नई शिक्षा नीति का उद्देश्य है जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सके। शिक्षा में गुणवक्ता लाने के लिए यह केंद्र सरकार के तहत नई शिक्षा नीति को शुरू किया गया है।

नई शिक्षा नीति के मुख्य तथ्य

- नई शिक्षा नीति के माध्यम से एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट का गठन किया जाएगा जिसमें छात्रों द्वारा परीक्षा में प्राप्त किए गए क्रेडिट को डिजिटल अकैडमी क्रेडिट बनाया जाएगा और विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों के माध्यम से इन क्रेडिट को संग्रहित कर छात्र के अंतिम वर्ष की डिग्री में स्थानांतरित करके सभी क्रेडिट को एक साथ जोड़ा जाएगा।
- नेशनल एजुकेशन पालिसी के अंतर्गत शैक्षिक पाठ्यक्रम को लचीला बनाए जाने की हर संभव कोशिश की जा रही है । यदि कोई छात्र किसी शैक्षिक कोर्स में रुझान ना रखने के कारण उस शैक्षिक कोर्स के बीच में दूसरा कोर्स पढ़ना चाहता है तो वह अपने पहले कोर्स से निश्चित समय अवधि तक रुक कर दूसरा कोर्स ज्वाइन कर सकता है।
- नई शिक्षा नीति के तहत भारतीय उच्च शिक्षा आयोग को 4 वर्टिकल दिए गए हैं । जिसमें नेशनल हायर एजुकेशन रेगुलेटरी काउंसिल , हायर एजुकेशनल काउंसिल , जर्नल एजुकेशन काउंसिल तथा नेशनल एक्रीडिटेशन काउंसिल को रखा गया है।
- ई–लर्निंग पर जोर देना ताकि किताबों पर निर्भरता कम हो सके।
- नई शिक्षा नीति के माध्यम से दिव्यांग जनों के लिए शैक्षिक पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है।

नेशनल एजुकेशन पालिसी क्या है ?

नेशनल एजुकेशन पालिसी को शिक्षा नीति 1986 की जगह पर लागू किया गया है। नई एजुकेशन पालिसी में 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के तहत रखा गया है। नई शिक्षा नीति के तहत 2030 तक नई शैक्षिक प्रणाली को निश्चित किया गया है और वर्तमान में चल रही 10+2 के मॉडल के स्थान पर पाठ्यक्रम में 5+3+3+4की शैक्षिक प्रणाली के आधार पर पाठ्यक्रम को विभाजित किया जाएगा। इस नीति का विजन सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है।

Phubbing Behaviour

Arpana kumari
Asst. Prof.

Introduction - The progress of information and communication technology in digital era has resulted in various changes in society, especially social change like human behaviour, dress up, communication style, medium of communication, and living style so on . Social change is a change in patterns or forms of interaction in social relationships. This was marked by the emergence of various types of media and communication devices called Smartphone to facilitate and speed up access to messages and information and also using different social sites for communication , acquiring knowledge and entertainment like Facebook , You Tube , Twitter , TikTok, Sina Weibo ,Telegram , Snapchat , Kuaishou , Reddit ,Linkedln , Instagram, Pinterest etc. Smartphone have multiple benefits, giving easy access to communication and allowing people to connect with friends and family throughout the day and anywhere. Also, Smartphone's can provide various information , entertainment and different types of online games .The increasing number of Smartphone users at this time presents benefits and adverse effects in its use. But when people talk to someone and don't give attention properly to use smart phone is called **Phubbing**. The word "Phubbing " comes from two words: **"phone" and "snubbing ."** This means seeing someone's cell phone during a real conversation with someone else. Phubbing can be described as an individual looking at his or her mobile phone during a conversation with other individuals, dealing with the mobile phone and escaping from interpersonal communication".

Phubber is a term for individuals who do phubbing. Phubber will often see Smartphone's only to check it on average 221 times per day , even when it doesn't vibrate or ringing, they keep checking the Smartphone , and 70% -80% of the people who drive uses a Smartphone while on the road . Even worse conditions are when interested people or a family gathering in a room to do certain activities, such as dinner or study in class, but do not pay attention to or do not communicate with each other and focus on Smartphone . Such conditions are not in accordance with the culture of mutual respect or ethics in communication that has existed since the community recognized social values in life .

Cause of Phubbing Behaviour –

The main cause of phubbing behaviour is increasing interest towards technology that showed how much people affected from electronic device like Smartphone, Laptop, and Television etc.

- The new generation show their personality, status by using excess Smartphone and followers on social sites that is also a cause of Phubbing Behaviour.
- Mostly Parents are doing job private or government sector so they have lack of time to care their child by which they give smart phone to play game and talking to them .it is also a cause of creating Phubbing behaviour where child are more connected with Smartphone then his grandfather or grandmother .
- Phubbing is a constant Smartphone usage and causes a lack of human interaction or an attitude of hurting the other person by using an excessive Smartphone.
- Phubbing is a culture that arises because of the uncontrolled effects of modernization. Modern society prefers to do various activities on their own by using a variety of technologies so that they become individualistic and do not care about social conditions

- Another thing that explains regarding Phubbing is when individuals see their phones during conversations with other people, dealing with phones and escaping interpersonal communication cause of avoid someone.
- Most of the time people are used to access cyberspace and are used to making friends through social media and they have a lack of skills to socialize directly because all the information needed can be from gadgets so that they generally tend to be individualistic.

Impact of Phubbing Behaviour –Phubbing in life have an impact. Chotpitayasunondh and Douglas showed the effects of phubbing, namely –
(1) neglect of direct interaction,(2) the existence of a cycle phubbing advanced from phubee to phubber with phubbing more violent (3) decreasing the quality and satisfaction of interactions, decreasing trust in the interlocutor, (4) Stretching relationships with communication partners,
(5) Jealousy, (6) influencing mood one's,
(7) Creating a situation of social exclusion. The conditions of social exclusion in phubbing show that a person's social relationship is not what they want, so there is a feeling of despair and helplessness. In a romantic relationship with this attitude, neglect pair can reduce the quality of relationship satisfaction that will lead to conflict (8) Another impact of this phubbing is that people become more apathetic towards their environment, inhibit the process of interpersonal communication, influence social interaction inhibit the emotional bond of individuals because of jealousy, feelings of neglect, anger, sadness etc .

Remedies of Phubbing behaviour –

- Put the phone away or turn your phone to the " do not disturb " in specific time like eating , worship ,yoga or exercise , and sleeping time
- Try to give your self and engage with the people in front of you and have a sincere conversation.
- Challenge to yourself to avoid your phone and don't try to see phone time to time.
- Personal counseling help to stop phubbing and give such an example of role model.
- When u feel loneliness try to spent time with family, friend or do whatever you like to do.
- Try to stop net surfing without essential work and encourage face to face communication and social interaction etc.

Conclusion –

Phubbing arises due to the excessive use of Smartphone and accessing information through social media regardless of the circumstances. Lack of individual interaction with other individuals in real social situations can eliminate the ability to build relationships and communicate well. The result of phubbing behaviour is low achievement, disruption of concentration, loss of interpersonal communication, loss of social interaction, and social closure. Based on the explanation above, it is necessary to provide guidance and counseling services to overcome the behavioural phubbing that is being experienced by many people. The need of guidance and counseling services can be implemented in the form of guidance and counseling modules that focus on "use Smartphone smartly."

माध्यमिक स्तर के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन

श्वेता कुमारी
सहायक प्राध्यापिका

प्रस्तावना–

संवेग एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि इसमें विभिन्न प्रकार के दैहिक परिवर्तन एवं भाव आदि निहित होते हैं। संवेग में व्यक्ति की उत्तेजनशीलता का स्तर अत्यधिक बढ़ जाता है और प्राणी अपने सम्पूर्ण शरीर में तीव्र उपद्रव की अनुभूति करता है। संवेग में आंगिक प्रतिक्रियाएं होती हैं। सभी प्रकार के संवेगों में कुछ न कुछ आन्तरिक आंगिक परिवर्तन (जैसे– फेफड़ा, हृदयगति, आँत, श्वांस गति, रक्तचाप एवं ग्रंथीय) होते हैं। क्रोध की अवस्था में रक्तचाप का बढ़ना, भूख, प्यास का न लगना एवं श्वांस गति में परिवर्तन हो जाता है। इन परिवर्तनों को दो समूहों में विभक्त किया जा सकता है– जैसे रक्त प्रवाह परिवर्तन (रक्तचाप एवं हृदयगति का परिवर्तन) एवं श्वसन परिवर्तन ।

संवेगात्मक व्यवहार अभिव्यंजक होते हैं, अर्थात् संवेग में केवल आन्तरिक परिवर्तन न होकर वाह्य अंगों (हाथ, पैर, आँख, चेहरे आदि) में भी कुछ परिवर्तन होते हैं जिनके अवलोकन से ही स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति संवेगात्मक अवस्था में है। अतः व्यक्ति अपने शरीर के वाह्य अंगों के परिवर्तन से संवेगों की अभिव्यक्ति करता है, जैसे– क्रोध की अवस्था में व्यक्ति का चेहरा लाल, भृकुटी चढ़ी हुई, काँपते होंठ, फड़कती भुजाएँ क्रोध की अभिव्यक्ति के स्पष्ट प्रतीक हैं। संवेग में कोई न कोई आत्मनिष्ठ भाव अवश्य होता है जिसकी अभिव्यक्ति सुखद व दुखद दोनों के रूप में होती है। खुशी संवेग में सुखद भाव व भय संवेग में दुखद भाव की अनुभूति होती है। किसी भी संवेग में सुखद एवं दुखद दोनों भाव एक साथ नहीं होते हैं अर्थात् बिना भाव के संवेगों की अभिव्यक्ति संभव नहीं है।

संवेग की विशेषताएँ–

विकासवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार संवेगों में कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ पाई जाती हैं जिनके आधार पर संवेगों का स्वरूप स्पष्ट होता है ये विशेषताएँ निम्नवत् हैं–

संवेग विकीर्ण होता है– संवेग की विकीर्णता से तात्पर्य सम्पूर्ण शरीर की क्रियाओं में एक तरह के तनाव व परिवर्तन से है अर्थात् संवेगात्मक तनाव अंग विशेष में न होकर सम्पूर्ण शरीर में उत्पन्न होता है। ऐसा शरीर की आन्तरिक क्रियाओं में घटित होने वाले परिवर्तनों के कारण होता है। प्रत्येक संवेग में तनाव की विकीर्णता का स्वरूप अलग–अलग होता है। क्रोध की अवस्था में व्यक्ति अत्यधिक आवेशपूर्ण हो जाता है जिससे उसके होंठ, पैर, एवं हाथ कांपने लगते हैं, किन्तु कुछ व्यक्ति क्रोध की अभिव्यक्ति आवाज की तीव्रता बढ़ाकर करते हैं तो उनमें किसी प्रकार का दूसरा शारीरिक परिवर्तन परिलक्षित नहीं होता है, जबकि भय, खुशी, उल्लास, उत्साह आदि में तनाव का विस्तार सम्पूर्ण शरीर में होता है।

संवेगों में सततता होती है– सभी संवेगों में सततता या निरन्तरता पाई जाती है। संवेग के उत्पन्न हो जाने के बाद सम्बन्धित उद्दीपक के हट जाने के बाद भी कुछ देर तक व्यक्ति में संवेग पाया जाता है। सांप को अचानक देखकर बालक में डर संवेग की उत्पत्ति होती है। बालक सांप को देखकर डर जाता है। सांप के दूर चले जाने के बाद भी बालक में सांप के डर का संवेग कुछ देर तक बना रहता है। संवेगों की निरन्तरता का मूल कारण शरीर के आंतरिक अंगों की चिकनी मांसपेशियों की संरचना एवं उनका कार्य होता है। इन मांसपेशियों की बनावट ही ऐसी होती है कि वे जल्दी तो किसी भी उद्दीपक से उद्दीप्त नहीं होती, किन्तु यदि उद्दीप्त हो गई तो पुनः सामान्य अवस्था को ग्रहण करने में समय लगता है। यह समयान्तराल जितना अधिक होता है उतनी ही अधिक संवेगात्मक सततता पाई जाती है।

संवेग संचयी होता है– संचयीता का तात्पर्य जब कोई संवेग एक बार उत्पन्न हो जाता है तो कुछ क्षण के पश्चात उनसे उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी होती है। ऐसा इसलिए है कि संवेग से व्यक्ति में एक विशेष प्रकार की मानसिक वृत्ति पैदा होती है, जिससे व्यक्ति की प्रतिक्रिया उस दिशा में बढ़ जाती है।

संवेग प्रेरणात्मक होता है– संवेग की इस विशेषता को मनोवैज्ञानिकों (विटेकर, 1970) एवं मार्गन, किंग तथा रॉबिन्सन 1981, ने महत्वपूर्ण माना है। यह देखा गया है कि जब व्यक्ति में तीव्र संवेग उत्पन्न होता है तो उसका व्यवहार किसी लक्ष्य की तरफ उन्मुख होता है, अर्थात् संवेगात्मक व्यवहार किसी न किसी लक्ष्य की तरफ निर्देशित अवश्य होता है।

संवेगात्मक विकास में परिपक्वता एवं अधिगम की भूमिका–

मानव व्यवहार में जन्म से ही विभिन्न प्रकार के संवेगों की अभिव्यक्ति होती है। सभी प्रकार के संवेगों की उत्पत्ति बालकों में जन्म से नहीं पाई जाती। संवेगों के विकास के संदर्भ में प्रथम विकासवादी अध्ययन वाटसन, 1942 द्वारा किया गया। नवजात शिशु द्वारा उद्दीपन के प्रति की गई प्रतिक्रियाओं के आधार पर वाटसन ने स्पष्ट किया कि नवजात शिशुओं में जन्म के समय– भय, क्रोध एवं अनुराग नामक संवेग उपस्थित रहते हैं। शिशु की श्वास क्रिया का रूक जाना, अपनी

पलकों को बंद करना, होठों का सिकुड़ना एवं रोने की क्रिया से डर संवेग की अभिव्यक्ति होती है। हाथ व पैर का पटकना, व शारीरिक अकड़न के रूप में शिशु क्रोध की अभिव्यक्ति करता है। रोते शिशु का चुप होकर मुस्कुराना, अनुराग संवेग का प्रदर्शन होता है। वाटसन के अनुसार बालकों में इन तीनों (डर या भय, क्रोध एवं प्रेम) संवेगों की उत्पत्ति कुछ विशेष उद्दीपन का परिणाम होती है। यथा– डर संवेग की उत्पत्ति शिशु में तीव्र ध्वनि एवं ऊँचाई से नीचे गिरने से उत्पन्न होती है। शिशु स्वयं हाथ एवं पैर की क्रियाएं करता है किन्तु जब उसकी स्वतंत्र क्रियाओं में अवरोध उत्पन्न होता है तो क्रोध का संवेग उत्पन्न होता है। शिशु के प्रति सहानुभूति व्यवहार एवं गुदगुदाने की क्रिया से अनुराग संवेग की उत्पत्ति होती है।

संवेगात्मक विमाएँ–

संवेग में वैयक्तिकता पाई जाती है। एक ही संवेगात्मक उत्तेजना के प्रति अलग–अलग व्यक्तियों में अलग–अलग हाव–भाव का प्रदर्शन देखा जा सकता है किसी संवेगात्मक उत्तेजना के प्रति व्यक्ति किस प्रकार के संवेग की अभिव्यक्ति करेगा। यह उसके अधिगम पर निर्भर करता है। किसी उद्दीपक को देखने का दृष्टिकोण प्रत्येक व्यक्ति का अलग–अलग होता है। इसी कारण संवेगात्मक विकास एवं अभिव्यक्ति में भी वैयक्तिकता पाई जाती है। मनोवैज्ञानिक सैन्फोर्ड के अनुसार संवेग में निम्नलिखित विमाएं निहित होती हैं जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

1. उच्च–निम्न– इस विमा पर व्यक्ति के संवेगों की अभिव्यक्ति अत्यधिक उच्च स्तर एवं अत्यधिक निम्न स्तर की पाई जाती है। जैसे कुछ व्यक्ति प्रेम संवेग की अभिव्यक्ति उच्चतम रूप से करते हैं अर्थात् उन्माद की स्थिति उनमें पाई जाती है जबकि कुछ व्यक्तियों में निम्नतम स्तर पर प्रेम की अभिव्यक्ति पायी जाती है।
2. प्रबल एवं दुर्बल– इस विमा पर व्यक्ति के संवेगों की तीव्रता का ज्ञान होता है कि प्राणी में पाया जाने वाला संवेग अधिक तीव्र हो सकता है व कम तीव्र अर्थात् दुर्बल या कमजोर एक ही उद्दीपन के प्रति कुछ व्यक्तियों में प्रबल क्रोध एवं कुछ व्यक्तियों में दुर्बल क्रोध की अभिव्यक्ति होती है। प्रबल–दुर्बल विमा सभी प्रकार के संवेगों में पाई जाती है।
3. बहुत कम– किसी व्यक्ति में संवेग अधिक मात्रा में पाया जाता है और कुछ व्यक्तियों में अत्यधिक कम या क्षीण रूप में। अपनी संतान की सफलता एवं सुकर्म पर कुछ लोग अत्यधिक खुशी व्यक्त करते हैं तो कुछ लोग अत्यधिक कम या व्यक्त ही नहीं करते। इस प्रकार की विमीय विशेषता अन्य संवेगों में भी पाई जाती है।
4 व्यापक प्रसार–सीमित प्रसार– किसी संवेग का प्राणी पर कितना प्रसार या फैलाव है का ज्ञान इस विमा से होता है। किसी डरावनी वस्तु या उद्दीपक को देखकर भय की उत्पत्ति स्वाभाविक है किन्तु गय के फैलाव में अंतर हो सकता है। किसी बालक ६ व्यक्ति में भय का फैलाव अधिक न किसी में कम सकता है।
5. नियंत्रित अनियंत्रित अभिव्यक्ति नियंत्रित अनियंत्रित विमा का तात्पर्य यह है कि किसी व्यक्ति में किसी संवेग की अभिव्यक्ति स्वतंत्र या अनियंत्रित रूप में होती है व किसी व्यक्ति में नियंत्रित रूप में। उदाहरणार्थ– क्रोध की स्थिति में कुछ लोगों द्वारा चिल्लाना, तेज आवाज में बोलना तथा आक्रामक व्यवहार करना, अनियंत्रित अभिव्यक्ति माना जाता है, जबकि कुछ लोगों में क्रोध की स्थिति मे मनमसोस कर रहना, मन–ही–मन क्रोध करने का व्यवहार, नियंत्रित अभिव्यक्ति होती है। इसी प्रकार खुशी में कुछ लोग ठहाका मार कर हंसते हैं अनियंत्रित एवं कुछ लोग खुशी की अभिव्यक्ति केवल मुस्कुराकर करते हैं नियंत्रित अभिव्यक्ति है ।
6. स्वाभाविक – अस्वाभाविक इस विमा का तात्पर्य है कि व्यक्ति में उत्पन्न होने वाला संवेग स्वाभाविक परिस्थिति में है या स्वाभाविक भयावह उद्दीपक को देखकर भय संवेग की उत्पत्ति स्वाभाविक है, किन्तु संतान की सफलता पर माता–पिता का दुखी होना अस्वाभाविक संवेगात्मक अभिव्यक्ति है। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की मृत्यु पर हंसना एवं किसी बालक के जन्म पर रोना अस्वाभाविक अथवा असंगत संवेगात्मक अभिव्यक्ति होती है। किन्तु कुछ परिस्थितियों में संवेगों की अस्वाभाविक अभिव्यक्ति स्वाभाविक हो जाती है, जैसे किसी मुर्दे को देखकर कब्र खोदने वाले में खुशी का अनुभव एवं अनोखी मुस्कान एक प्रकार की स्वाभाविक अभिव्यक्ति पाई जाती है।

बालक के जीवन में संवेगों का महत्व–

जीवन के विकास में बालकों के लिए संवेगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा बालकों में पाये जाने वाले संवेगों के महत्व को प्रमाणिक माना गया है। बालकों की दैनिक क्रियाओं से स्वयं को आनन्द की प्राप्ति होती है। एक तरफ बालक को जीवन में हर्ष, खुशी, अनुराग एवं जिज्ञासा नामक संवेगों से सुख की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर क्रोध, भय, डर एवं आक्रामकता, घृणा की अभिव्यक्ति से बालक अपने आपको तनाव से मुक्त रखता है। संवेग जीवन के लिए उतना ही महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है जितना कि भोजन एवं सांस लेना। मानव एवं पशु में समान प्रतिक्रियाएं पाई जाती है । भय एवं क्रोध आदि की स्थिति में संवेग एक आपातकालीन क्रिया है जो व्यक्ति को दूर भागने या प्रतिकार करने के लिए प्रेरित करती है। लैंगिक प्रक्रिया एवं शिशु के प्रति रागात्मक भाव के रूप में संवेग महत्वपूर्ण व्यवहार करते हैं। बालक चेतना या अचेतन रूप से संवेगों की अभिव्यक्ति दूसरों को प्रभावित करने के लिए करता है। छोटे बालक अपनी इच्छाओं की पूर्ति एवं अपनी बात मनवाने के लिए रोने–चिल्लाने व जमीन पर लेट जाने आदि का व्यवहार करता है। क्रोध की अवस्था में बालक का मुट्ठी बांधना, शरीर को अकड़ लेना अपने से छोटे बालकों पर प्रभुत्व प्रदर्शित करने का व्यवहार

करता है। आनन्द के सम्बन्ध में हरलॉक (1978) का विचार है कि शारीरिक आधार पर आनन्द प्रकृति की अनुपम औषधि है। जिससे तनाव की समाप्ति एवं आराम की प्राप्ति होती है। जब बालक अपनी संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं की पुनरावृत्ति करता है तो ये संवेगात्मक प्रतिक्रियाएं आदत के रूप में विकसित हो जाती हैं। सुखदायी संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं से बालकों में आदतों का निर्माण होता है।

अध्ययन **के उ**द्देश्य–

1. श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता जानना ।

(अ) श्रवण बाधित बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता की तुलना करना।

(ब) कला वर्ग के श्रवणबाधित बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता की तुलना करना ।

(स) विज्ञान वर्ग के श्रवणबाधित बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता की तुलना करना ।

अध्ययन **वि**धि–

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन के उद्देश्यों एवं प्रकृति को ध्यान में रखकर वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध जो कि माध्यमिक विद्यालयों के श्रवण बाधित विद्यार्थिकों के लिए व जनसंख्या 93 है। न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन गोरखपुर मंडल की सीमा में स्थित माध्यमिक विद्यालय जिनकी संख्या 75 है में अध्ययनरत् 93 श्रवणबाधित विद्यार्थियों पर किया गया है। अतः गोरखपुर मंडल की सीमा में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के समग्र श्रवण बाधित विद्यार्थी अध्ययन की जनसंख्या है।

प्रयुक्त **श**ोध **उ**पकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है–

संवेगात्मक स्थिरता इन्वेन्ट्री जो कि संजय बोरा द्वारा निर्मित है तथा नेशनल साइक्लोजिकल कार्पोरेशन आगरा द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित है।

विवेचना–

उपरोक्त अध्ययन के निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि श्रवण बाधित विज्ञान वर्ग के बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता में सार्थक अंतर इसलिए नहीं पाया गया क्योंकि विज्ञान वर्ग के बालक एवं बालिका दोनों ही विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता की दृष्टि से लगभग समान स्थिति प्रदर्शित करते हैं। साथ ही विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति वाले होते हैं जिससे उनके संवेगात्मक स्थिरता पर लिंगभेद का विशेष प्रभाव नहीं पाया गया है। इसके साथ इस वर्ग के श्रवण बाधित बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता उत्तम पाई गई है। जैसा कि उनके संवेगात्मक स्थिरता के प्राप्तांक से स्पष्ट है कि जिनका मध्यमान क्रमशः 62.83 तथा 59.08 है।

निष्कर्ष **की शै**क्षिक **उ**पयोगिता–

1. प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शिक्षा हेतु शिक्षकों को आवश्यक मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षित किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर श्रवण बाधित व्यक्तियों में अपेक्षाकृत अभिक्षमता को सृजनात्मक बुद्धि तथाअन्य विकासात्मक गुणों का विकास किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा प्रशासकों, संस्थानों एवं प्रधानों को विद्यालय के वातावरण में इन विद्यार्थियों को आवश्यक वातावरण तैयार में मददगार होंगे।

संदर्भ **ग्र**ंथ **सू**ची –

1. पुनर्वास के आयाम– जे0से0फ०ए०आर० डॉ०, संस्करण द्वितीय (2005). प्रकाशन–समाकलन पब्लिशर्स विकलांग समाकलन संस्थान, करौदी, बी०एच०यू०, वाराणसी, पृ0सं0– 60–68।
2. सिंह, अरूण कुमार– शिक्षा मनोविज्ञान (2010), नईदिल्ली प्रकाशन, पृ0सं0–284।
3. सिंह, अरूण कुमार एवं सिंह, कुमार आशीष– आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान (2011), मोतीलाल बनारसीदासजवाहर नगर दिल्ली, पृ०सं०– 102–109।
4. उपाध्याय, कुमार राजेन्द्र– विकासात्मक मनोविज्ञान (2009), प्रकाशक– मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, पृ०सं० 286–293।

Reinventing Teacher Education in context of NEP-2020

Shipra kumari
Asst. Prof.

Introduction - India's aspiration to become a knowledgeable society, reverberating with educated and skilled individuals of high standards that are required to meet the challenges of the 21st century will require us to ensure a strong foundation to our school education system. Based on the principles of equity, quality, accessibility and affordability the **NEP-2020** brings the focus back on children as well as teacher. The **NEP-2020** stated goal is to "reinstate" teachers as the "most respected members of our society." empowerment of teachers remains a recurrent theme in the policy, and it is understood that this can be achieved by ensuring their livelihood , respect , dignity and autonomy", while ensuring quality and accountability .

Need of present time -

- In present time, we need to keep abreast with not only the curriculum in the textbook but also the ever evolving technology, changing teaching style as well as continuously update themselves with the culture and beliefs that shape up the student of today.
- Multidisciplinary environment is key requirement for the holistic development of individuals
- Teachers also need to play a more conscious role in supporting the parents, community, as well as school management in developing the child.
- As technology and blended learning become a part of our daily lives, and life skills like collaboration, creativity, and curiosity become more essential to succeed as professionals and individuals in the world.
- Teachers has need to become mentor students and link real-life experiences and skills with the curriculum that they teach.
- Most importantly, teaching needs to be student –centric and joyful to foster the joy of learning and discovering among young people who will be leaders and entrepreneurs of the world.

NEP 2020 has proposed to revise and revamp aspect of teacher education, in line with current trends, including its structure, regulation, and governance through radical action so as to raise standards and restore integrity, credibility, efficacy, and high quality to the teacher education in the country. Recognizing the ' power of teacher' , NEP 2020 has put in place systematic reforms that would help 'teaching' emerge as an attractive profession of choice for bright and talented young minds and has put in place different intervention like **ITEP ,NPST , NMM** ,and at least 50 hours of **CPD** for every teacher in a year .

The 4year Integrated Teacher Education Programme (ITEP), a dual-major holistic bachelor's degree programme offering B.A./B.Sc./B.Com. B, Ed. Will be the minimum entry requirement for teacher. All stand-alone **Teacher Education Institutes TEIs** will be required to transform to multidisciplinary by 2030.

ITEP will teach cutting –edge pedagogy and offer a foundation in **ECCE**, **FLN**, toy-based pedagogy, stage –based pedagogy, inclusive education, and a comprehension of India and its values/ethos/art/traditions, among others.

The roll out of National Professional Standards for Teachers (NPST) is a continuum in teacher education so far as it would cover expectations for the role of teacher at different levels

of expertise/experience at different stages of his/her career, and the competencies required for that stage .As and when it fully evolves, linkage of career promotion, financial incentives, etc. will enable the teachers to strive for the next level of professional competencies.

National Mission for Mentoring (NMM) for schools will be operationalised by **NCTE** by creating a large pool of outstanding senior / retired faculty as potential mentors for mentees, regardless of the age or position of the mentor and mentee who will contribute towards realising 21st century developmental goals of our nation .NMM underlines the importance of the short and long-term mentoring /professional support to teachers and teachers educators.

NEP-2020 envisages each teacher to undergo at least 50 hours of CPD per year. To realize the vision of **NEP-2020,** recently, **NCERT** under the aegis of **MOE,** in collaboration with states/UTs and autonomous bodies have initiated the **NISHTHA** integrated training programme **1.0, 2.0, and 3.0** online for different stages of school education.

Conclusion

The multipronged approach adopted by NEP-2020 is likely to revitalize the teacher education, allow bright student to opt for ITEP as a matter of choice rather than by chance, and interventions like NPST, NMM, CPD, etc. contribute to qualitative change in teachers' pedagogic transaction .Simultaneously, efforts will also have to be made to phase out the sub-par teacher training institutes and D. El. Ed. Courses.

भारतीय उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं शिकारी पत्रिकाओं का फैलता जाल एक समीक्षा

मीना कुमारी
शोधार्थी

इक्कीसवीं सदी का दूसरा दशक उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण दशक के रूप में देखा जा सकता है। यह दशक वैश्विक स्तर पर अनुसंधान एवं शोध पत्रों की गुणवत्ता पर गहन चर्चा, शोध साहित्य की चोरी आदि पर बनाए गए विभिन्न नियमों, कानूनों का साक्षी रहा है। भारतीय उच्च शिक्षा तंत्र भी इन समस्त चर्चाओं एवं परिवर्तनों से अछूता नहीं रहा है। अनुसंधान की स्तरीयता एवं गुणवत्ता इससे पूर्व कभी भी इतनी गंभीर चर्चा का विषय नहीं था। इस समयावधि के दौरान भारतीय उच्च शिक्षा की सर्वोच्च नियामक संस्था विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने कई नियम बनाए और अनुभवों के आधार पर उसे परिवर्तित भी किया। यह दशक उच्च शिक्षा में कार्यरत समस्त शिक्षकों के लिए और शोधार्थियों के लिए भी अत्यंत महत्व का रहा। गुणवत्ता की इस कड़ी में शिक्षकों के समस्त कार्यकलापों एवं अनुसंधान की समस्त रचनात्मकता को अकादमिक निष्पादन सूचकांक एवं उसे शिक्षकों की प्रोन्नति से जोड़ दिया गया। सामान्यतः इन प्रयासों को गुणवत्ता में वृद्धि से जोड़कर न देखने के बजाय ये गुणवत्ता में ह्रास का कारण बनते चले गए। इस कारण पुनः इन प्रावधानों को परिवर्तित एवं संशोधित किया गया। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप शिकारी पत्रिकाओं का उद्भव एवं तत्पश्चात् उनका पराभव भी देखा गया। अवधि का सकारात्मक पहलू यह था कि परिवर्तन यथा समय कर लिए गए, जिसमें यू.जी.सी. की जर्नल लिस्ट के उपरांत यू.जी.सी. की केयर लिस्ट गुणवत्ता उत्तम उदाहरण है। नियंत्रण के प्रयासों का एक विज्ञान सार्वभौमिक होता है, अतः वैज्ञानिक सूचनाओं एवं प्राप्तियों को साझा किया जाना वैज्ञानिक प्रगति का आधार है एवं वैज्ञानिक शोध पत्रिकाएँ इस साझेदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं (डेमिर, 2018)। किसी भी वैज्ञानिक खोज एवं आविष्कार की प्रथम शर्त होती है कि उसे वैज्ञानिक समुदाय के सामने चर्चा एवं आलोचना के लिए रखा जाए ताकि उसकी विश्वसनीयता, सत्यता एवं वैधता साबित हो सके और इस प्रकार की चर्चा एवं आलोचना के लिए पारंपरिक रूप से वैज्ञानिक पत्रिकाएँ एक प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराती हैं। इस तरह के प्लेटफॉर्म पर एक शोधार्थी पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने अनुसंधान की प्राप्तियों नए सीमाओं की चर्चा करता है। इस प्रकार के प्रकाशन था। में प्रकाशन की प्रक्रिया अत्यंत जटिल होती है एवं कों प्रकाशन से पूर्व किसी भी शोध पत्र को कई गुणवत्ता जाँच के दौर से गुजरना होता है, जिसमें सर्वप्रथम संपादकीय निर्णय एवं तदुपरांत एक कठिन एवं जटिल समीक्षा की प्रक्रिया से गुजरना होता है जिसे (पीयर रिव्यूड) कहा जाता है और ऐसी समीक्षाओं के जटिल दौर से गुजरने एवं न कई बार आवश्यक संशोधनों के उपरांत उपयुक्त पाए जाने के बाद ही, कोई भी अनुसंधान पत्र प्रकाशित होकर अपने त्रुटिरहित रूप में वैज्ञानिक समुदाय के सामने आता है। वैज्ञानिक अनुसंधान की उत्कृष्टता एवं प्रगति का भारतीय इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है (सीतापति और अन्य, 2016)।

शिकारी शोध पत्रिकाएँ पिछले एक दशक से संपूर्ण विश्व के लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं। पिछले कुछ वर्षों से अकादमिक प्रकाशनों की निष्ठा पर शिकारी पत्रिकाओं ने प्रश्न चिह्न खड़े कर दिए हैं (बर्थोलोम्यु, 2014)। क्योंकि शिकारी प्रकाशकों एवं शिकारी पत्रिकाओं की बाढ़ सी आ गई है, जो लेखकों से पैसे लेकर गुणवत्ता विहीन सामग्री भी छापने को तत्पर हैं। इस प्रकार की शिकारी पत्रिकाएँ समकक्ष व्यक्ति समीक्षित होने का दावा तो करती हैं, परंतु वास्तव में वे समकक्ष व्यक्ति समीक्षित नही होती हैं (एरिक्सन और हेलेग्सन, 2016)। इतना ही नहीं, इस प्रकार की पत्रिकाओं को संरक्षित करने हेतु वर्तमान समय में कई ऐसी संस्थाएँ भी खड़ी हो गई हैं जो इस प्रकार की पत्रिकाओं की रैंकिंग एवं उनके इम्पैक्ट फैक्टर के निर्धारण का काम करती हैं (पटवर्धन, 2019) और आश्चर्यजनक रूप से शिकारी पत्रिकाओं द्वारा उनका इम्पैक्ट फैक्टर भी प अत्यंत उच्च बताया जाता है। उच्च इम्पैक्ट फैक्टर के लिए उन्हें सिर्फ मनचाहे इम्पैक्ट फैक्टर निर्धारण की एजेंसी से संपर्क करना होता है। एक और चिंता का विषय यह है कि वर्तमान समय में इंटरनेट आधारित ऑनलाइन शिकारी शोध पत्रिकाएँ अधिक लोकप्रिय होने की वजह से गूगल पर कोई भी की–वर्ड सर्च करने पर सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन के कारण शिकारी पत्रिकाओं में छपे शोध ही सबसे ऊपर दिखाई देते हैं। ये आने वाले दिनों में अत्यत विकट स्थिति पैदा कर सकते हैं एवं निम्न स्तरीय अनुसंधान पत्रों को स्तरीय अनुसंधान पत्रों के रूप में स्थापित एवं लोकप्रिय बना सकते हैं। इस प्रकार के कार्यों का बढ़ावा देने में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। क्योंकि सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के विकास ने ऑनलाइन पत्रिकाएँ आरंभ किया जाना एवं उनका सतत संचालन न केवल आसान बना दिया, अपितु उसकी प्रशासनिक जटिलता एवं संधारण को आसान एवं सस्ता बना दिया। वैसे यदि देखा जाए तो इंटरनेट ने हमारे जीवन को परिवर्तित एवं उन्नत बनाने के लिए अनगिनत प्रयास किए हैं, जिसमें त्वरित रूप से वैज्ञानिक जानकारी को वैश्विक स्तर पर साझा करने की क्षमता भी है। परंतु इंटरनेट आधारित तकनीकों ने प्रकाशित वैज्ञानिक शोध की विश्वसनीयता एवं वैधता के लिए एक खतरा भी पैदा कर दिया है (नहाई, 2015)।

शिकारी पत्रिकाओं की ओर वैश्विक ध्यान केंद्रित करने का श्रेय जेफ्रे बिआल (जो कि यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो डेन्वेर में पुस्तकालयाध्यक्ष थे) को जाता है। 'प्रिडेटरी जर्नल्स' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम उन्होंने किया जिसे इस समस्त शोध पत्र में 'शिकारी पत्रिका' के रूप में संबोधित किया गया है। उन्होंने अपने अध्ययनों के आधार पर शिकारी पत्रिकाओं की सूची बनाई (बिआल, जे., 2015 कार्टराईट, 2016 क्लार्क और स्मिथ, 2015 क्लेमन और अन्य, 2017 मानका और अन्य,

2018 मास्टन और ऐशक्राफ्ट, 2016 नरिमानी और डादका, 2017 शमशीर और अन्य, 2017 श्याम, 2015 जिया, 2015)। इस सूची के जारी होने के उपरांत अचानक वैश्विक स्तर पर विद्वत वैज्ञानिक समुदाय के मध्य इन पत्रिकाओं को लेकर एक बहस छिड़ गई और इन शिकारी पत्रिकाओं को प्रतिबंधित करने की माँग की जाने लगी। भारत में शिकारी पत्रिकाओं के बढ़ते जाल को नियंत्रित करने एवं शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के क्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 2019 में एक समिति बनाई। इस समिति ने यू.जी.सी. द्वारा पूर्व में जारी सूची से लगभग 4000 शिकारी पत्रिकाओं को बाहर कर दिया (पटवर्द्धन, 2019)। कुक के शोध अध्ययन में वर्ष 2013 से 2017 के बीच शिकारी पत्रिकाओं की कुल संख्या में 600 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई (कुक, 2017) इस संदर्भ में यह स्पष्ट करना भी समीचीन होगा कि विभिन्न अनुसंधानों में यह पाया गया है कि वैश्विक स्तर पर प्रकाशित की जा रही शिकारी पत्रिकाओं में से लगभग 62 प्रतिशत पत्रिकाएँ भारत से छपती हैं (डेमिर, 2018)। डेमिर के अध्ययन के अनुसार भले ही लगभग 62 प्रतिशत शिकारी पत्रिकाएँ भारत से छपती हों, परंतु भारतीय शोधार्थियों द्वारा मात्र 10 प्रतिशत शोध पत्र ही इन शिकारी पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया जाता है, परंतु (पटवर्धन, 2017) के अनुसार, कई शिकारी पत्रिकाएँ भारत से प्रकाशित होती हैं एवं इनमें छपने वाले शोध पत्रों में भी क भारतीय शोधार्थियों का योगदान बढ़ा है। ये शिकारी पत्रिकाएँ उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान भ के संदर्भ में कई गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं, जिसमें अ सबसे पहला प्रश्न तो यही है कि किन परिस्थितियों में इस प्रकार की अनुसंधान पत्रिकाओं की आवश्यकता वै पड़ी? इन शिकारी पत्रिकाओं के प्रसार को कैसे उपयुक्त वातावरण उपलब्ध हुआ? क्यों उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षक इन शिकारी पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए मजबूर हुए? इनका संभावित कारण यह हो सकता है कि उच्च शिक्षा में शिक्षकों के मूल्यांकन हेतु मानदंडों के रूप में उनके द्वारा लिखे एवं प्रकाशित किए गए शोध पत्रों को अत्यधिक महत्व प्रदान किया गया अर्थात् शिक्षकों की कर्मठता एवं गुणवत्ता का एक पैमाना उनके द्वारा लिखे गए एवं प्रकाशित किए गए शोध पत्रों को माना गया। साथ ही शिक्षकों की प्रोन्नति को उनके द्वारा किए गए प्रकाशनों की कुल संख्या से जोड़ दिया गया, तब से शिकारी पत्रिकाओं की बाढ़–सी आ गई थी। इसके अतिरिक्त दूसरा कारण यह हो सकता है कि उच्च शिक्षा में संलग्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों पर धीरे–धीरे अनुसंधान करने का दबाव बढ़ा और उस अनुसंधान की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिष्ठित वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं में उनके अनुसंधान पत्र का प्रकाशन अनिवार्य माना गया। ऐसे में समस्त शिक्षकों के सामने यह समस्या उत्पन्न हो गई कि यदि निर्धारित समय सीमा में पर्याप्त मात्रा में उनके नाम पर शोध पत्रों का प्रकाशन नहीं हुआ तो उनकी प्रोन्नति रुक जाएगी और उन्हें उनकी पेशेवर प्रोन्नति के साथ–साथ आर्थिक नुकसान भी होगा। इस प्रकार एक शिक्षक के द्वारा किए गए अनुसंधान का मूल्यांकन संख्याओं का खेल हो गया, यथा प्रकाशनों की कुल संख्या, साथ ही मैट्रिक्स, जैसे इंडेक्स, इम्पैक्ट फैक्टर, कुल साईटेशन की संख्या, ऑल्टमीट्रिक स्कोर आदि और इस स्थिति 'प्रकाशित करें या नष्ट हो जाएँ' (पब्लिश या पेरिश) के वातावरण की संज्ञा दी गई (कार्टराईट, 2016)।

इस **प्र**कार **श**ोध **प्र**काशन **को** कुछ शिक्षक कुछ ऐसी शोध पत्रिकाओं की तलाश करने लगे, जिनमें यथासंभव कम से कम समय में शोध पत्रों का प्रकाशन सुनिश्चित हो सके। शिक्षकों की इन आवश्यकताओं का लाभ उठाते हुए कई प्रकाशकों ने अपनी–अपनी शोध पत्रिकाएँ आरंभ कर दीं और इन सभी शोध पत्रिकाओं में भावी प्रोन्नति के लिए इच्छुक शिक्षकों के शोध पत्र एवं आलेख अपेक्षाकृत ज्यादा जल्दी स्वीकृत होने लगे। जिसके लिए सामान्यतः लेखकों से कुछ धनराशि प्रकाशन शुल्क के रूप में ली जाने लगी और पाठकों के लिए पत्रिका निःशुल्क कर दी गई। जैसा कि नेचर पत्रिका में प्रकाशित अपने आलेख में प्रोफेसर भूषण पटवर्धन ने माना है कि 2013 में डॉक्टरेट की उपाधि के लिए शोधार्थी के लिए यह अनिवार्य किया गया था कि वह आवश्यक रूप से कम से कम दो शोध पत्र प्रकाशित करे, जिसके पीछे यह मंशा थी कि शोध की गुणवत्ता में वृद्धि होगी, परंतु इस नियम ने शोध में भ्रष्टाचार को ज्यादा बढ़ावा दिया (पटवर्द्धन, 2019)। इतना ही नहीं कई बार शोध पत्र स्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण हो, परंतु उसका प्रकाशन किसी शिकारी पत्रिका में कर दिया गया हो तब उस शोध पत्र की गुणवत्ता, वैधता एवं शिक्षित समुदाय में उसकी स्वीकार्यता कम हो जाती है, क्योंकि उसका प्रकाशक एक शिकारी प्रकाशक है (रोबर्ट्स, 2016)।

इन समस्त संस्थाओं द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिकाओं एवं को मुक्त शैक्षिक संसाधन के लाइसेंस के अंतर्गत समस्त पाठकों के लिए निःशुल्क ऑनलाइन एवं स ऑफलाइन उपलब्ध कराया जाए। साथ ही, यदि ऐसी अनुसंधान पत्रिका कोई अन्य प्रकाशक या गैर सरकारी संस्था प्रकाशित कर रही हो तो एक शोध पत्र प्रकाशित करने के लिए लेखक से प्राप्त किए जाने वाले शुल्क की उच्च सीमा तय कर दी जाए। इसके अतिरिक्त इससे संबंधित नियम भी बनाए है जाएँ कि किसी अनुसंधान पत्रिका के एक अंक में अधिकतम कितने पत्र प्रकाशित किए जाएँगे। क्योंकि इस शोध पत्र के लेखन के दौरान शोधार्थी ने पाया है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के समस्त प्रयासों के बावजूद कुछ शिकारी पत्रिकाएँ यू.जी.सी. केयर लिस्ट में अभी भी शामिल हैं और उनके एक अंक में 150 से लेकर 500 तक की संख्या में शोध व पत्र हाल के अंकों में प्रकाशित किए गए हैं। यह भी देखा जा रहा है कि कई शोध पत्रिकाएँ व जिनका केवल प्रिंट आई.एस.एस.एन. है, वे यू. जी.सी. केयर लिस्ट में शामिल होने के नाम पर उसी आई.एस.एस.एन. के साथ ऑनलाइन भी प्रकाशित की जा रही हैं एवं उनका व्यापार वर्तमान समय में उच्च स्तर पर है। इस प्रकार की शोध पत्रिकाओं को ब्लैकलिस्ट किए जाने, उनका आई. एस.एस.एन. रद्द किए जाने एवं इस प्रकार के प्रकाशकों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई किए जाने संबंधी सख्त कानूनों की आवश्यकता है। शोध पत्रिकाओं के द्वारा प्रतिवर्ष उनके निर्धारित आवृति से ज्यादा प्रकाशित किए जा रहे अतिरिक्त अंकों एवं विशेषांकों को पूर्णतः प्रतिबंधित किया जाना चाहिए, क्योंकि ज्यादा लाभ के चक्कर में कई शोध पत्रिकाओं का प्रत्येक माह एक सामान्य अंक के अलावा विशेषांक भी सतत प्रकाशित किया जा रहा है जो उन्हें गुणवत्तारहित सामग्री प्रकाशित करने के अवसर प्रदान कर रहा है। प्रकाशन से संबंधित नियमों में यह भी शामिल किया जाना चाहिए कि एक संपादक की योग्यता क्या होगी एवं उस अनुसंधान पत्रिका में न्यूनतम कितने संपादक होने चाहिए। यह एक अत्यंत प्रभावी कदम है

जो शोध पत्रों की गुणवत्ता नियंत्रण के लिए आवश्यक है। इसे समस्त शोध पत्रिकाओं के लिए अनिवार्य बना देने पर शिकारी पत्रिकाओं पर एक हद तक लगाम कसी जा सकती है।

'मेक इन इंडिया' की तर्ज पर भारतीय शिक्षकों एवं शोधार्थियों हेतु 'पब्लिश इन इंडिया' जैसा एक व्यापक अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है एवं भारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं में छपे शोध पत्रों को भी अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्र की मान्यता दिए जाने की आवश्यकता है। भारतीय भाषाओं में प्रकाशित की जा रही शोध पत्रिकाओं को प्रोत्साहित करने हेतु उन्हें विशेष आर्थिक सहायता प्रदान की जा सकती है। शिक्षकों की प्रोन्नति में उनके प्रकाशनों पर अंक प्रदान करने के क्रम में यह नियम लागू किया जा सकता है कि भारतीय भाषाओं में प्रकाशन पर ज्यादा अंक प्रदान किए जाएँ या पद विशेष की अर्हता हेतु आवश्यक न्यूनतम शोध पत्रों का कुछ प्रतिशत हिंदी या अन्य भारतीय भाषा में प्रकाशित किया जाना, अनिवार्य किया जा सकता है। इन सबके अतिरिक्त हिंदी या भारतीय भाषाओं के शोध पत्रों हेतु संदर्भ ग्रंथ सूची की 'भारतीय पद्धति' या दिशा–निर्देश विकसित किए जाएँ एवं भारतीय भाषाओं में प्रकाशित अनुसंधान पत्रिकाओं की गुणवत्ता के भारतीय मानदंड एवं शोध पत्रिकाओं के भारतीय 'इम्पैक्ट फैक्टर' निर्धारण हेतु मानदंड निर्धारित किए जाएँ।

सारांशः यह कहा जा सकता है कि भारत में उच्च शिक्षा की नियामक संस्था विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए जारी यू.जी.सी. केयर लिस्ट एक स्वागत योग्य कदम है, परंतु सिर्फ यह सूची शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए काफी नहीं है। भारतीय शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए भारत में शोध पत्रों के प्रकाशन के अवसरों की उपलब्धता और उनके प्रोत्साहन हेतु उपयुक्त नीति निर्माण एवं उनका क्रियान्वयन आवश्यक है। चंद बड़े प्रकाशन गृहों जिनका कब्जा लगभग एक सदी से वैश्विक वैज्ञानिक प्रकाशनों पर रहा है, उनके प्रभाव एवं प्रचार के जाल में उलझकर नवोदित शोध पत्रिकाओं को शिकारी पत्रिका की श्रेणी में रखकर उसे यू.जी.सी. केयर लिस्ट से बाहर कर देना, भारत में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं के प्रकाशन के स्वप्न पर कुठाराघात है, जो गुणवत्तायुक्त अनुसंधान की संभावनाओं को कम एवं हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण प्रकाशनों के समस्त विकल्प को समाप्त कर सकता है। वर्तमान भारत में 'मेक इन इंडिया' की तर्ज पर 'पब्लिश इन इंडिया' के स्वप्न को साकार किए जा सकने वाले प्रयासों एवं नीतियों की आवश्यकता है।

संदर्भ :–

एरिक्सन. एस. और जी. हेलेगसन. 2017 द. फाल्स एकेडमी – प्रिडेटरी पब्लिसिंग इल साइंस बायोथिक्स मेडिसिन हेल्थ केयर एण्ड फिलोसफी।

क्लार्क.जे0, और आर.स्मिथ. 2015. फर्म एक्शन नीडेड अगेंस्ट जर्नल्स.बीएमजे (ऑनलाइन) 6 सितम्बर 2020 को https://doi.org/10.1136/bmj.h210 से प्राप्त किया गया है.

Innovative Techniques and Methods in Teaching English language

Partha Ghosh
Assit. Prof.

Languages came into existence, when the Homo sapiens started cooperating with one another. Therefore, answering the question, which is the oldest language in the world, is a rather difficult task. Eventually, the use of language became an important part of the human culture. It was not only used to communicate and share information with people around, but it also had many social and cultural uses. It came to be used for identifying a group, social grooming, entertainment, etc., among other things.

As time passed, many languages evolved and diversified, when people started traveling from one part of the world to another. Due to this fact, there are some languages which are spoken in different parts of the world.

Literature and Language are two faces of a coin. Literature is a pedagogic tool to learn language. Language comes next to food. We are so intimately familiar with it that we take it for granted like we do breathing or walking. Literature updates the development of the language. The present article intends to investigate the language interactions and classroom discourses that take place in 'Literature circles'. Literature can help learners to develop their understanding of other cultures, areness of differences and to develop the process of learning and understanding in general. Literature - written artistic works, particularly those with a high and lasting artistic value. Language - A system of communication consisting of sounds, words and grammar, or the system of communication used by the people of a particular country the teaching of Language is the one of the methods of efficient expression and communication, but the use of English as a means of communication has become a vital requirement. Most of the English teachers, who opt to teach English language, do not know how to teach, but thankfully there are some teachers in our country, who brought revolution with their teaching skills in their class rooms by accommodating Innovations in English Language Teaching.

Background

Presently, English teaching in India is carried on formalistic and ritualistic method, without much involvement on the part of the teachers towards learners. English teaching has become an Exam-oriented, Course-centered or Degree-purposed exercise and the teachers never tried to develop English Teaching that should cater to the relevance of the present day needs. Further, being in the post-independent era, the assumption is to be still living on received knowledge, partly because of the impact of Colonialism and partly because of the appreciation and admiration for the West.Probably there is a lack of a spark, which can light the fire of skills and compel teachers to think about their own cultural requirements and situations. Several factors should be taken into account in developing, discovering and planning the system of education, particularly English Teaching Skills.

Therefore focusing on the real aims, true objectives and factual targets of teaching, the Following two facts should be considered in order of its importance:

1. Most of the teachers cover the syllabus prescribed by the University with much difficulty.
2. Most of the students enroll themselves only to get a certificate.

These two major issues lead both the teacher and the learner to neither a true nor emotional Involvement nor a creative and critical thinking over English Teaching programmes or the System of Education.

Change the un-changed

A great saying goes "Change is the law of Nature", "Change is the biggest boon of Universe". We know that seasons change, habits change, attitudes change etc., and even every living thing would see many changes from their birth to death. So in view of this, why the education system can't change with new methodologies, new skills or new innovations? We the teachers believe that we are the builders of future generation and consider ourselves to bring change, but did we ever rethink as far as our curriculum is concerned? Have we ever worried about the quality of Education? Or have we ever observed, what kind of English we are imparting to our students? So, in view of all these factors, only the teachers can evolve a model, they themselves should re-orient with new skills, innovations and methodologies to impart the accurateknowledge of English Education to the learners.

Initiatives in the realm of innovations

A couple of decades ago, the teachers would ask students to read English newspapers regularly, listen to All India Radio and watch Television English news, but now-a-days it is not possible due to advanced technology like the short messages service of Cell phones, Emails on internet and Social networking sites like face book, twitter and blogs. Unfortunately this era force learners to modify the spelling of common words, grammar of the language and literary forms into their own innovative jargons. Such type of English users easily hide their inability and ignorance of the language behind the curtain. There is another aspect to this phenomenon; today's children are very much familiar with the English Lexicon as they were not few decades ago. Moreover the urban children get better and richer in English language than the rural students. The post globalization era also has an impact on English language.

In this globalized scenario, there is a constant need for innovation; one of the important Innovations is the "attitude of teacher in the class room" and "continuous and comprehensive Evaluation". To substantiate the above-said innovation, there is one example. Some time back few of the Indian states followed the policy of teaching English which used to begin in Class VI in the Government Schools with regional language as their medium of instruction, later the policy was changed and English was introduced in Class III and currently it is being taught from Class I.

To emphasize continuous and comprehensive evaluation system, it is very essential to design the curriculum, the learning materials and time table, and the improvement of infrastructure should be in accordance with the demand of the system. Apart from this, the foremost thing is to re-orient the teachers with new methods of teaching, by conducting monthly workshops and a good number of skill development programmes. There are many ideas for innovation but the following innovations are being considered the Best

1. Task-Based language teaching.
2. Using English Songs for productive language learning activities.
3. Anecdotes and Malapropisms for language teaching.
4. Using newspapers in the English class rooms for language development.
5. In the class room, roles of English language teachers.
6. Techniques of teaching critical thinking skills.

So out of the six important innovations, it is advisable to lay emphasis on the last factor, that is, techniques of teaching critical thinking skills. Now the question arises, what is critical thinking? The general definition of critical thinking is, thinking abilities in terms of applying, Evaluating, reasoning, conceptualizing, observing, experiencing, experimenting and interpreting. But in the light of class room teaching, the definition of critical thinking is, any conscious thinking, which is purely goal-oriented. However these two definitions are interrelated and interdependent.

Characteristics of critical thinking skills in class room

1. As we know, teaching is not a one-way but a two-way communication, where the teacher as well as the learner should share a mutual relationship.
2. The class room should be learner-centric; the most important part of the class room is that the learners' participation should be more and important in terms of involvement and contribution.
3. The aims, goals and objectives should be present in a learning context; this should help the learners to create a critical understanding.
4. Teaching critical skills should bring a permanent change in the process of learning habits of learners.
5. Every technique used and rehearsed in class room should be an approach to develop critical thinking among learners.
6. The class may be a mixed group of learners, where every learner should get a chance to exhibit his/her talents, abilities, capacities and capabilities.

Conclusion

Innovation in the teaching of English is a kind of encouragement, a motivation for all learners and also helps the learners to gear up to develop thinking and learning abilities and enable them to be more creative in their learning process. Literature indeed has a place in the languageclassroom.

For many students, literature can provide a key to motivate them to read texts in English. For all students, literature is an ideal vehicle for illustrating language use and for Introducing cultural assumptions. Our success in using literature, of course, greatly depends upon a selection of texts which will not be overtly difficult on either a linguistic or conceptual level.

References

Adamason B. and C. Davison. 2003. Innovation in English Language Teaching. Hongkong.Prospect 18(1). p. 27-41.

Krishnaswamy N., Skand Shukla and Revathi Srinivas. 2012. Innovation in English Language Teaching – p. 1-3 Orient Black Swan.

Oliphant R. Locus of Change: Notes on Innovation in English Teaching. California.English Journal 3(2). P.14-19.

O'Neil R. 1990. Currents of Change in English Language Teaching. Oxford. Oxford University Press.

समाजिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका

आदित्य प्रकाश
सहायक प्रध्यापक

सारांश

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और विकास का एक माध्यम है जो स्वयं विकास प्रक्रिया में एक आवश्यक उत्पादक सामग्री का गठन करती है, जिसे आधुनिक समाज में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है । सामाजिक परिवर्तन तब हो सकता है जब मनुष्य को परिवर्तन की आवश्यकता हो। कोई भी समाज शिक्षा के माध्यम से ही वांछित परिवर्तन ला सकता है और प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास का सामना कर सकता है। इसने सामाजिक–आर्थिक प्रगति हासिल करने, आय वितरण में सुधार, रोजगार के नए अवसर पैदा करके गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। यह वर्ग भेदभाव, लिंग पूर्वाग्रह को भी दूर करता है और समानता और न्याय को बढ़ावा देता है। निस्संदेह शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में एक बहुत ही महत्वपूर्ण संपार्श्विक कारक हो सकती है। यह ग्रह के बदलते सामाजिक–आर्थिक मुद्दों पर ज्ञान, जागरूकता, सूचना, कौशल और मूल्यों का प्रसार करके उस प्रक्रिया को तेज करने और काम करने में मदद कर सकता है। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक विकास और सुधार की मूल पद्धति है, जो व्यक्ति की स्वयं और दुनिया की समझ को समृद्ध करती है। मनुष्य के जीवन के हर पहलू में शिक्षा के माध्यम से एक अभूतपूर्व परिवर्तन देखा गया है। शिक्षा ने समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए युवा पीढ़ी के समाजीकरण के एजेंट के रूप में कार्य किया है। यह बच्चे को नए मूल्यों की ओर भी निर्देशित करता है और बुद्धि के विकास में सहायता करता है और समाज के स्वयं के परिवर्तन की क्षमता को बढ़ाता है।

भूमिका

शिक्षा का उपयोग व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है। समाज में होने वाले परिवर्तन के विश्लेषण में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसे कि यह लोगों को परिवर्तन की प्रकृति और रूप के बारे में ज्ञान प्रदान करता है, परिणामस्वरूप समाज परिवर्तन के अनुकूलन के बारे में निर्णय ले सकता है। शिक्षा एक ऐसा मजबूत हथियार है जो व्यक्ति और समुदाय दोनों में बड़े पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन लाता है। यह व्यक्तियों के दृष्टिकोण, महत्वाकांक्षाओं और दृष्टिकोण को काफी हद तक अद्यतन करता है और जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, दहेज प्रथा और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन में मदद करता है, लोगों को जन जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षित करके समाज से मिटा दिया जाता है। शिक्षा ने पुरुषों के जीवन के हर पहलू में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। फ्रांसिस जे. ब्राउन के अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को समाज की गतिविधियों में प्रभावी रूप से भाग लेने और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनाती है।

समाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिकासामाजिक परिवर्तन और सामाजिक विकास के एक एजेंट या उपकरण के रूप में शिक्षा की भूमिका को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त हैय यह राष्ट्र के विकास का एक प्रमुख घटक है। इसे सामाजिक परिवर्तन के लिए एक वाहक के रूप में देखा जाता है लेकिन इसे मख्य रूप से एक संरक्षण भूमिका आवंटित की जाती है क्योंकि इसका मुख्य कार्य युवाओं के समाजीकरण और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना है। तीव्र सामाजिक परिवर्तन के समय में राज्य की सेवाओं में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक और आर्थिक वातावरण में होने वाले कई प्रकार के परिवर्तनों की प्रतिक्रिया के रूप में होते हैं। शिक्षा का उपयोग व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है। बाल केंद्रित शिक्षा के माध्यम से छात्र परिवर्तन में अपनी भूमिका देखने में म होते हैं। सामाजिक परिवर्तन उस समाज के भीतर व्यक्तियों के सामूहिक परिवर्तन से आता है । आज यह धर्मनिरपेक्ष हो गया है। यह अब एक स्वतंत्र संस्था है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास का मार्ग तैयार करने में शिक्षा का प्रमुख योगदान रहा है। शिक्षा ने परुषों के जीवन के हर पहल् में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। फ्रांसिस जे. ब्राउन के अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावी ढंग से सक्षम बनाती समाज की गतिविधियों में भाग लेना और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देना है। सामाजिक परिवर्तन उस समाज में व्यक्तियों की संयुक्त बदलती जरूरतों से आता है। दुनिया के सभी राष्ट्र किसी न किसी रूप में शैक्षिक प्रणाली से लैस हैं. हालांकि य प्रणालियां काफी भिन्न है।

युवाओं का समाजीकरण और उचित सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना शिक्षा के मुख्य कार्यों में से एक है। यह न केवल समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने के साधन के रूप में कार्य करता है बल्कि समाज में इस तरह के बदलाव की दर को बढ़ाने और बढ़ाने के लिए भी कार्य रता है। शिक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास का रास्ता तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभा रही है। शिक्षा संस्कृति को संरक्षित करती है और उन तथ्यों का रिकॉर्ड रखती है जिनका उपयोग आने वाली पीढियों द्वारा किया जाएगा। यह उन्हें सोचने, बेहतर निर्णय लेने और अपने दृष्टिकोण में नवीन बनने में भी सक्षम बनाता है। यह समय–समय पर विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों के कारणों और प्रभावों के बारे में जनता के बीच जागरूकता पैदा करता है।

सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा विभिन्न शिक्षबिदों और दार्शनिकों ने शिक्षा को विकास की एक प्रक्रिया के रूप में देखा है. जिसमें शिक्षा के साधन कई गुना हैं। इसमें बजे के सर्वांगीण या समग्र विकास को शामिल किया गया है और इसमें अध्ययन के एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में शिक्षक शिक्षा भी शामिल है। इसके अलावा इसका सामाजिक परिवर्तन और नियंत्रण का एक उपकरण होने का मौलिक आर्थिक मूल्य है। शिक्षा समाज की नींव और उसका निर्माता दोनों है। शिक्षा न केवल वर्तमान समय में प्रासंगिक है बल्कि यह भविष्य की तेयारी का साधन भी है।

फ्रांसिस जे. ब्राउन के अनुसार ''शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाती है।'' यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को समाज की गतिविधियों में प्रभावी रूप से भाग लेने और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनाती है। एक फ्रांसीसी समाजशात्री डेविड एमिल दर्खीम ने शिक्षा की कल्पना की ''शिक्षा यवा पीड़ी का समाजीकरण है। वह आगे कहते हैं कि ''सभी शिक्षा बजे पर देखने, महसूस करने और अभिनय करने के तरीकों को थोपने का एक निरंतर प्रयास है, जिसे वह सहज रूप से नहीं पहुंचा सकता था।

दुर्खीम (1950) ने समझाया कि ''यह समग्र रूप से समाज और प्रत्येक विशेष सामाजिक परिवेश है जो उस आदर्श को निर्धारित करता है जिसे शिक्षा प्राप्त करती है। समाज तभी जीवित रह सकता है जब उसके सदस्यों में पर्याप्त मात्रा में एकरूपता होय शिक्षा शुरू से ही बच् में, सामुहिक जीवन की मांग वाली आवश्यक समानताएं तय करके इस एकरूपता को कायम रखती है और मजबूत करती है। लेकिन दूसरी ओर, निश्चित विविधता के बिना सभी सहयोग असंभव होंगे शिक्षा स्वयं विविध और विशिष्ट होने के कारण इस आवश्यक विविधता की दुढ़ता को मानती है।

समअल कोएनिग ने वर्णन किया है कि ''शिक्षा को उस प्रक्रिया के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है जिसके द्वारा एक समूह की सामाजिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है और साथ ही वह प्रक्रिया जिससे वजा सामाजिक हो जाता है, अर्थात समह के व्यवहार के नियमों को सीखता है जिसमें वह पैदा हआ है।'' स्विफ्ट (1969) ने शिक्षा को ''एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में माना है जिसके द्वारा व्यक्ति उस समूह द्वारा मांग की गई कई शारीरिक, नैतिक सामाजिक क्षमताएं प्राप्त करता है जिसमें वह पैदा होता है और जिसके भीतर उसे कार्य करना चाहिए''।

सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में शिक्षा का कार्य

सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों की रूपरेखा इस प्रकार :–

1. परिवर्तन की इच्छा पैदा करना

शिक्षा जीवन के आधुनिक तरीकों के पक्ष में लोगों के दृष्टिकोण को बदलने में मदद करती है और उन दृष्टिकोणों का निर्माण करती है जो पूर्वाग्रहों, अंधविश्वासों और पारंपरिक मान्यताओं से लड़ सकते हैं। यह बढ़ते पारंपरिक मूल्यों और धर्म और धर्मनिरपेक्षता के जाति और वर्ग की सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाओं के संबंध में छोटे परिवारों के पक्ष में दृष्टिकोण में बदलाव ला सकता है। शिक्षा सामाजिक विकास की प्रक्रियाओं के साथ–साथ कार्य करती है, जो सामाजिक परिवर्तन के अन्य रूप हैं।

शिक्षा समाज में बदलाव की इच्छा पैदा करती है, जो आने वाले किसी भी तरह के बदलाव के लिए एक पूर्वापेक्षा है। यह वंचितों, दलितों और पिछड़े लोगों को उनकी स्थिति से अवगत कराता है और उनकी स्थिति में सुधार करने की इच्छा को स्थापित करता है। शिक्षा हमारे सामाजिक ढांचे में कमजोरियों, सामाजिक अंतरालों, ज्ञान के अंतरालों की पहचान करने और जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रगति प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में बहुत मददगार हो सकती है।

2. सामाजिक परिवर्तन को अपनाना :–

जब भी कोई सामाजिक परिवर्तन होता है तो उसे अक्सर दूसरों द्वारा अपनाया जाता है, जबकि अन्य को इस परिवर्तन के साथ तालमेल बिठाना बहुत मुश्किल होता है। शिक्षा लोगों को उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अपनाने में सहायता करने का कार्य करती है। लोग किसी भी सामाजिक परिवर्तन को तब तक स्वीकार और स्वीकार करेंगे जब तक कि वे इसके लाभ और वांछनीयता के प्रति आश्वस्त नहीं हो जाते। शिक्षा लोगों को अंध विश्वास और पूर्वाग्रहों को दूर करने और नए विचारों को स्वीकार करने में मदद करती है। यह उन मूल्यों को स्थापित करने में मदद करता है जो सामाजिक परिवर्तन के विश्लेषण के लिए एक शर्त के रूप में कार्य करते हैं।

3. सामाजिक परिवर्तन में नेतृत्व

यदि लोकतंत्र के अनुकूल सामाजिक परिवर्तन लाना है तो भारत में शिक्षा प्रत्येक स्तर पर उपयुक्त नेतृत्व करने में सक्षम होनी चाहिए। प्रतिभावान नेता शिक्षा से ही पैदा हो सकते हैं। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और अन्य उच्च शिक्षित और प्रबुद्ध भारतीयों ने सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए जागरूक स्तर पर प्रयास किए। हमारे लोगों की व्यापक निरक्षरता, अज्ञानता, खराब स्वास्थ्य और गरीबी से लड़ने और सामाजिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए महात्मा गांधी द्वारा बुनियादी शिक्षा डिजाइन की गई ।

4. लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थिर करना

शिक्षा बेहतर जीवन के प्रति लोकतांत्रिक दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करने में मदद कर सकता है। स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय, सहिष्णुता, आपसी सम्मान, भाईचारा और शांति की प्रक्रिया में विश्वास जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को स्वतंत्र भारत में शिक्षा के माध्यम से स्थिर किया गया है। ये मूल्य सामाजिक परिवर्तन लाने में उपयोगी हैं।

5. संस्कृतियों का संचरण

एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में राष्ट्रीय संस्कृति के संचरण कोसुगम बनाने की क्षमता के माध्यम से, यह शिक्षा की एक सतत प्रक्रिया है जो समाज में स्थिरता और निरंतरता प्रदान करती है। यही नहीं शिक्षा ने समाज को आवश्यक और वांछनीय सामाजिक सुधारों को अपनाने के लिए भी तैयार किया है। इस प्रकार शिक्षा सभी सामाजिक परिवर्तन का निर्माता, निर्माता और निदेशक है। संक्षेप में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्ति को मजबूत करने, स्थापित करने और बनाने के लिए एक स्टेबलाइजर है।

6. राष्ट्रीय एकीकरण

राष्ट्रीय एकता लाने में शिक्षा बहुत उपयोगी साबित हो सकती है। जब समाज के विभिन्न समूहों और वर्गों के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है तो शिक्षा उन विचारों और भावनाओं की वकालत करके उन संघर्षों को हल करने का प्रयास करती है जो विविधता में एकता लाते हैं और समाज में लोगों के सभी विभिन्न समूहों के एकीकरण को प्राप्त करते हैं। शिक्षा का पवित्र मिशन लोगों को जातिगत प्रतिद्वंद्विता, सांप्रदायिक झगड़ों, भाषाई संघर्षों और क्षेत्रीय कलहों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय गौरव के पोषित आदर्शों को प्राप्त करने का प्रयास करना है।

7. राष्ट्रीय विकास

स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और समान अवसर के मूल्योंपर आधारित सामाजिक व्यवस्था बनाने में तेजी से आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति प्राप्त करने में शिक्षा महत्वपूर्ण कारक है। यह अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के लिए भौतिक और मानव संसाधन विकसित करता है और अंततः समाज और राष्ट्र के विकास में वांछित परिवर्तन लाता है।

निष्कर्ष

शिक्षा सोच, विचारधारा, संस्कृति और अंतःक्रिया में परिवर्तन को प्रभावित करती है और यही समाज को गतिशील, जीवंत और समृद्ध बनाती है। शिक्षा भारत में सामाजिक परिवर्तन के प्रभावशाली साधनों में से एक बन गई है। इसने विकास और परिवर्तन के लिए लोगों की आकांक्षाओं को प्रेरित किया है। इस प्रकार आधुनिक जटिल राष्ट्रीय समाजों में, शिक्षा को न तो सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने वाली एक नियंत्रक शक्ति के रूप में माना जा सकता है, न ही इसे सामाजिक परिवर्तन के एजेंट के रूप में देखा जा सकता है। इसे केवल समाज में अधिक व्यापक शक्ति रखने वाली शक्तियों द्वारा तय किए गए सामाजिक परिवर्तन लाने में एक सहकारी शक्ति के रूप में माना जा सकता है। समाज को सही दिशा में बदलना है, तो शिक्षा प्रणाली पर ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि शिक्षा एक ही समय में सामाजिक परिवर्तन का प्राणी और निर्माता है। शिक्षा को इस तरह से नियोजित किया जाना चाहिए जो समग्र रूप से लोगों की जरूरतों और आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए हो । समाज में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान न केवल अपने नागरिकों के जीवन स्तर को ऊपर उठाना है बल्कि उन्हें बेहतर नागरिक बनने में सक्षम बनाना है। इसलिए शिक्षा के बिना समाज आगे नहीं बढ़ सकता है और इसके विपरीत। जैसा कि दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने तारामंडल जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में एक संबोधन के दौरान कहा था, ''शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं। ''

संदर्भ :–

1. बाशा चंद पी। सामाजिक परिवर्तन शिक्षा की भूमिका। उन्नत शैक्षिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2017य2(5):236–2401
2. चक्रवर्ती एस, चक्रवर्ती बी, दहिया वीएस, तिमाजो एल। शिक्षा तकनीकी विकास की मदद से सामाजिक परिवर्तन और शिक्षण – सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने के साधन के रूप में। 2017 1
3. https://www.researchgate.net/publication/325143953_Education_as_an_instrument_of_social_change_and_enhancing_teaching-learning_process_with_the _help _of _ technological_development
4. अग्रवाल एसपी, अग्रवाल जेसी । सामाजिक मुद्दों पर नेहरू कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, भारत, 19891
5. अग्रवाल ए, अमृता एस एजुकेशन इन इंडियाः चुनौतियां और सामाजिक परिवर्तन लाने में इसकी भूमिका द्य इंटरडिसिप्लिनरी एंड मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज के इंटरनेशनल जर्नल (आईजेआईएमएस)। 2014य1(10):58–611
6. बावा बी. भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन।
7. https://www.yourarticlelibrary.com/education/education-and-social-change-in-india/76837
8. चंद जे. सोशियोलॉजिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन द्य शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली, भारत, 20101
9. मिश्रा एसके । सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में शिक्षा। प्रबंधन समाजशास्त्र और मानवता के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल । 2014य5(8):8–12
10. पाठक आर. पी. शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य । अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (पी)। लिमिटेड, नई दिल्ली, भारत, 20071

AWARENESS ABOUT INCLUSIVE EDUCATION AMONG ELEMENTARY SCHOOL TEACHER

Hasan Abad
Asst. Prof.

Inclusive is a process of addressing and responding to the diverse needs of all learners by increasing participation in learning and reducing exclusion within and from the education. This mean all the students have the right to a quality education that cater, to the extent possible, to their individual needs. To attain this goal there should be full awareness about Inclusive education among the teacher. A sample of 128 elementary school teacher had been selected from rural and urban government elementary school. A self prepared questionnaire was used to collect data about their awareness level and analysis had been done.

Introduction

Inclusive education means including children with disabilities in regular classrooms that have been designed for children without disabilities (Kugelmass, 2004). It refers to an education system that accommodates all children regardless of their physical, intellectual, social, emotional, linguistic or other conditions. The range of challenges confronting the school system while including children with diverse abilities and from diverse backgrounds have to be met by creating child centered pedagogy capable of successfully educating all children. It leads to the development of social skills and better social interactions because learners are exposed to real environment in which they have to interact with other learners each one having unique characteristics, interests and abilities. The non - disabled peers adopt positive attitudes and actions towards learners with disabilities as a result of studying together in an inclusive classroom. The inevitable presence of differences among students mean that school needs to become more comfortable with building inclusive communities that value diversity.

In Barton's words , " difference is now to be viewed as a challenge , a means of generating change and an encouragement for people to question unfounded generalizations , prejudice and discrimination " (Barton , 1997) . So a reconstruction in school organization and curriculum is required so that the school becomes a supportive community to educate all children. This changing paradigm assumes a different set of beliefs and assumptions that demand different practices in schools (Carrington, 1999). Inclusion involves all students having the right to be truly included, to actively participate with others in the learning experiences provided, to be valued as the members of school community and to have access to a system that delivers a quality education that is best suited to their unique competencies, skills and attributes. (Ainscow 2000 , Farrell , 2000 ; Fisher , et al . , 2002) . Inclusive education is about listening to the voices in a school community and empowering all members to develop an approach to schooling that is committed to identifying and dismantling actual and potential sources of exclusion (Slee, 2003). Moreover, it is about philosophy of acceptance where all people are valued and treated with respect. Indeed, Ballard (1995) argues that inclusion is unending, so that there is no such thing as an inclusive school. The concept of inclusion has developed from a long history of educational innovation and represents school improvements on many levels for all students (Skrtic, et al., 1996). The several theories dealing with the democratic community provide opportunities to rethink how one can improve acceptance of differences and create communities inclusive of all members of society. An inclusive learning society should foster collaboration, problem solving, self - directed learning and critical discourse (Skrtic, et al., 1996). Stereotypic differences create divisions and status systems that

detract from the democratic nature of society and the dignity of the individual . Communities in inclusive schools cooperate and collaborate for the common good of all (Apple and Beane , 1995) . In inclusive schools difference is recognized , respected and represented (Slee , 2001) . In essence , inclusive education is about the ' politics of representation ' (Slee , 2001) or how students can be given a voice in the construction of their own unique identities . The inclusive schools demand reconstructed educational thinking and practice in reguar schools for the benefit of all students (Slee , 2001) . This involves reconstructing and realigning the whole system and the entire component parts so that " assessment , curriculum , instruction , professional development , program evaluation and accountability ... work synergistically to ensure meaningful and sustained school improvement " (Smith , 1998) .

Review of Literature

Selvakani (2000) conducted a study entitled “Creating Awareness on Integrated Education of the Disabled Children to the Regular Teachers " . The objectives of the study was to organize an awareness programme for further school teachers and to develop knowledge about the role of teachers to meet the special needs of the disabled children and to evaluate the imparted knowledge gained by the school teachers . The result revealed that knowledge about the role of teachers to meet the all needs of all children was improved by organizing awareness program and developed awareness programme was found to be effective. Further Brent et al. (2003) discussed the importance of teachers ' self - awareness when they deal with students with emotional and behavioral disorders. This article identified questions and strategies to help teachers to become more aware regarding their interaction with students of this kind . It was found that the overall attitude of the teacher and the classroom climate affects students much more than most other techniques or interactions. Reddy and Sujathamalini (2005) examined the " Awareness Attitude and Competencies Required for School Teachers to Deal Children with Disabilities for Promotion of Inclusive Education . " Sample comprised of 527 teachers working at primary level in 76 normal schools of Tamilnadu. The results revealed that in most of the disability aspects in children, the school teachers possess only moderate and low awareness and attitude with moderate competency: higher the awareness better will be the attitude and competency. Based on the results of the study, the researchers suggest the need to sensitize the teacher's awareness, attitude and competency.

Mumthas (2008) conducted a study “Are the Prospective Teachers at Secondary Level Aware about Inclusive Education? " A sample of 300 prospective teachers at secondary level from various teacher training institutions of Malappuram and Calicut districts were selected for the study. It is found that prospective teachers do not have adequate awareness about Inclusive Education and it does not differ significantly irrespective of their gender, locale of Institution and type of management of institution. The mean value of prospective teachers in science occupies first position followed by prospective teachers in commerce, social science and language. The study suggests that adequate training programs on Inclusive Education should be given to prospective teachers for successful implementation of Inclusive Education.

Need and Significance of the Study

Inclusive education means including children with disabilities in regular classrooms that have been designed for children without disabilities. It refers to an education system that accommodates all children regardless of their physical , intellectual , social , emotional , linguistic or other conditions and for that the teacher must be aware of the basic concept of the Inclusive education . Elementary Education is the stepping stone for any other education. So elementary school teachers ' awareness about inclusive education is the key factor for its success .Hence , there is a need to study the level of awareness about Inclusive Education among elementary school teachers.

Objectives of the Study

1. To study the level of awareness regarding Inclusive education among Elementary school teachers.
2. To compare the level of awareness regarding Inclusive education between rural and urban elementary school teachers.
3. To compare the level of awareness regarding Inclusive education between more and less experienced elementary school teachers.

Hypotheses

1. There is general Inclusive Education awareness among elementary school teachers.
2. There is no significant difference between rural and urban elementary school teachers ' awareness levels about Inclusive education.
3. There is no significant difference between more (3+ years) and less (3 - years) experienced elementary school teachers ' awareness levels about Inclusive education .

Methodology

Method

Researcher study .implied quantative approach and used survey method for collecting the data for this present study.

Sample and Sampling Techniques

A sample of 128 elementary general school teachers had been selected through random samplig techniques ; 54 teachers were from rural schools and 74 teachers were from urban schools . All teachers were selected from government schools of Patiala district of Punjab .

Tools used

The tool of research for this study was a self prepared questionnaire having 34 items . The questions were related to the different concepts of Inclusive education . There were questions to analyze the awareness about different aspects of inclusive education like meaning , scope , objectives , different type of disabilities , innovative techniques , class room settings , teacher ; roles , curriculum etc. Few items dealt with the origin , history , rules & regulations about Inclusive education .

Analysis and Interpretation

It was found that the perent percentage score in case of all variables was more than 50 percent , hence it can be concluded that the respondents possessed at least average Inclusive education awareness . So , hypothesis I was accepted . The t - ratio value of urban and rural elementary school teachers ' was 2.90 , which is greater than the table value (2.58) at 0.01 level of significance . Therefore it is significant at 0.01 level . Hence , the hypothesis - 2 i.e. there is no significant difference between rural and urban elementary school teachers ' awareness levels about Inclusive education is rejected . Results indicate that there exists a significant difference in the awareness levels of rural and urban teachers . This might be due to the fact that urban teachers and schools are much more attached to the recent development in the field via media , newspapers , internet and other mediums . The t - ratio value of more and less experienced elementary school teachers ' awareness level was (1.23) at 0.05 level . Hence , the hypothesis i.e. there is no significant difference between more (3 + years) and less (3 - years) experienced elementary school teachers ' awareness level about Inclusive education is accepted .

Conclusion and Recommendations

This study has found that the teachers possess average level of awareness , yet there is a difference between rural and urban teachers . Inclusive education should be started at pre - school level ; home training programs for preparing the young disabled and their teachers for regular education settings . Training should involve local resource persons , such as disabled people . Support from a resource persons and special educator would also assist regular teachers in planning and teaching of children with special needs ; this would also enable them to appreciate their roles in creating public awareness , it is also necessary to organize some awareness programs at different times , training programs , workshops , seminars &

conferences etc should be made available to improve the inclusion competencies among teachers , so that Inclusive Education become a successful process .

References

Ainscow , M. (1997) . Towards inclusive Schooling , British Journal of Special Education , 24 , 3-6 .

Ainscow , M. (2000) . The next step for special education , British Journal of Special Education , 27,76-80

Apple , M.W. and Beane , J.A. (1995) . Democratic Schools .Alexandria , VA : Association for Supervision and Curriculum Development.

Ballard , K. (1995) . Inclusion paradignis , power and participation , towards Inclusive Schools , London : David Fulton Publishers . pp . 1-14 .

Barton , L. (1997) . Inclusive education : romantic , subversive or realistic ? International Journal of Inclusive Education , I (3) , 231-242 .

Brent , G.R & Margrey , J. S. (2003) . Importance of Teacher self Awareness in working with students of emotional and behavioral disorders . Journal of Teaching Exceptional Children , 36 (2) , 8-12 .

Farrell , P. (2000) . The impact of research on developments in inclusive education . International Journal of Inclusive Education , 4 , 153-162 .

Fisher , D. , V. Roach & N. Frey . (2002) . Examining the general programmatic benefits of inclusive schools . International Journal of Inclusive Education , 6 , 63-78.

Kugelmass , J. (2004) . What is the culture of inclusion ? EENET - Enabling Education .

Skrtic , T.M. , Sailor , W. , & Gee . K. (1996) . Voice , collaboration and inclusion , Remedial and Special Education . 17 (3) , 142-157 .

Slee , R. (2001) . Inclusion in practice : Does practice make perfect ? Educational Review .53 113-123

Smith , A. (1998) . Crossing borders : learning from inclusion and restructuring research in Sweden , Denmark , Norway and the United States . International Journal of Educational Research .29 , 161-166 .

प्राथमिक स्तर के प्रभावी अधिगम में अभिभावकों एवं विद्यालय की सहभागिता

प्रियंका शर्मा
सहायक प्राध्यापिका

बालक किसी भी परिवार , समाज एंव राष्ट्र की एक अनमोल धरोहर हैं क्योंकि बच्चें ही समाज या राष्ट्र का भविष्य होते हैं। कोठरी कमीशन (1964–66) ने इस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसके यहाँ संचालित हो रहे , कक्षा कक्ष से होता है। परिणामस्वरूप समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण के लिए बच्चे का उचित दिशा में विकास करना परिवार , विद्यालय, समाज एवं राष्ट्र का एक महत्वणूर्ण उत्तर दायित्व है। इस प्रकार ये सभी हितधारक बच्चे के विकास में काफी महत्वणूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। अगर इनमें से कोई भी हितधारक अपने उत्तरदायित्व का उचित प्रकार से निर्वहन में असफल या अक्षम हो जाता है, तो कही नं कही बच्चे के विकास में रूकावटो आती हैं

अतः इन सभी हितधारकों से अपेक्षा की जाती हैं कि ये बच्चे के सर्वांगीण विकास में अपनी सक्रिया भूमिका निभाएँ जिसका प्रारंभ प्राथमिक स्तर से ही होता है। बाल्यकाल में बच्चे बड़ी तीव्रता से सीखते एंव समझते है अर्थात यह समय अधिगम का एक महत्वपूर्ण काल होता है। अगर इस समय बच्चे को अधिगम विकासित करने में यदि उसके अभिभवकों व अध्यापको का सहयोग मिल जाता है तो बच्चे के सीखने की गति सहज और सरल हो जाती है। यह सहयोग जितना दृढ होगा, अधिगम भी उतना ही तीव्र एवं दृढ़ होता जाता है। यदि इस समय उसे अभिभावकों एक शिक्षकों का सहयोग मिल जाता है तो उसका विकास उचित प्रकार से होता है । अभिभावकों के विद्यालीय गतिविधियों में सहभाग के संबंध में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में कहा गया है कि ''गृहकार्य ऐसा न हो कि अभिभावक स्कूल के काम का दोहराव ही करवाते रहें। इसमें अलग तरह की गतिविधियाँ बच्चों के करने के लिए हों, जो वे स्वंय कर पाएँ या अपने अभिभावकों की मदद से कर पाएँ। इससे अभिभावकों को यह बेहतर रूप से समझने को मौका मिलेगा कि उनका बच्चाा स्कूल में क्या सीख रहा है और बच्चों को खोजबीन करने में तथा स्कूल के बाहर की दुनिया को सीखने का स्त्रोत मानने में शुरूआती प्रोत्साहन मिलेगा।'' बाल्यकाल में बच्चें की अनेक जिज्ञासाएँ होती है, जिसको पूर्ण करने में अभिभावकों एंव शिक्षको की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है, यही समय औपचारिक शिक्षा प्राप्ति के प्राथमिक स्तर का होता है। परिणामस्वरूप बच्चे के समाजीकरण एवं ज्ञान प्राप्ति की सभी समस्याएँ ,शिक्षा के प्राथमिक स्तर से जुड़ी होती है। मनोवैज्ञानिको का यह भी मानना है कि इस स्तर पर बच्चों का मानसिक विकास लगभग 90 प्रतिशत तक हो जाता हैं। इसलिए शिक्षा के प्राथमिक स्तर में , बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में अधिक तीव्रता होती है । साथ ही यह बच्चो के जीवन का वह समय है जिसमें बच्चे अपनी बहुत–सी जिज्ञासाओं को शांत करने की हर संभव चेष्टा करता है । ऐसे महत्वपूर्ण समय में यदि अध्यापका के साथ –साथ अभिभावकों का बच्चे के सीखने की प्रक्रिया मे सहयोग मिलता है, तो यह समय बच्चे को सीखने का एक स्वर्ण– काल बन जाता है बच्चे अपनी दिनचर्या के कुछ घंटों को छोड़कर, सारा समय अपने धर या परिरवार में ही व्यतीत करते हैं इसलिए बच्चे के सर्वागीण विकास में अभिभावकों की हिस्सेदार काफी अहम हो जाती है।

बालक के व्यवहार में उचित परिर्वतन करना

बाल्यकाल में बच्चा काफी समय अपने घर या परिवार में व्यतीत करता है। वह अपने माता–पिता के संपर्क मे अधिक रहता है, जिससे माता–पिता उसके भावात्मक, क्रियात्मक एवं संज्ञानात्मक पक्षों का अवलोकन करके, इसमें अपेक्षित सुधार कर सकते हैं। अभिभावक ही बच्चे के 'सामाजीकरण ' के सर्वप्रथम शिक्षक होते हैं । 'समाजीकरण 'बच्चे का वह व्यवहार होता है जो उसे परिवार , समाज या राष्ट्र में सुसमायोजित करने में सहायक होता है। इसके साथ ही अभिभावक बच्चे के सर्वप्रथम शिक्षक भी होते है क्योंकिसबसे पहल बच्चा परिवार से ही अनोपचारिक ढंग से शिक्षा ग्रहण करता है । उदाहरण रूवरूप बच्चे प्रारंभ में अपनी चीजों को दूसरो के साि नही बॉटते है, किंतु धीरे –धीरे परिवार क सदस्यों के द्वारा समझाए जाने पर अपनी चीजो के अन्यों के साथ बाँटनों लगते हैं। क्योकि उसे यह अनुभव होने लगता है कि यदि वह अपनी चीजों के अन्यों के साथ बाँटेगा तो वे भी अपनी चीजो को उसके साथ बाँटंगे। प्रारंभ में यह स्वार्थपूर्ण लगता है किंतु कालांतर मे यह बच्चे के 'समाजीकरण'में काफी सहायक होता है। यद्यपि ये ज्ञान या शिक्षा बच्चे की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से सवंर्धित नही करता है परंतु यह बच्चे के भावी जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी होता है। ऐसे महत्वपूर्ण समय में यदि माता–पिता बच्चे के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन करने में सक्रिया सहभाग लेते हैं तो बच्चे के व्यवहार में तीव्रता से अपनेक्षित परिवर्तन होता हैं। यह परिवर्तन बच्चे के अधिगम को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित एवं सवंर्धित करता है । इसलिए यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि अभिभावक बच्चे के अधिगम मे सक्रिय सहभाग लें। इसके लिए वे अभिभावक बच्चे पर केवल निगरानी करने अपने कर्तव्यों को पूर्ण न समझे अपितु स्वंय भी अपेक्षि्त व्यवहार को अपने व्यवहार में उतारने

का प्रसास करें। उदाहरणस्वरूप यदि अभिभावक यह चाहते है कि बच्चे सब बोले तो अभिभावक स्वंय भी सच बोले अन्यथा बच्चे कभी सच बोलेंगे ही नहीं।

घर **में स**कारात्मक **वा**तावरण **का नि**र्माण

घर ही बच्चे की सर्वप्रथम पाठशाला होती है। बच्चे के विकास पर भौतिक संसाधनों से ज्यादा ,घर या परिवार के वातावरण का प्रभाव होता है । प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एरिक्सन ने अपने सिद्धांत में जीवन के विकास को ' आठ चारणों में विभाजित किया है। इनका मानना है कि समाजीकरण विकास के प्रत्येक चरण की अपनी ही विशेाषताएँ होती हैं। मनोविद् एरिक्सन ने बाल्याकाल में होने वाले' सामाजिकरण विकास' को दो चरण में विभाजित किया है–

पहल **ब**नाम **अ**पराध **बो**धः– इस अवस्था में बच्चे बहतु प्रश्न पूछते हैं। क्योकि इस अवस्था मे बच्चों को हर चीज जानने की जिज्ञासा होती है। यदि इन प्रश्नों को वे सक्रियता के साथ स्वीकार करके उत्तर देते है तो बच्चे सृजनशीलता की ओर बढते हैं। अन्यथा जब उसकों उसके प्रश्नों के सही उत्तर नही मिलता है तो वे चुपचाप , निष्क्रिय एवं डरे सहमें से हो जाते हैं। इसीलिए अभिभावकों को बच्चे के सकारात्मक विकास के लिए उनके प्रश्नों को तत्परता के साथ स्वीकार करते ही उत्तर देना चाहिए। साथ ही उन्हें और भी प्रश्नों को पूछने के लिए अभिप्रेरित करना चाहिए।

परिश्रम **ब**नाम **ही**नभाव :– इस स्टेज में बच्चे औपचारिक रूप से लिखना एवं पढना सीखते हैं। इस चरण में बच्चे जो भी पढ़ते है उसको उसको दिखाना भी चाहते हैं ताकि उन्हें परिवार के सदस्यों,अपने मि़त्रों एवं अपने शिक्षको से सामाजिक स्वीकृति मिले,। प्रायः घरो में देखा जाता है कि जब बच्चे कोई काम करते है तो अभिभावको या शिक्षको को दिखाना चाहते हैं। कई बार तो वह तब तक दिखाता रहता है जब तक अभिभावकों की स्वीकृति नही मिल जाती है।इस स्वीकृति से उसमे ंआत्मविश्वास विकसित होता है एवं वह भी कार्य करने के लिए अभिप्रेरित होता है । किंतु जब उसके कार्यो को अभिभावकों द्वारा स्वीकृति नही मिलती है तो उसमे ंहीनता की भावना का विकास होने लगता है। जो उसके आत्मविश्वास को धीरे–धीरे समाप्त कर देता है। अतः अभिभावकों को घर में ऐसा वातावरा निर्मित करना चाहिए जिससे उनके आत्मविश्वास का विकास हो, जिससे उसके अधिगम में भी सहायता हो सके। अतः घर का वातावरण अगर बाल्याकाल के प्रारंभ से ही सकारात्मक एवं संवादात्मक होता है तो बच्चे मे आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। इसी आत्मविश्वास के कारण के अधिगम करने में अपनी रूचि दिखाते हैं अन्यथा अविश्वास से भरा हुआ घर का वातावरा, बच्चे को अधिगम प्राप्ति में अपनी अरूचि दिखाने के लिए अभिप्रेरित करता है। घर का वातावरण ही बच्चे के भविष्य को निर्धारित करती है। बच्चे के सर्वागीण विकास में सहायक विकास एक बहुमुखी एंव सतत चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत चलती रहती हैं। साथ ही यो व्यक्ति के किसी एक पक्ष से नही जुड़ी होती है। बच्चे के विकास के दोनो प्रकार के अभिकरण, अभिभावक (अनौपचारिक अभिकरण) एवं विद्यालय (औपचारिक अभिकरण) का उद्येश्य बच्चे के किसी एक पक्ष का विकास करने के बजाए उसका सर्वागीण विकास करना है। बच्चे के सर्वार्गीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि अभिभावक एवं बच्चे के मध्य संवादात्मक संबधं हो, जिससे वे अपनी समास्याएँ एवं आवश्यकताएॅं दोनो ही निसंकोच होकर बता सकें ंसंवादात्मक संबध बच्चे को अधिगम प्राप्ति के लिए भी अभिप्रेरित करता है संवादात्मक संबंध न हो तो यह बच्चे के विकास को काफी हद तक प्रभावित करता है। बच्चे के अधिगम प्राप्ति के लिए अभिभावकों का सक्रिय एवं सजग प्रयास आवश्यक है, किंतु यह भी आवश्यक है कि अभिभावकों का पारस्परिक संबंध भी मधुर हो, तभी वे बच्चे क अधिगम प्राप्ति में अपना सहयोग दे सकते हैं। माता–पिता एवं शिक्षकों की सहभागिता ही बच्चे का सर्वागीण विकास (बौद्धिक,शारीकिर मानसिक संवेगात्मक एवं सामाजिक) एवं उसकी अंतर्निहित शक्त्यिों को सही दिशा मे विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

अभिभावकों **द्वा**रा **ब**च्चे **को प्रो**त्साहन :–

अगर सामर्थ्य किसी कार्य के संपादन में गाड़ी के समान है, तो प्रोत्साहन उस गाड़ी के ईधन के समान है। जिस प्रकार गाड़ी की उपयोगिता, इंधन के बगैर नहीं हो सकती है, वैसे ही प्रोत्साहन के बिना , सामर्थ्य का प्रयोग उस सीमा तक नहीं हो सकता । जिस सीमा तक उकसा प्रयोग संभव है। इसको एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है, जैसे– कई बच्चे पेंटिंग या चित्र बनाने में रूचि रखते हैं तो वह प्रारंभ मे जिन चित्रों को बनाते हैं। वे दिखने में सुंदर नही होते , यदि अभिभावक उन चि़त्रों पर भी उसे सुंदर एवं बहुत बढ़िया इत्यादि शब्दों से प्रोत्साहित कर देते हैं तो वे और उत्साह से चित्रों को बनाते हैं, धीरे–धीरे वे सुंदर चित्र बनाने लगते हैं। इस प्रकार प्रोत्साहन ने उसकी पेंटिंग की प्रतिभा को अधिक निखार दिया यही बात बाल्याकाल में बच्चे के अधिगम की प्राप्ति में भी हैं उसमें अधिगम या सीखने का पर्याप्त समार्थ्य है, बस उस सामर्थ्य को ऊर्जा देने के लिए अभिभावकों के प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है ,जैसे ही ये प्रोत्साहन प्राप्त हो तो धीरे–धीरे उसकी उपलब्धि सीमा में विस्तार प्राप्त होता है तो धीरे –धीरे उसकी उपलब्धि सीमा में विस्तार होने लगता है। प्रोत्साहन से बच्चे की उपलब्धियों में विस्तार हेाता है किंतु यहाँ यह भी ध्यातव्य रहे कि हम उन्हें प्रोत्साहन के नाम पर कही प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ के लिए तो नही तैयार कर रहे हैं। इसलिए प्रोत्साहन देते समय क्या उदाहरण देने है इस पर गहनता से विचार किया जाना चाहिए ताकि हम बच्चे के अभिप्रेरित करें, न कि सिर्फ प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ के लिए तैयार करें।

शौक्षणिक **ग**तिविधियों **में स**हायक

बच्चे के विकास के अनेक पक्ष है, जैसे–बौद्धिक, शारीरिक मानसिक संवेगात्मक एवं सामाजिमक इत्यादि । बच्चे के बहुमुखी विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि इन सभी पक्षो का उचित प्रकार से विकास होना चाहिए। अगर इनमें से किसी पक्ष का विकास भी अवरूद्ध हो जाता है तो अन्य विकसित पक्षो की उपयोगिता कम हो जाती

है अतः परमावश्यक है कि बच्चे के सभी पक्षों का विकास सही प्रकार से हो । इसी को ध्याान मे रख कर विद्यालयों मे शैक्षणिक गतिविधियों का आयेाजन किया जाता है। यद्यपि इनका आयोजन विद्यालय में होता है, जिसे शिक्षक या अन्य विद्यालयलयी सदस्य आयेाजित करते है किंतु यह भी देखने में आता है कि बच्चे इन शौक्षणिक गतिविधियों मे सहभाग लेने मे कम रूचि प्रदर्शित करते हैं। इस समय अभिभावाकों का प्रोत्साहन बच्चो के सहभाग लेने हेतु अभिप्रेरित करना हैं। शैक्षणिक गतिवधियो को सृजनात्मक तरीके से पूरा करने में माता –पिता के सहयोग का महत्पूर्ण योगदान होता है । समय–समय पर विद्यालय कें संपर्क में आकर बच्चे की स्थिति को जानना अर्थात बच्चे के कौन –कौन से पक्ष मजबूत हैं? तथा कौन–कौन से पक्ष पर अभी कार्य करना बाकी है? इस तरह माता –पिता बच्चे की शौक्षणिक गतिविधि पर ध्यान, देकर कमजोर पक्षों को मजबूत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बच्चे एंव अभिभावकों के मध्य संवादात्मक संबंध

संवाद के विषय में एक बड़ी अच्छी बात कही जाती है कि यह बड़ी से बड़ी समस्याओं के समाधान मं संजीवनी बूटी की तरह होता है । संवाद ही वह मार्ग है जिस पर चल कर बड़ी से बड़ी परेशानी से निपट सकते हैं। यही बात बाल्याकाल में बच्चे के अधिगम के साथ भी जुड़ी होती है । बाल्याकाल में बच्चे की बहुत सारी परेशानियाँ होती है। जो उसके अधिगम प्राप्ति मे बाधा उत्पन्न कर रही होती है। जिन्हे वह अपने अभिभावकों को बताना चाहता है। कितु बहुत बार अभिभवकों एवं बच्चे के मध्य संवाद का अभाव होता है जिसके कारण वह अपनी परेशानियाँ अपने अभिभावक के साथ साझाा करने में संकोच करता है। इसका दुष्परिणाम यह होता है उसकी ये परेशानियाँ उसके अधिगम पर बुरा प्रभाव डालती हैं। अतः यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि अभिभवक, उनके साथ सवांदात्मक संबंध बनाएँ जिससे बच्चे अपनी परेशानियों को अभिभावक के साथ साझा करें एंव उनका समाधान किया जा सके। इस प्राकर यदि ध्यानपूर्वक देखे तो पाएँगे कि अभिभवक बच्चे के अधिगम प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। उसे ज्यादा मार्गनिर्देशन की आवश्यकता होती है जो उसे अपने अभिभावकों से अच्छा कोई दूसरा नही दे सकता है।

प्राथमिक स्तर पर बच्चे प्रभावी अधिगम में विद्यालय की सहभागिता

बच्चे का विद्यालय उसकी प्रथम पाठशाला है। विद्यालय का स्थान बच्चे के सर्वागीण विकास में काफी महत्वपूर्ण है। जिस तरह बच्चे के अधिगम में अभिभावक की सहभागिता महत्वपूर्ण होती है। उसी प्रकार बच्चे क सर्वागीण विकास में या प्रभावशील अधिगम में शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।

इसे निम्न बिन्दुओं के द्वारा समझा जा सकता है।:– **बाल मनोविज्ञान का प्रयोग**

शिक्षक बाल विकास मनोविज्ञान के आधार पर बच्चे की विभिन्न प्रकार की रूचियों को जनता है तथा उन रूचियों के आधार पर अपनी शिक्षण विधियों में अपेक्षित परिवर्तन करता है। किसी भी कक्षा में अलग–अलग रूचि वाले छात्र होते हैं जैसें –एक ही कक्षा में कुछ विद्यार्थी खेलने में रूचि रखते है, तो कुछ नेतृत्व करने में एक कुछ भाषण या लेखन में । इस परिस्थिति में एक शिक्षक को चाहिए कि अपने शिक्षण में इन सभी की रूचियों के ध्यान में रखकर शिक्षण का आयोजन करे, ताकि सभी विद्यार्थी कक्षा में सक्रिया रूप से सहभाग ले सकें। इस तरह शिक्षक बच्चे के अधिगम के भार को कम करके , उसे रूचिपूर्ण बनाने मे सहायक होता है।

शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में:– शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का उचित प्रकार से ज्ञान होने` कारण वह बच्चे के साथ प्रगाढ़ संबंध स्थापित कर लेता है एवं उस सबंध के आधार पर बच्चे की सभी आवश्यकताओं एवं समस्याओं केा ध्यान में रखकर उनका मार्गदर्शन करता है। जब बच्चे की सभी प्रकार की समस्यओं का निवारण हो जाता है तो वह सही दिशा में अधिगम के लिए अभिप्रेरित होता है एंव सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से प्रतिभगिता करता है। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे के व्यवहार में उचित एवं स्थायी परिर्वतन होता है।

शिक्षकों द्वारा बच्चे के परिवार के साथ संवाद करना

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया है जो विद्यालय एंव परवार दोनो के सहयोग से ही प्रभवशील तरीके से ही संचालित हो सकती है। शिक्षक एव माता पिता के मध्य संवादात्मक संबंध अत्यंक आवश्यक हो जाता है क्योकि दोनो ही बच्चेके विकास को बहुत अच्छी तहर से जानते हैं। दोनो के पास बच्चे की विशेषेताओं एवं कमियो के विषय की बेहतर समझ है,जिसको आधार बनाकर बच्चे के अधिगम को सही दिशा में निर्देशित किया जा सकता है।

विद्यालयों द्वारा 'बाल मेला' का आयोजन

समय–समय पर विद्यालयों द्वारा मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन कायक्रमों को आयोजित करना चाहिए। इसमें विभिन्ना प्रकार की शैक्षिणक गतिविधियों को भी शामिल करना चाहिए। इससे बच्चो की सक्रियता को आर बढ़ाया जा सकता है,जैसे – नाचना, गाना, चित्र बनाना एवं खेल तथा अभिभावको को भी खुली चर्चा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष:–

यह बात अपने आप में स्पष्ट है कि प्रशिक्षित शिक्षक बाल मनोविज्ञान के आधार पर बच्च्चो के साथ एक सही सामंजस्य बैठाकर उनके अधिगम एवं विकास में सहयोगी सिद्ध होते हैं। एक अच्छा अभिभावक बच्चे की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करने के लिए उसे प्रेरित करता है। तथ हर संभव प्रोत्साहन प्रदान करता है। अतः यह स्पष्ट है कि बच्चे के सार्वभौमिक विकास के लिए दोनो पक्षो का समान योगदान होता है।

पेंटिंग का महत्त्व

आवृति चन्द्रश
सहायक प्राध्यापिका

पेंटिंग का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व पूर्ण स्थान है। चित्रों का महत्त्व ऊर्जा को सार्वभौमिक जीवन शक्ति पर आधारित है। वस्तु को अपने घर या कार्यस्थल में अपने अनुकूल दिशाओं में चित्रों के उचित स्थान के साथ ऊर्जा के प्रवाह को बढ़ता है। वस्तु मनुष्य और पर्यावरण के बीच जादूई संबंध का उपयोग करता है ताकि एक ऐसा वातावरण बनाया जा सके जो सामंजस्य में हो सकता है। वस्तु में चित्रों का महत्त्व ऊर्जा के आसान प्रवाह की अनुमति देना है।

वस्तु के अनुसार पेंटिंग आपके घर को सजाने के बारे में और आपके जीवन के तौर–तरिके से अनेक रंगों से सजाने के बारे में है। इस प्रकार पेंटिंग एक प्रमुख भूमिका निभाती है। पेंटिंग एक बहुत ही मनोहर व सुंदर प्रकृति से जुड़ी एक कला है। पेंटिंग में एक महान कलाकार का नाम लियोनार्डो–द–विंची द्वारा बनाया गया मोनालिया पेंटिंग में इस महिला का मुस्कान का रहस्य आज तक नहीं पता चल पाया है।

भारतीय संस्कृति में पेंटिंग का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। हर व्यक्ति के अंदर भिन्न–भिन्न प्रकार का कला छिपा रहता है। पेंटिंग व्यक्ति को सम्मान व जीवन जीने का स्रोत भी बन सकता है। पेंटिंग भिन्न प्रकार के होते हैं – मूर्ति पेंटिंग, राजस्थानी पेंटिंग, मधुबनी पेंटिंग, मुगलपेंटिंग, पहाड़ी पेंटिंग, मार्बल पेंटिंग, बाटिका, कलमकारी, सिलक पेंटिंग, वेलवेट पेंटिंग, पाम लीफ, एचिंग, ग्लास पेंटिंग इत्यादि के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। पेंटिंग के पैटर्न प्रचलन में है। अंततः धर्म और संस्कृति की भी चित्रों पर अत्यधिक प्रभाव है। इंडो–इस्लामिक चित्र और बौद्ध चित्र विभिन्न प्रकार है। प्राचीन काल की पेंटिंग ज्यादा गुफाओं और मंदिर की दीवारों पर चित्र हिन्दु धर्म, बौद्ध धर्म के कई पहलुओं को दर्शाते हैं।

पेंटिंग में पेंट का उपयोग करने के क्रिया या प्रक्रिया ही पेंट एक पेंटिंग के रूप में जाने वाली कलाकृति बना सकता है, या इसे मुरक्षात्मक कोटिंग या सजावट के रूप में अधिक व्यवहारिक रूप से क्रिया किया जाता है। पेंटिंग एक ऐसा कला है जो दो आयामी सतह पर विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्ति को दर्शाता है। पेंटिंग भावनात्मक जागरूकता और विकास में बदलाव लाता है। पेंटिंग केवल मस्तिष्क के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए अच्छा तरीका है। पेंटिंग भावनात्मक बुद्धि और भावनात्मक विकास में भी सहायता कर सकती है। पेंटिंग में कई तरह की छवियाँ को एक रूप में सजाया जाता है। एवं उसका स्केच बनता है उसे फिर हर तरह के रंगों को भर कर पेंटिंग का एक रूप आकार दर्शाया जाता है।

पेंटिंग आपको अपनी भावनाओं को संसाधित करने और अपने परिवेश को समझने में मदद करती है। पेंटिंग आदिकाल से ही मानव–समाज का एक महत्वपूर्ण होता है। कला का उपयोग सांस्कृतिक आदान–प्रदान शिक्षा और अभिव्यक्ति के लिए एक उपकरण के रूप में किया जाता है। पेंटिंग किसी भी रूप में चाहे निर्माण करते समय या अवलोकन करते है। पेंटिंग हमें खुद को अभिव्यक्त करने की क्षमता कहते हैं विचारों और अनुभवों को चित्रित करके संवाद करते हैं। जब आप किसी और की पेंटिंग देखते हैं उसका अध्ययन करते हैं तो आप दुनिया को उनकी आँखों से देख रहे होते हैं।

पेंटिंग और डिजाइन का अध्ययन करने से नए कौशल हासिल करने का अवसर मिलता है। पेंटिंग हमें खुद अभिव्यक्त करने की क्षमता देती है। अपने विचारों और अनुभवों को चित्रित करके संवाद करते हैं। जब आप किसी और की पेंटिंग देखते हैं। भारतीय पेंटिंग में अभिव्यक्ति की प्रधानता दिखाई देती है।

पेंटिंग में रंग के केन्द्र में होता है। यह सबसे महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि यह टोन सेट करता है कि दर्शक काम के बारे में कैसा महसूस करते हैं। पेंटिंग और कलरिंग का मस्तिष्क पर असर होता है। खास असर साइंस ने भी माना जीवन में रंगों का महत्व लोग मन से शांत होते हैं।

NEP 2020 के संदर्भ में शिक्षा को बदलना

संजीव कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक

भारत सरकार द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 29 जुलाई 2020 को घोषित किया जिसे नई शिक्षा नीति 2020 कहा गया। यह नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के कस्तुरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति के रिपोर्ट आधारित है यह 1986 में नई शिक्षा नीति जारी होने के भारतीय शिक्षा नीति में परिवर्तन है। भारत में 6 से 14 वर्ष तक बच्चो के लिये अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था का प्रावधान है जो भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में कहा गया है के राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण होने की शुरुआत 1948 में डॉ सर्वपल्ली राधा कृष्णन शिक्षा आयोग यह भी हुआ था । की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय गठन हुआ था'' तभी से शिक्षा नीति महत्वपूर्ण बदलाव वाला प्रस्ताव कोठारी आयोग (1964–1966) की सिफारिश के आधार पर 1968 पर प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के कार्यकाल में हुआ था। भारत सरकार की द्वारा नई शिक्षा नीति 1986 के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इसमें सूमचे देश में एक समान शिक्षण प्रणाली को स्वीकार किया और लागू किया। इस नीति को 1992 मे संशोधन भी किया गया था।

नई शिक्षा नीति 2020 में मानव संसाधन मंत्रालय का नाम पुनः 'शिक्षा मंत्रालय'' करने का फैसला लिया गया है। इसमें सभी उच्च शिक्षा के लिए एकल निकाय के रूप में (कानूनी एवं चिकित्सीय शिक्षा को छोड़कर) भारत उच्च शिक्षा आयोग का गठन करने का प्रावधान है। कुछ सहायक पाठ्यक्रम को मुख्य पाठ्यक्रम में जोड़ा जाएगा। जिसमें संगीत, खेल, योग आदि शामिल हैं पर खर्च को 3 प्रतिशत से 6 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य है। एम.फील को समाप्त करने का प्रावाधान है।

अनुसंधान में जाने के लिए स्नातक और स्नातकोत्तर करके पी.एच.डी. मे प्रवेश लिया जा सकता है। व्यापक सुधार के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और सभी शिक्षा कार्यक्रमों को महाविद्यालय या विश्वविद्यालयों के स्तर पर शामिल करने की सिफारिश की गई है। विषय चुनने की प्रक्रिया में बदलाव किया गया है जो पहले समूह के द्वारा किये जाते थे निजी स्कूलो में मँहगें फीस को रोकने का प्रयास किया जाएगा। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन को नेशनल साईस फाउंडेशन के तर्ज पर लाया जाएगा, इंजीनियरिंग करने वाले छात्र भी अब संगीत की पढ़ाई साथ में लाभ कर सकते है।

इस नीति में पहले से लेकर पाँचवे कक्षा के बच्चों के लेखन पर जोर देने की बात की गई है। स्कूली शिक्षा को 10+2 फार्मेट मे बदले अब 5+3+3+4 फार्मेट को अपनाया जाएगा। इसके तहत पहले पाँच साल मे प्री–प्राईमरी स्कूल के तीन साल और कक्षा एक और कक्षा दो सहित फाउंडेशन स्टेज शामिल होगें। इसके बाद कक्षा 3–5 के तीन साल इसके बाद कक्षा 6–8 तीन साल और चौथा स्टेज कक्षा 9 से12वीं तक चार साल का होगा। विषय चुनने की आजादी अब पहली कक्षा से ही होगी जो पहले 11वीं कक्षा से थी। नीति में पहली कक्षा से पॉचवीं कक्षा तक मातृभाषा का इस्तेमाल करने का निर्णय लिया गया है।

किसी कारण वश, विद्यार्थी उच्च शिक्षा के बीच मे ही कोर्स छोड़ देते हैं जिससे उन्हें कोई लाभ नहीं मिलता है डिग्री लेने फिर से शुरुआत करनी पड़ती है। रट्ट विद्या को समाप्त करने की कोशिश की गई है।

नई नीति में पहले वर्ष में कोर्स, पूरा करने पर प्रमाण पत्र दूसरा पूरा प्रमाण पत्र दूसरा पूरा करने पर प्रमाण पत्र और डिप्लोमा एवं अंतिम वर्ष में पूरा करने पर डिग्री देने का प्रावधान है। 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बड़े बदलाव संकेत दिख रहें है। लेकन इसमें कई चुनौतियाँ भी है। भारत में लगभग एक तिहाई बच्चें स्कूली शिक्षा पूरी करने से पहले ही स्कूल छोड़ देते है जो किसी न किसी कारण से असमर्थ रहते हैं। इल तरह के बच्चे अधिकांशतः अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, धार्मिक अल्पसंख्यकों और दिव्यांग समूह के होते है।

एक महत्वपूर्ण चुनौती है बुनियादी ढांचा, ज्यादातर शिक्षण संस्थानों में बिजली, पानी, शौचालय, चारदीवारी पुस्तकालय, कम्प्यूटर की कमी देखी जाती है। जिससे शिक्षण प्रणाली प्रभावित होती है । साथ ही शिक्षक की कमी को भी दूर करना होगा। अधिकांश स्कूलों में शिक्षकों की बहुत कमी देखी जाती है। नियंत्रक और महालेखा 2017 की रिपोर्ट के अनुसार एकल शिक्षक के भरोसे बड़ी संख्या में स्कूल चल रहें हैं । अतः इस नीति के तहत शिक्षा अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार, सामाजिक संस्था, शिक्षाविदों नागरिकों एवं सभी समुदाय के सदस्यों को अपने स्तर पर काम करना चाहिए।

नई शिक्षा के आलोक में महर्षि अरविन्दो एवं स्वामी विवेकानन्द के दिग्दर्शन

अवनीत कुमार
सहायक प्राध्यापक

प्राचीन काल में भारत को जगतगुरु (विश्वगुरु) की संज्ञा दी जाती थी, क्योंकि उस समय भारतीय शिक्षा दर्शन का स्तर विश्व के अन्य देशों की तुलना में बहुत ही उच्च–स्तर का था। शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख लक्ष्य उच्च आदर्श, धर्म दर्शन व चरित्र निर्माण था । किन्तु मध्यकालीन (मुस्लिमकालीन) एवं ब्रिटिशकालीन शिक्षा व्यवस्था ने अतीत में अर्जित प्रसिद्धि को मिटाकर नस्तोनाबूत कर दिया। विशेषकर 19वीं शताब्दी में मैकाले प्रस्ताव एवं "अधोगामी निस्यन्दन सिद्धांत'' का समर्थन किया जो एक मात्र लिपिक तैयार कर सकती थी। जो 20वीं शताब्दी में भी सीधा प्रभाव देखने को मिल रहा है। हमारा सभ्यता, संस्कृति, समाजिकता, वैदिक, अध्यात्मिकता एवं चारित्रिक विकास नही हो पा रहा है। क्योंकि शिक्षा दर्शन में मूल्य व नैतिकता जैसे महत्वपूर्ण विषय से दरकिनार कर दिया गया। नाकारात्मक पाश्चात्य शिक्षा हमारी भारतीय शिक्षा दर्शन को समाप्त करती जा रही है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए श्री अरविन्द व स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन किया। विद्यार्थी यह अनुभव किया कि इन दोनों दार्शनिकों के विचारों के बिना शिक्षा दर्शन का दिग्दर्शन करना असम्भव है। विद्यार्थी का ऐसी मान्यता है कि श्री अरविन्द व स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उनके शिक्षा–दर्शन विचारों को स्थान देना निःसन्देह शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों को काफी हद तक दूर किया जा सकता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन के अर्थ स्वरुप एवं महत्त्व

शिक्षा दर्शन शास्त्र की वह शाखा है, जिसमें शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य विषय वस्तु का अध्ययन तार्किक दृष्टिकोण से किया जाता है। शिक्षा दर्शन मानव जीवन को गुणात्मक उत्कर्ष प्रदान करने वाले मूल्यों के स्वरूप पर विचार करता है।

शिक्षा वह उद्देश्यपूर्ण प्रयत्न है जिसका लक्ष्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास है। मनुष्य का जीवन स्वभाविक रूप से अपूर्ण एवं सीमित है। जीवन के इसी अपुर्णता के प्रति असंतोष के कारण विकास की ओर उन्मुख होता है। जिसके लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा अपने उद्देश्यों एवं व्यवहारिता के कारण विश्व में अनोखी थी । चरित्र निर्माण आध्यात्मिक ज्ञान के साथ व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली की ख्याति चारों ओर फैली हुई थी। अच्छी शिक्षा मनुष्य को श्रेष्ठ मानव बनती है। शिक्षा किसी देश को भविष्य की बुनियाद होती है । किन्तु दुर्भाग्य से देश की शिक्षा व्यवस्था उदासीनता का शिकार हो गया है।

वर्त्तमान शिक्षा व्यवस्था में लार्ड मैकाले से विरासत में मिली है। वर्त्तमान शिक्षा पद्धति मनुष्य को आत्म चेतन, एवं आत्मा उन्मुख नहीं बनाती है। बल्कि केवल अर्थो उपार्जन की दृष्टि से सक्षम बनाने की प्रयत्न करती है। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो आध्यात्मक व विज्ञान में दर्शन व कला में तथा व्यवसाय व बृद्धि के सभी क्षेत्रों में समान्यजन स्थापित कर सकें। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक नैतिक चारित्रिक व अध्यात्मिक विकास है।

आधुनिक भारत में कुछ चितकों ने शिक्षा पद्धति को मुल्यों उन्मुखी बनाने की दिशा में स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द ज्योतिवा फूले, महात्मा गाँधी, रविन्द्रनाथ टैगोर का अप्रतिम योगदान रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

- हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान व उनके सर्वांगीण विकास के करना।
- अवधारणात्मक समझ पर जोर न कि रटंत पद्धति पर।
- सीखने के लिए सतत् मूल्यांकन पर जोर तथा विद्यार्थियों के प्रवृति के अनुरूप विषय चयन की स्वतंत्रता।
- शिक्षकों और संकाय को सीखने की प्रक्रिया पर बल।
- भारतीय जड़ों व गौरव से बंधे रहना।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देख–भाल शिक्षा से।
- मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषा का प्रोत्साहन।
- सभी विद्यार्थी के लिए सुलम,लचीला, बहु–विषयक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा।
- अच्छे इंसानों का विकास करना जो तर्कसंगत विचार, रचनात्मक कल्पना शक्ति नैतिक मूल्य, चारित्रिक आधार हो। जो समाज के निर्माण के अहम् भूमिका निभा सके।
- नई शिक्षा नीति का लक्ष्य भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है। कहीं न कहीं श्री अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का उद्देश्य भी यहीं रहा है।

निष्कर्ष **एवं प्रा**संगिकता :

विचारधारा, मूल्य और शिक्षा का आपस में घनिष्ठ संबंध है। वास्तव में देश की प्रगति इन्हीं बातों पर निर्भर करती है। हमारे नागरिकों ने क्या और कैसी शिक्षा प्राप्त की है? तथा किन नैतिक मूल्यों को अर्जित किया है। वर्तमान परिदृश्य में भौतिकवादी सोंच एवं उपभोक्तावादी संस्कृति ने छात्रों को अनुशासनहीन, अशिष्ट और विध्वंसात्मक प्रवृत्ति की ओर उन्मुख किया है। ऐसी विषम सामाजिक परिस्थिति में दोनों विचारकों के विचार उपयोगी सिद्ध हो सकती है। हमारी शिक्षा व्यवस्था की दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली है, जो आज सिर्फ साक्षरता एवं रटने की शिक्षा पर बल दे रहा है। श्री अरविन्द कहते हैं कि बालकों को रटनें के लिए बाध्य नहीं किये जाए । यथासंभव शिक्षण–विधि जिसका आधार जीवन प्रकृति और समाज वास्तविकता परिस्थितियों हो अपनानी चाहिए। इस प्रकार यदि हम दोनों दार्शनिकों के विचार को अमल में लाये तो काफी हद तक इस समस्या का हल निकल सकता है। इन्हीं सब बातों को देखते हुए माननीय श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी (प्रधानमंत्री) के कार्यकाल में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का पार्दुभाव हुआ। जो इन छोटी–छोटी बातों को जो काफी महत्वपूर्ण उन्हे अमलीजामा पहनाया गया। अब देखना है कि कहां तक यह अपनी लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह जिस उद्देश्य के लिए नई शिक्षा नीति 2020 का प्रार्दुभाव हुआ, वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था में अमूलचूल परिवर्तन कर सकें।

सन्दर्भ **सू**ची –

- मिश्रा प्रवेश कुमार(2002) अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन आदर्शवादी प्रवृतियों का लघु शोध प्रगंधन, शिक्षा व सहबद्ध विज्ञान सहलेखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।
- श्री अरविन्द,(1994) मानक चक्र पाण्डिचेरी, श्री अरविन्द आश्रम?
- छोटे नारायण शर्मा (2002) श्री अरविन्द (संक्षिप्त जीवनी) नई दिल्ली।

शिक्षा मे मनोविज्ञान का महत्व

Kumar Saurav
SPTTCB

शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मानव व्यवहार में रूपान्तरण है और मनोविज्ञान एक ऐसा विषय है जिसका सम्बन्ध व्यावहारिक परिवर्तनों के अध्ययन से है। इस तरह शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थी और सीखने एवं शिक्षक की क्रियाओं से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का अध्ययन करता है।

वास्तव में शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की महत्त्वपूर्ण शाखा है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है– "शिक्षा" और "मनोविज्ञान"। इसका शाब्दिक अर्थ है शिक्षा सम्बन्धी मनोविज्ञान अथवा शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक समस्याओं को हल करने में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करता है। स्किनर ने लिखा हैकृ "शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से, जो व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान है, ग्रहण करता है।"

शिक्षा, मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन करती है और मनोविज्ञान ऐसा विज्ञान है जो मानव व्यवहार के सभी रूपों का अध्ययन करता है। इस तरह शिक्षा और मनोविज्ञान दोनों ही मानव व्यक्तित्व के विकास से सम्बन्धित हैं। शिक्षा मनोविज्ञान का आधार ही मनोविज्ञान है। जिस तरह सामान्य मनोविज्ञान व्यक्तिगत आचरण के अध्ययन और नियमों का अध्ययन करता है उसी तरह शिक्षा मनोविज्ञान एक विशेष प्रकार के व्यक्ति अर्थात् विद्यालय अथवा विद्यालय के बाहर शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के आचरण एवं व्यवहार का अध्ययन करता है। इसका अध्ययन क्षेत्र अत्यन्त संकीर्ण एवं विशिष्ट है। शिक्षा मनोविज्ञान अपने विषय के अध्ययन हेतु सामान्य मनोविज्ञान की पद्धतियों का प्रयोग करता है। वह बालक के स्वाभाविक, उसके व्यवहार, उसकी प्रवृत्तियों का शैक्षिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है एवं शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का विवेचन, विश्लेषण एवं समाधान प्रस्तुत करता है। स्किनर ने लिखा है "शिक्षा मनोविज्ञान उन खोजों को शैक्षिक परिस्थितियों में प्रयोग करता है जो विशिष्ट और मानव प्राणियों के अनुभव एवं व्यवहार से सम्बन्धित है।"

मनोविज्ञान की परिभाषा (Definition of Educational Psychology)

यहाँ शिक्षा मनोविज्ञान की प्रमुख परिभाषाएँ दी जा रही हैं–

1) क्रो एवं क्रो–"शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन एवं व्याख्या करता है। "

(2) प्रो. ट्रोदृ "शिक्षा मनोविज्ञान वह है जो कि शैक्षणिक परिस्थितियों का मनोवैज्ञानिक रूप से अध्ययन करता है।"

(3) नल एवं अन्य–"शिक्षा मनोविज्ञान मुख्य रूप से शिक्षा की सामाजिक प्रक्रिया से परिवर्तित या निर्देशित होने वाले मानव व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित है।"

4) सॉरे एवं टेलफोर्ड–"शिक्षा–मनोविज्ञान का मुख्य सम्बन्ध सीखने से है। यह मनोविज्ञान का वह अंग है जो शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं के वैज्ञानिक खोज से सम्बन्धित है।"

(5) स्किनर– "शिक्षा मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध उन मानवीय व्यवहार अथवा व्यक्तित्व के अध्ययन से है जिसका उत्थान, विकास और निर्देशन शिक्षा की सामाजिक प्रक्रिया के अन्तर्गत होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचार करने से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं–

(1) शिक्षा मनोविज्ञान एक व्यावहारिक विज्ञान है जिसकी सार्थकता अध्ययन के के पश्चात् व्यवहार के संशोधन में आँकी जाती है।

(2) शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को अपनाकर विधायक विज्ञान का स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

(3) शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा की समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं की पद्धतियों का प्रतिपादन किया है।

(4) शिक्षा मनोविज्ञान जीवन के वास्तविक आदर्शों की प्राप्ति में सहायक होता है।

(5) शिक्षा मनोविज्ञान विद्यार्थियों, अध्यापक और अभिभावकों के लिए आवश्यक रूप से ज्ञेय है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा मनोविज्ञान एक व्यावहारिक विज्ञान है और मनोविज्ञान से शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को हल करने में सहायता देता है। शैक्षिक रूप से जहाँ भी मनोविज्ञान उपयोगी होता है वहीं इसका अध्ययन क्षेत्र होता है। विषय के रूप में यह व्यवहार के सिद्धान्तों एवं तथ्यों का पुंज है जो आपस में एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। सामान्य रूप में शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षा मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र है।

मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature of Educational Psychology)

कोई भी विषय अथवा शास्त्र विज्ञान तभी माना जाता है जब उसके अन्तर्गत वैज्ञानिक पद्धतियों के द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। शिक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि शिक्षा मनोविज्ञान अपने विभिन्न खोजों हेतु वैज्ञानिक पद्धतियों का आश्रय लेता है। उनसे जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं उनके आधार पर शिक्षा की समस्याओं का समाधान किया जाता है और साथ ही छात्रों की उपलब्धियों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करता है। जिस तरह एक वैज्ञानिक विभिन्न तथ्यों का निरीक्षण और परीक्षण कर उसके सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालकर सामान्य नियम प्रतिपादित करता है, उसी तरह शिक्षक कक्षा की

किसी समस्या का अध्ययन और विश्लेषण कर उसका हल करने का उपाय निश्चित करता है। वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग के फलस्वरूप शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक मानी जाती है। इस सम्बन्ध में दो विद्वानों के कथन उल्लेखनीय हैं–

(1) क्रो एवं क्रोदृ "शिक्षा मनोविज्ञान को व्यावहारिक विज्ञान माना जा सकता है क्योंकि वह मानव व्यवहार के सम्बन्ध में वैज्ञानिक पद्धति से निश्चित किए गए सिद्धान्तों एवं तथ्यों के अनुसार सीखने की व्याख्या करने का प्रयत्न करता है।"

(2) सॉरे एवं टेलफोर्ड–"शिक्षा–मनोविज्ञान अपनी खोज के प्रमुख उपकरणों के साथ में विज्ञान की विधियों का प्रयोग करता है।"

मनोविज्ञान के उद्देश्य)Aims of Educational Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य "शिक्षा" के उद्देश्यों से सम्बन्धित हैं। शिक्षा का उद्देश्य बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का स्वाभाविक एवं सर्वांगीण विकास करके उसे समाज और राष्ट्र का अच्छा नागरिक बनाना है। शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य भी शैक्षिक और सामाजिक परिवेश में बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का विकास करते हुए शिक्षा के विभिन्न लक्ष्यों के आधार को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है।

एक शिक्षक के लिए बालक का मनोविज्ञान समझने की आवश्यकता एवं महत्त्व (Need and Importance for a Teacher to have understanding of Psychology of Child) एक शिक्षक के लिए बालक का मनोविज्ञान समझने की आवश्यकता एवं महत्त्व निम्न सन्दर्भों में है–

(1) मनोविज्ञान एवं शिक्षण विधि– प्राचीन शिक्षण विधियाँ मौखिक थी, जिनमें बालकों को स्वयं ही सीखने का अवसर नहीं मिलता था। किन्तु मनोविज्ञान ने शिक्षण प्रक्रिया के इस दोष को दूर किया। आज करके सीखना, खेल द्वारा सीखना, पर्यटन, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र, शिक्षण मशीन, प्रोग्राम अनुदेश के साथ–साथ माण्टेसरी, किण्डरगाटेन प्रोजेक्ट एवं प्रयोगशाला आदि शिक्षण पद्धतियों द्वारा बालक को शिक्षा प्रदान की जाती है।

(2) मनोविज्ञान एवं बालक– प्राचीन और मध्यकालीन शिक्षा, शिक्षक तथा पाठ्यक्रम केन्द्रित थी। मनोविज्ञान के फलस्वरूप आधुनिक शिक्षा 'बाल केन्द्रित' बन गई है। शिक्षा की प्रक्रिया में 'अधिगमध् सीखने पर विशेष बल दिया जाता है। 'सीखने' बालक को ही है। यदि कोई बालक सीखना नहीं चाहता, तो शिक्षक को यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि वह क्यों नहीं सीखना चाहता, उसके साथ कौन सी समस्याएँ ध् कठिनाइयाँ हैं ? इस दृष्टि से शिक्षक को बालक का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। रूसो ने लिखा है, "बालक एक ऐसी पुस्तक के समान है, जिसे शिक्षक को आद्योपान्त पढ़ना है।" वर्तमान समय में माना जाता है कि "शिक्षा बालक के लिए है, न कि बालक शिक्षा के लिए।" इसलिए आजकल शिक्षण योजना निर्मित करते समय 'मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का सहारा लिया जाता है।

(3) मनोविज्ञान एवं शिक्षक– शिक्षक के लिए मनोविज्ञान का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक हो गया है। वर्तमान समय में शिक्षक बिना मनोविज्ञान की सहायता लिए अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकता। आज शिक्षा बाल केन्द्रित हो गयी है। अतः शिक्षक के लिए बालकों की रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं, अभियोग्यताओं और उनके वातावरण आदि का ज्ञान होना आवश्यक है। विभिन्न प्रकार के बालकों और विषयानुसार उपयुक्त शिक्षण विधि, शिक्षण साम्रही आदि का चयन करने में मनोविज्ञान शिक्षक की काफी लड़ा सहायता करता है।

(4) मनोविज्ञान एवं विद्यालय– मनोविज्ञान का ज्ञान विद्यालय में स्वस्थ और शैक्षिक वातावरण निर्मित करने में भी सहायक है। एक व्यक्ति विद्यालय में दूसरे व्यक्ति के सहयोग एवं प्रभाति करता है। इन बातों का ज्ञान समहू मनोविज्ञान के माध्यम से होता है। वर्तमान समय में विद्यालय की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का सहारा लिया जाता है।

(5) मनोविज्ञान एवं शिक्षक के व्यवसाय की तैयारी– मनोविज्ञान ने बताया कि कोई भी व्यक्ति किसी कार्य या व्यवसाय में सफलता उसी स्थिति में प्राप्त कर सकता है, जबकि वह उसके प्रति समुचित रुचि और योग्यता रखता है। शिक्षा मनोविज्ञान के माध्यम से शिक्ष को अपने स्वभाव, योग्यता, क्षमता एवं बुद्धि–स्तर आदि का पता चलता है। इससे शिक्षक अपने व्यवसाय यानी अध्यापन की तैयारी करने सफल हो सकता है।

(6) मनोविज्ञान एवं शिक्षक व्यवहार– प्राचीन और मध्य काल में यह मान्यता प्रचलित थी कि अध्यापक जन्मत उत्पन्न होते हैं, बनाए नहीं जाते। किन्तु यह मान्यता उचित नहीं थी, क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षकों को विधिवत् प्रशिक्षित करते हुए तैयार किया जाता है। आज इसके माध्यम से शिक्षक के व्यवहार का शुद्धिकरण एवं परिमार्जन किया जाता है। हमारे लिए मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई विधियों की खोज की गई हैं।

शिक्षा द्वारा समाज का निर्माण

Suraj Kumar
SPTTCB

शिक्षा किसी समाज मे सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य समाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जता है और इस प्रकार उसे सभ्य, संस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरंतर विकास करते है।

शिक्षा का समाजिक उद्देश्य :–

शिक्षा के समाजिक उद्देश्य के अनुसार समाज या राज्य का स्थान व्यक्ति से बहुत ऊँचा है समाज के हित मे ही व्यक्ति का हित है। समाज मे रहकर ही व्यक्ति अपनी आवश्यकताये पूर्ण कर सकता है, अपना विकास कर सकता है तथा उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है। अतः व्यक्ति को अपने हित का ध्यान न रखकर समाज कि हित का ध्यान रखना चाहिए तथा बलिदान को तैयार रहना चाहिए।

प्रो0 बागले एवं ड्यूीव समाजिक विकास से तात्पर्य सामाजिक कुशलता से लेते है। जिनके अनुसार '' शिक्षा के उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को समाजिक रूप से कुशल बनाना है जिसके कारण वह स्वयं का जीवनयापन कर पाने में सक्षम होते है। तथा अच्छे नागरिक के गुणों का निर्वाह करता है। जिससे वह देश व समाज की समस्याओं को समझकर सामूहिक क्रियाओं में अपना योगदान दें पाने मे सक्षम होता है।''

- शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य का सामान्वय रूप :– इसके अन्तर्गत सामाजिकता व सहयोग की भावना को बल मिलता है। जो जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करने के लिए आवश्यक है।
- रेमण्ट के अनुसार :– ''समाज विहीन व्यक्ति कोटी कल्पना है। व्यक्ति को एक समाजिक प्राणी बने रहने हेतु अपनी वैयक्तिकता को कुछ सीमा तक सामाजिक आवश्यकताओं के अधिन रखना पड़ता है। तथा स्वयं में कुछ परिवर्तन लाने पड़ते है। जिनसे चेतन एवं अचेतन रूप से उसकी व्यक्तिकता का हनन होता है।''

शिक्षा के द्वारा सामाज मे सहिणुता का वातावरण का संचार होता है जिसके फलस्वरूप मनुष्य में मानवता का भाव बना रहता है एवं सामाजिक स्थिरता बना रहता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य सही वातावरण समाज में स्थापित कर पाते हैं।

अतः हम कह सकते है कि अच्छे समाज के निर्माण में शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है नही ंतो हम सही मायने मे अच्छे एवं अनुकूल समाज का निर्माण नहीं कर सकते हैं।

Role of motivation in education

Amarjeet Kumar

Introduction

Motivation is an inspirational process which impels the members of the team to pull their weight effectively to give their loyalty to the group, to carry out the tasks properly that they have accepted, and generally to play an effective part in the job that the group has undertaken. Motivation is a psychological construct that refers to the disposition to act and direct behavior according to a goal. Like most of psychological processes, motivation develops throughout the life span and is influenced by both biological and environmental factors. The aim of this chapter is to summarize research on the development of motivation from infancy to adolescence, which can help understand the typical developmental trajectories of this ability and its relation to learning. We will start with a review of some of the most influential theories of motivation and the aspects each of them has emphasized. We will also explore how biology and experience interact in this development, paying special attention to factors such as: school, family, and peers, as well as characteristics of the child including self-esteem, cognitive development, and temperament. Finally, we will discuss the implications of understanding the developmental trajectories and the factors that have an impact on this development, for both teachers and parents.

Intrinsic motivation is the natural tendency to seek out and conquer challenges as we pursue personal interests and exercise capabilities. When we are intrinsically motivated, we do not need incentives or punishments because the activity itself is rewarding.

On the other hand, if we do something in order to earn a grade, avoid punishment or for some other reason that has very little to do with the task itself, then it is known as **extrinsic motivation**.

Importance of Motivation in Education!

It is generally recognized in ordinary experiences that motivation occupies an important place in human learning.The term motivation is used to denote the springs of action, be they native or acquired. Literally it means causing or inducing movement.

It is also used to mean stimulation of a desire on the part of the learner to master the subject matter or to react to a given situation Motivation is simply the moving power that elicits vigorous effort to learn or to do things.

Hansen uses the term to refer to “movement toward some kind of behavior, or movement resulting in some kind of behavior.” Any behavior is basically pointless unless it helps the learner to reach some goal. Therefore, the importance of goals in motivating behavior and learning becomes evident.

Motivation may also denote cravings, incentives, drives, desires, urges, or satisfactions. Motivation is effective only when it gives a mental set toward learning. The teaching approach that is made a part of the regular teaching procedure often serves as the most effective form of motivation.

The effectiveness of learning depends in part upon the strength of the needs and upon the satisfaction the learning brings. It can be said that the rate of learning depends upon the strength of the motive. Motivation is the very heart of the learning process.

A strong inner urge will mean stronger efforts. Adequate motivation not only sets in motion the activity which results in learning, but also sustains and directs it. It is concerned with the arousal of interest in learning.

A large number of our desires or cravings are internal urges to reaction or are the results of the inner growth of the organism. However, some of the human wants are acquired to satisfy original cravings. All these are resources in teaching which can readily be used or aroused.

They are the springs of action which the teacher must direct. The motives which the school has to deal with are all the instinctive tendencies of childhood with all the variations and modifications acquired through experience.

The child that is full of life is full of motives and full of activity. Most motives must be built up as products of educational processes. All school work needs to be motivated. Difficult work needs to be strongly motivated to elicit and insure satisfaction on the part of the learner in mastering the subject-matter.

The learner must be motivated so that his interest will be directed towards a definite objective which will take him far beyond the experiences which are utilized as motivators toward further learning. It is generally considered that no lesson plan is complete unless it includes motivation. Learning must be motivated in such a way that interest in the lesson to be learned is built upon the learner's existing interest.

The importance of motivation is well recognized in education but not too much time and energy should be given this part of the lesson.

Conclusion

Motivation can be properly or improperly achieved and can either hinder or improve productivity. Management must understand that they are dealing with human beings, not machines, and that motivation involves incentivizing people to do something because they want to do it. Effective motivation cannot be achieved without knowing what is important to associates. Management must use the proper incentives to achieve the desired results. Simply stated, if the proper motivational environment is in place, managers will be rewarded with productive associates.

References

- Wasserman T, Wasserman L (2020). "Motivation: State, Trait, or Both". *Motivation, Effort, and the Neural Network Model*.
- Graham S. "Motivation". *Encyclopedia of Education*. Archived from the original on 2021-05-13. Retrieved 2021-05-13
- Ryan RM, Deci EL (January 2000). "Self-determination theory and the facilitation of intrinsic motivation, social development, and well-being". *The American Psychologist*.
- Southwood N (2016). "The Motivation Question". *Philosophical Studies*. **173** (12): 3413–3430
- McCann H (1995). "Intention and Motivational Strength". *Journal of Philosophical Research*. **20**: 571–583.

भारत में व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता और दायरा

Pawan Kumar
Roll No.-58
B.Ed. 2022-24

व्यावसायिक शिक्षा (अंग्रेजी में Vocational Education) में छात्रों को व्यापार के आधारभूत सिद्धांतों तथा प्रक्रियाओं का शिक्षण दिया जाता है। किसी देश के विकास में उस देश की शैक्षिक व्यवस्था का बहुत अत्यधिक महत्व होता है तथा ऐसी शिक्षा एवं प्रशिक्षण से तात्पर्य है जो कार्यकर्ता को अपने कार्य में निपुण बनाती है। उदाहरण के लिए आईटीआई एवं पॉलिटेक्निक में दी जाने वाली शिक्षा है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यवसाय दिलाना और उनको जीविकोपार्जन योग्य बनाना हो, तो उस देश का विकास निश्चित होता है। शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति तभी कर सकती है, जब वह शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा हो।

भारत में व्यावसायिक शिक्षा

भारत में व्यावसायिक प्रशिक्षण देने की मुख्य प्रेरणा सक्षम श्रम की मांग और आपूर्ति के बीच की खाई को पाटना है, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए वैकल्पिक शिक्षा प्रदान करना और सबसे महत्वपूर्ण, व्यक्तियों की रोजगार क्षमता में सुधार करना है। एक सक्षम और कुशल कार्यबल को देश की सफलता के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण मानव पूँजी माना जाता है। व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास दोनों को व्यक्तिगत उत्पादकता, नियोक्ता लाभप्रदता और देश के विकास को बढ़ावा देने के लिए दिखाया गया है। व्यावसायिक शिक्षा असंगठित क्षेत्र की जरूरतों को पुरा करने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों के माध्यम से कुशल श्रम विकसित करने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से युवाओं में स्वरोजगार क्षमता पैदा करने का प्रयास करती है।

यह देखते हुए कि अर्थव्यवस्था के आधिकारिक क्षेत्र में केवल 7 से 10 % आबादी कार्यरत है, व्यावसायिक शिक्षा के विकास से अनौपचारिक क्षेत्र में एक प्रशिक्षित श्रम बल की आपूर्ति होगी, जिससे उत्पादकता बढ़ेगी। किसी देश के विकास के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण मानव पूँजी एक सक्षम और कुशल कार्यबल है।

व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता

व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को व्यावसाय चुनने में हीं सहायक नहीं है अपितु इसके द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास भी किया जाता है। आधुनिक युग में बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक हैं कि शिक्षा को छात्रों के अनुरूप बनाया जाए जिससे वह अपने वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकें।

- यह बेहतर आर्थिक और नागरिक सुविधाओं के लिए व्यक्ति को जीवन के लिए तैयार करता है।
- शिक्षा को व्यावहारिक और उपयोगी बनाने के लिए इसकी आवश्यकता है। यह जीवन की जरूरतों को बेहतर तरीके से पूरा कर सकता है।
- यह देश के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय उत्पाकता (GNP) को कृषि के साथ–साथ औद्योगिक रूप से बढ़ाने के लिए इसकी आवश्यकता है।
- शिक्षा का व्यावसायीकरण देश के मानव और प्राकृतिक संसाधनों के सर्वोत्तम और पूर्ण उपयोग के लिए सहायक है।
- किसी विशेष व्यवसाय में किसी व्यक्ति की क्षमता या दक्षता को बढ़ाने के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है।
- आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के लाभों को न्यायोचित रूप से साझा करने के लिए व्यावसायीकरण की आवश्यकता है।
- यह एक अच्छी आजीविका अर्जित करने में सहायक है।

व्यावसायिक शिक्षा की दायरा

1. क्षेत्र और उद्योग :– व्यावसायिक शिक्षा में निर्माण, स्वास्थ्य देखभाल, प्रोद्योगिकी, वित्त, कृषि, पर्यावरण विज्ञान, सेवा, सार्वजनिक सुरक्षा और कई अन्य क्षेत्रों और उद्योगों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।
2. व्यवसाय :– व्यावसायिक शिक्षा विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के लिए प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान करती है, जैसे–इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, नर्स, डेंटल, हाइजीनिस्ट, वेब डिजाईनर, किसान, फॉरेस्टर इत्यादि।
3. शिक्षा का स्तर :– हाई स्कूल, व्यासवसायिक स्कूलों और सामुदायिक कॉलेजों सहित शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर व्यावसायिक शिक्षा की पेशकश की जा सकती है।
4. प्रशिक्षण :– व्यावसायिक शिक्षा में आमतौर पर कक्षा निर्देश और व्यावहारिक प्रशिक्षण संयोजन शामिल होता है जो छात्रों को किसी विशेष क्षेत्र या व्यवसाय में अवसर प्रदान करता है।

निष्कर्ष :–

व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। व्यावसायिक शिक्षा देश की एक संपत्ति है जो अर्थव्यवस्था को विकसित करने में मदद करती है। इसके अलावा, सरकार और व्यापार क्षेत्र दोनों में इन कुशल लोगों की उच्च मांग है। व्यावसायिक शिक्षा छात्रों, समाज, राष्ट्र और नियोक्ताओं को लाभ पहुँचाता है।

Value of Discipline in Student's Life

Gulshan Kumar
Roll no – 50
B.Ed. 2022-24

We have been reading about what discipline is and how important it is in a student's life, but none of us actually knows why and what is important. There are so many distractions in our ever-growing and changing environment that students sometimes forget their goals and morals. There is nothing wrong with feeling a little distracted once in a while, but to come back on track in what matters. What brings the students back on track is known as discipline. A disciplined student means that they work honestly, and follow rules and regulations, values and cultural standards.

So, when we talk about the importance of discipline in a student's life, it means a student working with an expected poise and with a set of morals and values. It improves their academic performance and also positively affects their health.

Introduction

Discipline means obeying the rules. It is necessary in all walks of life. Discipline gives people a set of rules and regulations to work with. It is a way of aligning the efforts and activities of every individual. Discipline can be put into words in different contexts. For some, discipline can be a way of life and for others, it can be a set of rules by which their life functions.

Discipline is basically a way of life that everyone lives with. It can be a belief in making small sacrifices to birth a wonderful future. With a disciplined life, a person creates good habits, has a maintained routine and is determined to follow the set rules.

Why is Discipline Important in Student's Life

Discipline plays an integral part in a student's life. Since they are at the stage of their life where they can be the most flexible version of themselves, it can be the best time to be disciplined. Although there is no age bar to following a disciplined life, it is quite possible that a student can get in the best shape physically and mentally when disciplined**.**

Some factors that explain why is discipline important in a student's life

1. Focus Centric

With interactive lessons and implementing high-tech solutions, you can motivate students and, as a result, improve their learning skills. The more attention they pay to what's going on, the more relevant information they'll be able to absorb at once

2. Stress-free Environment

A disciplined student grows in a stress-free environment. Be it studies or extra-curricular activities, staying disciplined can help the student stay on top. The value of discipline in a student's life can be gathered by the happiness and relief a disciplined student feels in different aspects of their lives.

3. Discipline Alters a Student's Character

A disciplined student would always shine differently. They have their own terms and rules towards which they feel responsible. Discipline boosts the positive outlook on different things and situations in life.

4. Source of Motivation

A disciplined life is the source of motivation. There is no denying the fact that student life is hectic and challenging. They continuously need motivation. A disciplined routine can maintain the level of determination in the students

5. Healthy and Active

One of the most important facets of life is affected by a disciplined life. A student stays healthy and active when they live in the discipline. They know when they are wrong and immediately get back on track. Disciplined students have the natural impulse to do everything good for their bodies.

6. Role model for others Being disciplined in different facets of life can make a student seem strong. When a student is disciplined, they simply become a role model for others too. Their personality gets so sharp and edgy that everyone wishes to be like them Discipline speaks for itself. It creates a chronology which is quite evident to other people. Conclusion There is no guarantee that a student in discipline is going to achieve all the good things in life. However, one thing that is guaranteed is that if they stumble, they will find ways to get back up. Instead of being angry or disappointed, they will be ready to work harder and achieve their goals. Disciplined student always learns from their missteps and forgets if they even happened. This gives them a better chance at trying again instead of feeling guilty about everything.

Impact of digitalization on education

Manisha kumari
Roll- 52,
B.ED 2021-2023

As we all know that this is the era of tecnolony and we are the faimiliar withn the term digitalization. The term digitalization in education means to use, desktop, computer, mobile device, internet and other software application in place of traditonal book and paper mode to teach students. Education is the basic needs and constitutional right of every Indian citizen digitization education helped everone to achive education easily in their comfort time. Digitilization has broken many boundaries and limitation of education and made it easily accession for everyone.

Digitilization of education has great impact on everyone is life . By this a person from remote area can also get education from any university which is far from their house .Students can get education on their favourable time schedules .Digital education helped a lot in global pandemic caused by covid with online clasess every one got education while staying in home.

Importance of Research and Innovations in Teacher Education

Shubham Priyesh
B.Ed. (2022-24)

In India, research innovative Teacher Education Programmes are organized by a variety of institutions spread all over the country. Some of these institutions and the National Council for Teacher Education (NCTE) are concerned with improving the quality of teacher education and use their control mechanisms as instruments for supporting and sustaining innovations. Yet many of such teacher education programmes are old and vague. They are just surviving with the same old techniques of quality controls rather than creating new transformation through innovations. Some of the issues related to quality of teacher education are old and are related to: ideology, financing, commercialization, management, infrastructure, reservations,quality control, updating curricular contents, admission, attendance, teaching, examinations, appointments, qualifications, and so on. But quality control may not be the same as creation of innovations.

"The goal of teacher education programmes must be aligned to prepare teachers as good persons, and not only as smart persons. How do we go about all these issues? The answer lies in creating an environment of being innovative.

Chattopadhyaya Commission notes, "If school teacher are expected to bring about a revolution in their approach to teaching. That same revolution must precede and find a place in the colleges of Education. The Commission further states that "If teacher education is to be made relevant to the roles and responsibilities of the New Teacher, the minimum length of training for secondary teacher should be five year following completion of class XII" Reiterating the need to enable general and professional education to be pursued concurrently". The National Curriculum Framework (2005) also emphasized on innovations and good practices in teacher education.No doubt, many research innovations have been conducted in the past particularly after independence which brought out significant changes and improvement in the field of teacher education at secondary stage. Some of the innovations are discussed in this present topic.

The Importance of Education

Manish Kumar
B.ED. (2022-24)

Education is not how well you can read and write but whether the world around you. A good education not only teacher you skills but also helps you broaden your horizons, gain better perspective, and teacher you to think for yourself. People today are quite aware and comfortable speaking about social injustices and other pressing issues. This can be attributed to the increased access to education around the world, which in turn has made society more accepting and open-minded, therefore, education is an element of human evolution .The importance of education is also pronounced in areas of creativity and innovation. Education encourages thinking outside the box and experimenting with new ideas, we have enlisted the reasons why education is important for your and the society we live in.

1) Realizing your true potential – A good education helps your recognize yourself and your strengths. As you learn about the world and yourself, you come across things that interest you. You find things you are good at and figure out how can contribute and help the world grow.Education gives you opportunities to explore yourself , and your surroundings and empowers you to understand the ways of the world. It gives you the freedom to live a life of your choice.
2) Sharpening critical skills - Education helps you develop critical skills like decision ,making ,mental
   Agility problem -Solving and logical thinking, people face problems in their professional as well as personal lives. In such situations, their ability to make rational and informed decisions comes form how educated and self -aware they are.

Education also breeds creativity and innovation when you take time to understand how the world works presently, only then can you come up with solutions and alternatives for existing problems.

The Impact of Digitalization Education

Kundan Kumar
B.Ed. 2022-24

Digital transformation in education plays a vital role in providing high-quality education and equal opportunities to learners all over the world. Since the outbreak of the COVID-19 pandemic, over 1.5 billion students have switched to online education. To make the learning process smooth and seamless for every student, educational institutions and governments develop digital transformation plans and implement necessary changes.

Education is one of the world's single largest industries, making up more than 6% of GDP. It is expected that the global spending's will nearly double in the next five years, reaching $404 billion by 2025. In many ways, this contributes to impact of digitalization on education.

Key Areas of Digital Transformation in The Education Industry:

Where can digital transformation be the most helpful in education? Some of the cases aren't that obvious yet worth considering. So, let us show you some of the critical areas where you can digitalize the learning process.

Evaluating performance:

The process of digitalization in education offers a lot of benefits for students, such as faster access to tests and grades through online systems. E-learning systems allow to submit papers, do instant plagiarism checks, and track attendance. All these factors form students' performance levels that you can easily measure via a digital platform.

अपनी मिट्टी से लगाव

साक्षी कुमारी
डी.एल.एड.2022–24

इंसान के व्यवहार में उसके परिवार के संस्कार के साथ ही उस देश और संस्कृति की झलक भी होती है, जिसमें वह रहता है। जिस मिट्टी में हम जन्म लेते हैं, उसकी खुशबू हममें रहती है। हमारी पैदाइश हो या फिर हम जो जिंदगी जीते हैं, हम उसी के आसपास की चीजों से खुद को जोड़ते हैं। फिर चाहे वह दुनिया का कोई भी कोना हो । मैं भारत से हूँ, मेरी सोच, मेरे विचार, देश के लिए मेरा प्यार, कनेक्शन और नजरिया, सब कुछ देश के मुताबिक ही होगा। वह मिट्टी, जिसमें मेरा जन्म हुआ, जहाँ की संस्कृति के बीच मैं बड़ा हुआ है, उस मिट्टी से लगाव होना बहुत –ही स्वाभाविक है। देश के लिए जो मेरे अहसास है, शायद मैं खुलकर उन्हें बयां न कर सकूं, लेकिन मेरे मन में देश के लिए इज्जत और सम्मान हमेशा ही रहेगा। इस देश ने मुझे काफी कुछ दिया है। मेरी पहचान इसकी वजह से हैं। देशभक्ति दिखाने के लिए अलग से कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी पड़ती है। यह आपके भीतर होती है। रहकर

A Society's Guide for Women: Desire-Duty Conflict through Disney's Lens

"I am no bird; and no net ensnares me: I am a free human being with an independent will." -- Charlotte Bronte

Priti kumari
D.El.Ed. 2022-24

For women, the struggle to prove their worth is real. A woman can be either perfect or a poster-child of blunders. Her existence must have a purpose, a social one to be specie. A woman is sometimes represented by she's in the sea and oftentimes as birds in the sky but never understood for what she truly is, a human-being. The art of story-telling is often underestimated. Stories are the tools with which even a toddler could be fed the darkest truths of life with effectiveness and creativity. The progress of society also depends upon the progressiveness of the stories it deals with. Perhaps, outdated versions of women-centric stories could be one of the reasons behind misconstrued perceptions pertaining to women. One of the most popular sources of women-centric stories has been Disney Princess movies. It is strange how a story which can intrigue as a kid, awe-inspire as a teen, can also disappoint as an adult. These stories begin as a hopeful tale of a naïve young woman only to follow a misogynistic map-work of her character-arc, eventually concluding with a patriarchal idea of happily-ever-after. These stories are often centered around; desire-duty connect where a woman must choose from the list of restrictive desires or socially imposed duties. Abiding by these norms makes a woman, protagonist while a contradictory attitude is equivalent to villainess. The worst part is men in these movies are entitled to both. If we consider Cinderella for instance. Her desire was to attend the ball whereas her duty was her servitude towards her step-family. As a protagonist she chooses her desire only to □nd her prince charming eventually. On the other hand, her step-sisters' Drizzela and Anastasia's desire to attend the ball or collective urge to please their mother is frowned upon and as antagonists, they remain unrewarded till the end. The consistent portrayal of the step-mother as evil, step-sisters as shallow and their conspiracies against Cinderella is a futile attempt of re-establishing the phrase, "Women are women's greatest enemies." Sadly enough most of such princess movies account for similar disappointments. The problem is not in the naivety of Cinderella's desires, considering her past it is even expected. The problem is in dramatic and over-the-top representations of women. Where their desires are extremities of everything, duties are self-deprecating, their destiny often testiness to misogyny. However, it's a good thing that women's representations, especially princess stories are being updated and re-dined to cater to a much more progressive world now. One such example is The Paper-Bag Princess by Robert Munsch. This children's book revolves around a princess who is a damsel, is in distress, but can handle herself. She not only rescues her prince but also prioritizes her self-respect over the prince's arrogance. This book proves that not every woman character from a man's imagination has to be disappointing, some can be liberating too.

□□□

आजादी के बाद का भारत

अनामिका कुमारी
डी.एल.एड 2022–24

15 अगस्त 1947 को हमारा भारत देश आजाद हुआ । इस आजादी को दिलाने में जिन प्रतिभा के धनी देशभक्ति से ओतप्रोत ,रगों में राष्ट्र के लिए ही मर मिट जाने के जज्बे को पालने वाले सहयोग करने वाले लोगों ने आजादी दिलाने में जो भूमिका निभाई वह प्रासंगिक व गौरव करने योग्य है। किंतु उन वीरों को स्वयं का लोभ न रहा कि हम जिस आजाद भारत के स्वप्न के लिए लड़ रहे हैं ,वह हमें नसीब होगा या नहीं ,हम उस स्वतंत्र भारत में सांस ले पाएंगे या नहीं। अतः बहुत से वीरों ने इस स्वतंत्रता संग्राम में लड़ते लड़ते अपने प्राणों की आहुति भी दी एवं आज स्वतंत्रता के 75 साल बीत जाने पर जब हम अपने भारत के डिजिटल इंडिया और शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, अर्थव्यवस्था, लोकतंत्र में मतदान , प्रद्यौगिकी विकास एवं अंतरिक्ष के विभिन्न कार्यक्रम, विविधता में एकता, उत्पादकता में विकास, रेल ,आदि की भूमिका देखते हैं। तो हम कह सकते हैं कि 200 वर्षों का वो संघर्ष सफल होता दिख रहा है। भारत में डिजिटल इंडिया और शिक्षा के प्रसार की बात करें तो शिक्षा की दर स्वतंत्रता के समय मात्र 12 प्रतिशत थी वह अब 74 प्रतिशत हो गई है । लोगों में यह आत्मविश्वास उत्पन्न हो रहा है कि शिक्षा ही जीवन का आधार है ।

वहीं आईटी के क्षेत्र में भी भारत ने खूब विकास प्राप्त किया है जिससे विश्व स्तर पर आपसी जुड़ाव तो प्रभावित हुआ ही है साथ ही यह हर एकल व्यक्ति के क्रिया कलाप भी प्रभावित करता है।

महिला सशक्तिकरण जो वर्तमान में काफी चर्चित है इसके विकास की चिंगारी इतिहास से ही महिला स्वतंत्रता सेनानियों से ही प्रारंभ हुई जो अब विशाल रूप लेकर समाज की कुप्रथा को खाक करने में अग्रसर है।

चाहे पंचायती राज में महिलाओं की बढ़ चढ़कर भागीदारी हो, चाहे प्रधानमंत्री, मुख्य मंत्री, आईएएस, आइपीएस आदि के रूप में कार्य कर रही महिला , या टैक्सी ड्राइवर के रूप में आदि क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका स्पष्ट दिख रही है। भारत की अर्थव्यवस्था में वृद्धि जो बाहरी ताकतों से लड़ने में सहायता करती है उसमें से खाद्य पदार्थ के उत्पादन में वृद्धि हो, या चीनी ,कपास या विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि हो । सब में यह तेजी से विकास कर रहा है। सड़कों, बंदरगाहों, रेल ,मेट्रो आदि में विकास के स्तर को देखा जा सकता है। इसका एक कारण अखंड भारत का निर्माण भी रहा जहां 560 देशी रियासतों को बिना गोलीबारी व रक्त पात के एकजुट किया गया। साथ ही लोकतंत्र को सुचारू ढंग से चलाने हेतु मतदान आदि बढ़ावे को देखा जा सकता है। आजादी के बाद हमारे भारत में विभिन्न प्रोद्योगिकी एवं अंतरिक्ष कार्यक्रम के विकास के बिना तो बात आगे ही नहीं बढ़ सकती। चाहे मंगल ग्रह की कक्षा में पहुंचने वाले भारत के दुनिया का चौथा स्थान प्राप्ति , की बात करें या चंद्रयान को लॉन्च करने की बात करें ।इस प्रकार घरेलू संचार के लिए उपग्रह विकसित करने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया। उत्पादन के मामले में भी हमारा भारत कभी पीछे नहीं हटा। दूरसंचार की बाजार में बढ़ती मांग आई.टी, इसके बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों की रुचि को देखा जा सकता है । विश्व का सबसे बड़ा दुपहिया वाहनों का उत्पादक भारत, दुनिया की सबसे कम लागत वाली सुपर कंप्यूटर बनाने वाला देश भी भारत ,तथा दुनिया के कुल हीरो में से कुल 90 प्रतिशत हीरे भारत देश में ही प्रसंकरित व पॉलिश किए जाते हैं। अतः यह सब उपलब्धियां भारत की विकसित होती अर्थव्यवस्था, व सामाजिक बदलाव ,औद्योगिक वृद्धि ,सैनिक शक्ति के विस्तार, को दर्शाता है ।कि किस प्रकार सैन्य की मजबूती हेतु भी विभिन्न प्रकार के वाहनों, हथियारों आदि को शामिल किया जा रहा है, उनका निर्माण किया जा रहा है।जिसका प्रयोग रक्षा के लिए ही होता रहा है। भारत ने आजतक किसी देश पर कब्जा नहीं किया यह इसकी वैभवता को दर्शाता है। यह सदैव वसुधैव कुटुंबकम में विश्वास रखता आया है। भारत सैन्य शक्ति में भी सदैव स्वयं पर विश्वास रखता आया है वह आत्मनिर्भरता भी, इस क्षेत्र में समय–समय पर दिखाई देती है। महामारियों से उबरने हेतु भी भारत की एकजुटता दिखाई देती है। अब धीरे–धीरे तकनीकी के विकास ने भारतीय समाज को एक नया नजरिया दिया जहां अनेकता में एकता तथा नारी की आवाज को बुलंद करने के प्रयास दिखते हैं। हमारा देश महान है इसकी महानता बरकरार हम प्रत्येक भारतवासी के सहयोग से ही संभव होगी। इतिहास इसका गवाह रहा है।

स्वामी विवेकानन्द के वो पाँच शब्द...

अंकित कुमार
डी.एल.एड. 2022–24

12 जनवरी 1863 यही वो तारीख थी जब इस देश में एक जैसे व्यक्तित्व ने जन्म लिया जिसका पूरा जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन गया।

नाम नरेंद्रनाथ दत्त! जिसे आगे चलकर दुनिया ने स्वामी विवेकानंद के नाम से जाना। स्वामी विवेकानंद ने महज 25 वर्ष की उम्र मेंदुनिया की मोह माया को त्याग कर संन्यास ले लिया और निकल पड़े हिन्दू धर्म और सनातन संस्कृति के प्रचार–प्रसार में।उनके जीवन में एक वक्त ऐसा आया जब उन्होंने पूरे विश्व को हिंदुत्व और अध्यात्म का ज्ञान दिया। तारीख थी 11 सितम्बर 1893उस वक्त पश्चिम के सारे देशों की नजर थी भारत से आये भगवाधारी 30 साल के युवा पर। मुख पर ज्ञान का तेज और दिखने मेंबिलकुल साधारण!

स्वामी विवेकानंद स्टेज की ओर बढ़े और कुछ समय शांत रहने के बाद बोले– "अमेरिका के मेरे भाइयों और बहनों" स्वामीविवेकानंद के ये 5 शब्द इतिहास के पन्नों में वो शब्द बन गये जिसने आर्ट इंस्टीट्यूट ऑफ शिकागो को पूरे दो मिनट तक तालियोंकी गड़गड़ाहट से गूंजने पर मजबूर कर दिया। इन शब्दों ने ये साफ कर दिया की वे उस देश से आते हैं जहां वसुधैव कुटुम्बकम्सनातन धर्म का मूल संस्कार और विचारधारा है।

7000 लोग केवल इसलिए स्वामी विवेकानंद के इन शब्दों से मंत्र–मुग्ध हो गए क्योंकि उन्हें लगा ही नहीं था की हजारो मील दूरसे आया कोई व्यक्ति उन्हें अपना भाई और बहन कहकर संबोधित कर सकता है। स्वामी विवेकानंद ने आगे कहा–

मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे देश से हूं, जिसने इस धरती के सभी देशों और धर्मों के सताए लोगों को अपनी शरण में रखा है।

आपने जिस स्नेह के साथ मेरा स्वागत किया है उससे मेरा दिल भर आया है, मैं आपको अपने देश की प्राचीन संत परंपरा की तरफ से धन्यवाद देता हूं। मैं आपको सभी धर्मों की जननी की तरफ से भी धन्यवाद देता हूं और सभी जाति, संप्रदाय के लाखों, करोड़ोंहिंदुओं की तरफ से आभार व्यक्त करता हूं। मेरा धन्यवाद कुछ उन वक्ताओं को भी जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनिया में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों से फैला है।

ये वो भाषण है जिसने पूरी दुनिया के सामने भारत को एक मजबूत छवि के साथ पेश किया।

□□□

मेरे सपनों का भारत 2047

दिव्यांशु
डी.एल.एड. 2022–24

मैं 2047 में अपने सपनों के भारत को एक महान देश के तौर पर कल्पना करती हूँ। 25 साल बाद साल 2047 में देश को आजादी मिले 100 साल हो जाएंगे। आने वाले 25 साल देश के लिए अमृतकाल हैं। हालांकि देश पिछले 75 वर्षों से निरंतर विकास के पथपर है, लेकिन आने वाले 25 वर्षों में हम भारतीयों को उतना ही शक्तिशाली बनना होगा जितना हम पहले कभी नहीं थे।हमें संसाधनों के इष्टतम उपयोग के साथ कार्बन मुक्त और हरित विकास के साथ आगे बढ़ना चाहिए। पर्यावरण सबसे महत्वपूर्णविषय है, आज की बढ़ती जनसंख्या के कारण हम जिस तरह पर्यावरण को नष्ट करते जा रहे है यदि यही हाल रहा तो भविष्य मेंआने वाली पीढ़ी चैन की सांस भी नही ले सकेगी।हमें एक लक्ष्य निर्धारित करना होगा कि स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करने के बाद हम भारत को कहां देखते हैं। इसके लिए सभीदेशवासियों को बिना किसी भेदभाव के मिलकर देश के विकास के लिए काम करना होगा, ताकि देश में एकता की भावना पैदा होऔर खंडित सोच से मुक्ति मिल सके। वस्तुतः इस 'अमृतकाल' का लक्ष्य एक ऐसे भारत का निर्माण करना है जिसमें सभी आधुनिकहों। मैं 2047 में एक ऐसे भारत की कल्पना करती हूँ जिसमें हमारा जीवन समृद्ध हो और हम किसी देश के सम्मुख हाथ न फैलाएं।

हम 2047 तक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें एक बार फिर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करने मेंसक्षम हो। हमारी संस्कृति विश्व की श्रेष्ठ संस्कृतियों में से एक है। 2047 तक भारत को एक ऐसा देश होना चाहिए जहां सभी केलिए समानता की स्वतंत्रता हो। महिलाएँ सुरक्षित हो, शिक्षित हो, महिलाएँ सड़क पर स्वतंत्र रूप से चलें, सभी व्यक्तियों कोस्वास्थ्य सुविधाएँ मिलें, चाहे वह अमीर हो या गरीब।

□□□

हिन्दी भाषा

लक्ष्मी कुमारी
डी.एल.एड. 2022–24

हर देश की अपनी भाषा होती है। जैसा की हम सब जानते हैं भाषा का प्रयोग मनुष्य अपने आचारों विचारों का आदान–प्रदान के लिए करता है।

भारत देश में अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग भाषाएं बोली जाती है, पर हिंदी हमारी देश की राष्ट्रीय भाषा है। आज भारत की आजादी को 75 वर्ष हो गए हैं। 26 जनवरी 1950 को जब संविधान बना तो हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया।परंतु अंग्रेजों की अंग्रेजी के कारण हिंदी भाषा को जितना सम्मान मिलना चाहिए उतना ना मिल सका। अंग्रेजी बाजार में पिछड़ती हिंदी आजकल अंग्रेजी बाजार के चलते दुनियाभर में हिंदी जानने और बोलने वाले को अनपढ़ या एक गंवार के रूप में देखा जाता है या यह कह सकते हैं कि हिन्दी बोलने वालों को लोग तुच्छ नजरिए से देखते हैं। हम भारतीय आज अंग्रेजी भाषा में इस कदर प्रवेश कर चुके हैं।हम सोचते हैं कि यदि किसी को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं तो इसका अर्थ यह माना जाता है कि वह मनुष्य किसी काबिल नहीं है ।आज के समय में मनुष्य की काबिलियत उसकी भाषा से तय की जाती है ना कि उसके ज्ञान तथा उसकी क्षमता से।जैसे हमने वह कहावत सुनी है ना ष्अंग्रेज चले गए अंग्रेजी छोड़ गएष्। यदि अंग्रेजी भारत में रह गई है तो यह भी हम भारतीयों की वजह से संभव हो पाया है क्योंकि उस समय हम भारतीयों ने अंग्रेजी को बोलने तथा सीखने में अपनी शान समझी ।अंग्रेजों ने भारतीयों पर राज किया अपनी भाषा सिखा कर गए। यह तो हम भारतीयों का दुर्भाग्य है कि हमने उनकी भाषा को इतना महत्व दिया उतना हम अपनी मातृभाषा को भी ना दे सके। और आज का मनुष्य हिंदी भाषा का प्रयोग करते हुए हिचकिचाता है। अंग्रेजी भाषा को अंतरराष्ट्रीय का दर्जा मिला हुआ है।इसके पश्चात भी बहुत से देश अपनी भाषा का ही प्रयोग करते हैं ।ऐसा नहीं है की अंग्रेजी भाषा नहीं सीखते परंतु अपनी भाषा को महत्व अधिक देते हैं ।यदि आज हिंदी भाषा इतनी पीछे है और अंग्रेजी भाषा इतनी आगे तो उसका कारण हमारे देश की शिक्षा प्रणाली है। हमारे देश के नेताओं ने अपने भाषणों का माध्यम अंग्रेजी चुना जिसको सुनने से लोगों में इसको सीखने की जिज्ञासा बढ़ी और शिक्षा संस्थाओं ने अंग्रेजी भाषा का प्रयोग इस कदर बढ़ा दिया कि हिंदी बोलने वाले लोगों को अपने आप में शर्मिंदगी महसूस होने लगी।कहने को लोगों को हर दिवस याद रहता है परंतु बताते हुए दुख होता है कि हिंदी दिवस याद रखना लोग जरूरी नहीं समझते। शिक्षा संस्थाओं में 14 सितंबर के दिन बड़े बड़े भाषणों के साथ हिंदी दिवस मनाया जाता है परंतु अंग्रेजी भाषा में बोल कर।हमारे भारत में कामकाज 2 भाषाओं में किए जाते हैं परंतु हम दोनों भाषाओं में यह देखें कि कौन सी भाषा अधिकतम प्रयोग में लाई जा रही है तो बड़ा दुख होता है बताते हुए कि वह अंग्रेजी भाषा है हर जगह अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है। जिसमें की अधिक भारतीय जनसंख्या हिंदी भाषा का प्रयोग करती है। जिसके कारण वह अधिक जानकारियों से वंचित रह जाता है।पहली बार सन् 2003 में अटल बिहारी वाजपेई ने अपने

जीवन में सर्वाधिक प्रसन्नता का क्षण संयुक्त राष्ट्रीय महासभा में दिया अपनी हिंदी भाषा के भाषण को बताया था। वाजपेई का वह भाषण ऐतिहासिक था, संयुक्त राष्ट्र महासभा में यह पहली बार हुआ था कि किसी भारतीय ने हिंदी में भाषण दिया था। अटल जी का वह ऐतिहासिक भाषण है जिसने दुनिया में हिंदी भाषा को नई पहचान दिलाई। यही कार्य हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी किया उन्होंने भी संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण दिया था इसको ध्यान में रखते हुए हमें अपनी भाषा का सम्मान बचाना होगा और लोगों में इसको बोलने तथा सीखने की जागरूकता उत्पन्न करनी होगी। हिन्दी दिवस मनाने का अर्थ है गुम हो रही हिन्दी को बचाने के लिए एक प्रयास। कोई भी व्यक्ति अगर हिन्दी के अलावा अन्य भाषा में पारंगत है तो उसे दुनिया में ज्यादा ऊंचाई पर चढ़ने की बुलंदियां नजर आने लगती हैं चाहे वह कोई भी विदेशी भाषा हो, फ्रेंच या जर्मन या अन्य और ये कतई सही नहीं है। हमें हिंदी को सरल बनाना होगा और इसे कठिन संस्कृत संस्करणों से मुक्त करना होगा। अन्यथा हमें हिंदी की विलुप्त होती भूमि को स्वयं के हिंदुस्तान में देखना होगा। हम हिंदी दिवस पर यह प्रयास करेंगे कि लोगों में हिंदी का स्वाभिमान जगाया जाए क्योंकि हम भारतीयों की हिंदी शान है और हमारे देश का अभिमान है।

हिंदी **हैं हम वतन हैं**

हिन्दोस्तान **ह**मारा

जय **हिं**द।

''जल है तो कल है''

खुशबू कुमारी
डी.एल.एड. 2022–24

पृथ्वी के सभी प्राणियों के जीवन के लिए जल बेहद अहम होता है। बिना जल के हम सब एक भी दिन जीवित नहीं रह सकते हैं, ऐसा कह सकते है कि 'जल है तो कल है' क्योंकि मनुष्य का जल के बिना जीवन संभव नहीं हैं। क्योंकि सभी मनुष्य, पशु–पक्षी, जानवर, पेड़–पौधे, कीट–पतंग आदि जल पर निर्भर करते हैं। और मनुष्य के शरीर का आधा से ज्यादा भाग जल का ही होता है। मनुष्य का शरीर पंचतत्व से मिलकर बना है। और जिन पंचतत्वों से बना है, कुछ इस प्रकार हैं,(पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) और इन सभी पंचतत्व में से जीवन में जल तत्व की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं।

जल का महत्व हमारे जीवन के लिए नहीं बल्कि विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में इस्तेमाल होता हैं। जो इस प्रकार है–जल का उपयोग खाना पकाने, घर साफ करने, कपड़े धोने, नहाने, सिंचाई व मत्स्यपालन, औद्योगिक कार्य, एवं इमारतों, पुलों, नालियों, सड़कों आदि के निर्माण में किया जाता हैं। नदियों और नहरों, जलाशयों, कुंडों और तलाबों, आर्द्र भूमि, झीलों, वर्षा का जल एवं समुद्र से जल प्राप्त करते हैं।

हम जानते है कि पृथ्वी पर 3 चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है। और लगभग 97 प्रतिशत जल सागर और महासागरो में पाया जाता है। जो खारा होने के कारण पीने योग्य नही है, 3 प्रतिशत ही जल केवल पीने योग्य है। जिसमे से 2 प्रतिशत पानी बर्फ और ग्लेशियर के रूप में है। मात्र 1 प्रतिशत पानी तरल रूप में पीने योग्य है। इस प्रकार जल के बिना कल की कल्पना भी नही की जा सकती।

हालांकि हम जल के महत्व को जानते है समझते हैं, कि जल ही जीवन है। पर इसके बावजूद भी जिन जगहों पर लोग पानी की कमी से जूझ रहे है वहां के लोग तो इसके महत्व को समझ रहे है, परन्तु जिन जगहों पर इसकी कोई कमी नही है वहां लोग अनावश्यक कामों जैसे फर्श धोना, नालियों में बहाना, कपड़े धोने में अत्यधिक पानी का उपयोग करना, गाड़ी धोना आदि जैसे कार्य करके इसे व्यर्थ करते है।

इसलिए कहा जाता है, की जल की असली कीमत वही बता सकता है, जो रेगिस्तान की तपती धूप से निकल कर आया हो। इसलिए हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही मुमकिन है। हम हमेशा से सुनते आ रहे हैं कि जल के बिना सुनहरे कल की कल्पना भी नहीं की जा सकती हैं।

जल बिन जीवन है नहीं, जल देता है प्राण ।
बड़ा ही शक्तिवान जल, करे सृष्टि निर्माण ।

इस पूरे ब्रह्मांड में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहां जल इतनी बड़ी मात्रा में पाया गया हैं। इसलिए हम ऐसा कह सकते है कि जल हमें प्रकृति द्वारा दिया गया एक अनमोल उपहार हैं। जिसका हमें सम्मान करना चाहिए।

लोरेन ईसेली का कहना है कि– ''यदि इस ग्रह पर जादू है, तो यह पानी में निहित है''।

मध्यकाल में संत रहीम ने भी जल संरक्षण की बात अपने दोहे के माध्यम से कही थी। जो समाज में लोकप्रिय है,–

इस प्रकार हम देखते हैं कि जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए साथ ही जल संरक्षण की जागरूकता फैलाने के लिए ब्राजील में रियो डी जेनेरियो में वर्ष 1992 में आयोजित पर्यावरण तथा विकास का संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्व जल दिवस मनाने की पहल की गई तथा वर्ष 1993 में संयुक्त राष्ट्र ने अपने सामान्य सभा के द्वारा निर्णय लेकर 22 मार्च को जल दिवस मनाने का निर्णय लिया। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों के बीच में जल संरक्षण का महत्व, साफ पीने योग्य जल का महत्व आदि बताना हैं। जल संरक्षण की बढ़ती समस्या को देखते हुए विश्व स्तर पर जल के संरक्षण रखरखाव पर जब तक फैलाने के लिए प्रत्येक वर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस के रूप मनाया जाता हैं।

जल के महत्व को बताने के लिए हर वर्ष विश्व जल दिवस के लिए एक विषय (थीम) तय की जाती है। 2021 का विषय (थीम) वैल्यूइंग वाटर पानी का महत्व था। इसका लक्ष्य लोगों को पानी के महत्व को समझाना था।

2022 का विषय (थीम) ग्राउंडवाटर मेकिंग इनविजिबल विजिबल भूजल, अदृश्य दृश्यमान बनाना है। हर साल विश्व जल दिवस के मौके पर कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और पानी के महत्व और जल संरक्षण के बारे में बताया जाता है। परन्तु, हमें केवल इस दिन ही नहीं बल्कि हर दिन हो रहे जल की बर्बादी को रोकने (कम करने) का प्रयास करना हैं। क्योंकि हम सब कल का भविष्य है और हमें ही भविष्य को सुरक्षित करना होगा क्योंकि हम ही भविष्य में आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं। इसलिए हम सभी को सकारात्मक कदम उठाना चाहिए और हर रोज जल को कैसे सुरक्षित रखें उसके बारे में सोचना चाहिए।

जल की बर्बादी को रोकिए।
बिना जल होगा क्या सोचिए।।
जल है जीवन की आस ।
बचा रहे इसके लिए करते रहो प्रयास।।
जल संरक्षण का सदा, मानव करो प्रयास ।
वर्ना कभी भविष्य में, नहीं बुझेगी प्यास ।।

लक्ष्य

खूशी कुमारी
डी.एल.एड. 2022–24

लक्ष्य जो स्वयं में तब तक पूर्ण नहीं जब तक मेहनत ,संघर्ष ,एवं प्रयासरत व्यक्तित्व उसके साथ न हो। पृथ्वी पर जीवंत तमाम जीव का लक्ष्य भिन्न हो सकता है ,किंतु उसे पाने हेतु इन 3 चीजों का होना अनिवार्य है मेहनत, संघर्ष ,एवं प्रयासरत व्यक्तित्व। वह व्यक्तित्व जो इस यात्रा का प्रारंभ करता है कई ठोकरें खाता है ।उपहासों का सामना करता है और एक समय ऐसा आता है जब उसका मन इतना दृढ़निश्चयी हो जाता है कि फर्क ही नहीं पड़ता कि कोई सामने से उसका आदर कर रहा है या उपहास वह तो केवल उस लक्ष्य को पाने में मग्न हो जाता है।

व्यक्ति जो प्रारंभ करता है यात्रा लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कई बार उसे पता नही होता किंतु उसका व्यक्तित्व निर्माण इस प्रकार हो जाता है जैसे एक गुलाब जो काफी समय से सूर्य का प्रकाश, खाद ,जल ,आदि पाकर खिल तो जाता है किंतु माली उसे वहीं छोड़ चला जाता है।

तो वह शायद माली के हाथ लगे या ना लगे किंतु सूख कर मिट्टी में मिल कर इतना सामर्थ्यवान हो जाता है कि स्वयं जैसे कई और पुष्पों को तैयार करने की क्षमता रखता है। इसी प्रकार किसी लक्ष्य की तैयारी कर यदि उसे प्राप्त न कर सकें तो खेद प्रकट नही करना चाहिए क्योंकि इस तैयारी ने एक लक्ष्य न दिलाया हो परंतु बाकी अनेकों लक्ष्य के लिए हमे बहुत योग्य बनाकर चला जाता है।

लक्ष्य की खोज हेतु स्वयं को तमाम तरह के सुविधाजनक वातावरण से बाहर निकलना होता है उसे पाने हेतु कला की खोज का जो द्वंद हृदय में उठता है वही व्यापक रूप तब लेता है जब अंदर से उपजी आवाज की खोज बाहरी परिवेश में खोज कर जाती है। वह बाहरी परिवेश जो संघर्ष की व्याख्या हर छोटे से बड़े स्तर की ओर हमारा ध्यान खींचकर समझाता जाता है। उसी विद्यालय में बैठकर विद्यार्थी जब अपनी परीक्षा दे रहा होता है उसी विद्यालय में जब वह खिड़की से उसी विद्यालय का निर्माण करते दंपत्ति बालकों को देखता है जिनके पास।

लक्ष्य तक पहुंचने के सफर में मानव मूल्य वह साधन है जो वहां पहुंचा कर सम दृष्टि प्रदान करती है। इस सृष्टि को पाना ही पहला लक्ष्य होना चाहिए ।ताकि हम अन्य संघर्षरत के प्रयासों को मिट्टी में ना मिलने दें। एक पर्वतारोहण चोटी पर ध्वज फहराने हेतु बढ़ता है किंतु उसकी विजय तब पूर्ण होती है जब वह अपनी मानवता का अपने हृदय से उपजे उस करुणा का जो साहस के मोटी परतों के बीच धुंधली ही सही किंतु उभरकर अवश्य आती है। तब व्यक्ति अपने से कमजोर का हाथ व साहस का साथ नहीं छोड़ता।

महात्मा बुद्ध ने भी लक्ष्य की प्राप्ति की यात्रा तब शुरू कर दी जब उन्हें आभास हुआ यदि जीवन में जन्म लेकर एक न एक दिन इस देह का अंत हो जाना है तो इस तन, मन, का लक्ष्य क्या है? यह क्यों मिला है ।

अतः कोई भी जीव लक्ष्य रहित होकर जीवन जिए,तो वह इस नश्वर शरीर का ऋण नहीं चुका सकता। प्रयासरत होना ही पड़ता है चाहे वह लक्ष्य प्राप्त हो ना हो किंतु एक बार उसकी आंख से आंख मिलाकर उसके समीप खड़े होकर यह जरूर दिखा देना है कि ''हमने प्रयास नहीं छोड़ा''।

सम्राट अशोक ने भी कलिंग के युद्ध में जिस प्रेम को पाने के लिए जिसे लक्ष्य मानकर युद्ध शुरू किया था उसी का अंत हो जाने पर उस युद्ध का त्याग भी कर दिया था। चूंकि उस प्रेम को पाने में थोड़ी जल्दबाजी थी, थोड़ी हिंसा ,थी मानव संहार था । इसलिए उसका प्रेम भी तलवार उठा कर युद्ध हेतु देश प्रेम से ओतप्रोत खड़ा था। किंतु हिंसात्मक से भरा मन, क्रोध की इतनी बड़ी शय्या बना चुका था की बुद्धि की आंखें अंधी होकर उस लड़की के सिर को ही काट देती है।जिसके लिए उसने युद्ध किया अंत में वह इसे नहीं पा सका।

अंततः लक्ष्य पथ पर चलने हेतु धैर्य, मानवता भी, उतने ही महत्वपूर्ण है जितना साहस ।इस पथ से प्रेम भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी लक्ष्य को पाने की ज्वाला। अन्यथा केवल ज्वाला, पथ से गुजरते समय तमाम प्रेम को राख कर सकती है। और ऐसे लक्ष्य का कोई मूल्य नहीं रह जाता। स्वयं से गहरा प्रेम,स्वयं के स्तर से उठकर समाज के स्तर पर जाएगा तभी सकारात्मक लक्ष्य की यात्रा के नाम से जाना जाएगा।

''कलम यदि रुक न जाती तो
आगे सोच कैसे पाता मै
इस पथ पर गर बाधा न होती
दूजा कैसे अपनाता मैं''

ऑनलाइन शिक्षा : एक विकल्प

चाँदनी कुमारी
रौल न0 11
बी.एड. 2023–25

शिक्षा जीवन को सरल एंव अर्थपूर्ण बनाने का आधारभूत स्तंभ है। शिक्षा एक सच्चे मित्र की तरह है। जो किसी भी परिस्थिति में साथ नहीं छोड़ती है । मानव यदि शिक्षा को अपना परम मित्र बना लेता है ,तो उसका जीवन आनन्दमय एंव कल्पनाओ से भरा होता है । शिक्षा के विकास में भावनाओं का महत्व सबसे ज्यादा होता है । क्योंकि शिक्षा का स्तर वहीं होता है, जहॉ प्रेम संस्कार एंव कल्पना होती है।

COVID – 19 महामारी के प्रकोप के कारण पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में जबरदस्त बदलाव आया है , जिसमें लैपटॉप और ऑनलाइन कक्षाओं ने किताबो और कक्षाओं की जगह ले ली है । आनलाइन शिक्षा के परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल क्रांति हुई है । कोरोनावायरस (या कोविड – 19) जैसी महामारी ने शिक्षा सहित मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रो को एक आईना दिखा दिया है, कि हमको अपनी जिन्दगी में एक तरीके को अपनाना चाहिए । विशेषकर आधारभूत आवश्यकताओं में चूँकि शिक्षा एक आधारभूत आवश्यकता में से एक है और अधिकार भी है । इसलिए आज के जमाने में ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने की जरूरत है।

कोविड – 19 कोरोना वायरस के तेजी से फैलने के कारण सम्पूर्ण मानवीय गतिविधियों को रोकना आवश्यक हो गया था। संक्रमण से बचाव का एक मात्र उपाय लॉकडाउन था । लॉकडाउन के साथ ही सभी शैक्षणिक गतिविधियॉ बन्द हो गई थी । इसके बाद एक शिक्षण की प्रक्रिया को बरकरार रखने के लिए ऑनलाइन तकनीकी को लाया गया। जिसमे बिना सम्पर्क में आए घर बैठे ही कक्षाओं का संचालन होने लगा । वे शिक्षक के बीना सम्पर्क में आए ऑनलाइन के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने लगे । करोड़ो विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों को भी ऑनलाइन तकनीक को सीखने और उपयोग करने का अवसर मिला । ऑनलाइन शिक्षा के लिए बहुत सारे Software लाए गए थे । जो कि बहूत लाभदायक थी । जैसे – Zoom , Byju's , Google meet , Vedantu आदि ।

कोरोनाकाल में बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने का एक मात्र विकल्प ऑनलाइन शिक्षा रहा है । माध्यमिक विद्यालयों में अधिकतर छात्र– छात्राएँ ग्रामीण क्षेत्र से गरीब व मध्य परिवार से होते हैं। इस कारण कहीं पर नेट–वर्किंग तो कही पर स्मार्ट फोन आदि । की समस्या सामने आई हैं । शिक्षको की तरफ से बच्चों को ऑनलाइन व्यवस्था के तहत बेहतर शिक्षा देने की कोशिश कि गई है । कोरोना संक्रमण काल में लॉकडाउन के दौरान कई माह तक स्कूल कॉलेज सभी बन्द रहे हैं । बच्चों को शिक्षण कार्य से जोड़े रखने के लिए ऑनलाइन व्यवस्था की गई है । कोरोनाकाल में प्रयोग के तौर पर शुरू हुई ऑनलाइन शिक्षा का चलन बढ़ा है । जो शिक्षा के क्षेत्र में काफी बेहतर विकल्प बनकर सामने आई ।

भारत में डिजिटल शिक्षा का प्रभाव

Ajay Kumar
Roll No.-67
Session-2022-24

डिजिटल शिक्षा का महत्व :–

डिजिटल माध्यम से छात्रों को ना केवल किताबी जानकारी हासिल करना बल्कि व्यावहारिक और तकनीकी ज्ञान भी दिया है। डिजिटल माध्यम से छात्र किसी भी समय ऑनाईन कक्षाओं में शामिल हो सकता है। या कहीं भी सीख सकता है। भारत डिजिटल शिक्षा की दिशा में तंजी से प्रगति कर रहा है, जिसमें की स्कूल, विश्वविद्यालय और कॉलेज द्वारा डिजिटलीकरण को अपनाने, इंटरनेट की पहुँच बढ़ाने और छात्रों की बढ़ती मांग से समार्थिक हैं। आज डिजिटल शिक्षा के माध्यम से छात्र घर बैठे विभिन्न प्रकार के प्रतियोगी परिक्षाओं का पास कर अपना नाम रौशन करते है।

इंटरनेट की धीमी गति :–

जब डिजिटल शिक्षा की बात आती है, तो इसका अर्थ इस बात से होता है कि शिक्षकों के साथ–सीधे वीडियो कॉल के माध्यम से संवाद स्थापित किया जाए या ऑनलाईन वीडियो के माध्यम से व्याख्यान दिये जाए। दोनों कार्यो के लिये एक स्थिर, हाई स्पीड इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता होती है।

इंटरनेट की पर्याप्त गति के आभाव में ऑनलाईन शिक्षा का उद्देश्य विफल हो जायेगा। इस दिशा में हम केन्द्रशासित प्रदेश जम्मू–कश्मीर के छात्रों द्वारा किये जा रहे नियमित विरोध प्रदर्शन को देख सकते है। इसका कारण यह है, कि उचित इंटरनेट कनेक्शन के आभाव में वे अध्ययन करने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं।

संदर्भ

करोनावायरस महामारी के कारण शिक्षा क्षेत्र इस समय गंभीर संकट का सामना कर रहा था। उस समय सभी शिक्षण संस्थान बंद हो गया था। उस समय डिजिटल शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से छात्र घर में रहकर अपना शिक्षा पुरा कियें, और अपना शिक्षा बाधित होने से रोंके।

निष्कर्ष

डिजिटल शिक्षा सभी संवर्गों के शिक्षा का एक आनंददायक साधन है। विशेष रूप से बच्चों के सीखने के लिये यह बहुत प्रभावी माध्यम साबित हो रहा है, क्योंकि मॉलिक ऑडियों–वीडियो सुविघा बच्चे के मस्तिष्क में संज्ञात्मक तत्वों में वृद्धि करती है, बच्चों में जागरूकता, विषय के प्रतिरोचकता, उत्साह और मनोरंजन की भावना बनी रही है। वे सामान्य की उपेक्षा अधिक तेजी से सीखते है। डिजिटल लर्निंग को छात्र एक लचीलों विकल्प के रूप में देखते हैं, जो उन्हें अपने समय और गति के अनुसार अध्ययन करने की अनुमति देता है।

जीवन में हमेशा बहता पानी के समान आगे बढ़ों।

अगर ठहरोगे तो खुद का कायी तुम्हें मार डालेगी।।

दीर्घआयु से उत्तम गुणवत्तापूर्ण जीवन

Badri Kumar
Roll -22
Student- B.Ed 2023-25

प्रिय विद्यार्थियों! जीना सभी पसन्द करते हैं मरना भला किसे पसन्द होगा? पर आजकल लोग अपनी अनमोल जिन्दगी को पता नहीं क्यों मरने की भी सोचने लगते हैं और आज इस दुनिया में यह बात काफी अधिक बढ़ गई है यह जो आत्महत्या शब्द है जो पहले किसी और सदी में इतने नहीं सोचे जाते थे जितने अब के युवाजन सोचे जा रहे है पता नहीं क्यों लोग बात–बात पर भीतर से मरने का विचार कोंदते हैं, जरा भी असफलता मिली, निराशाजनक स्थिति प्राप्त हुई, मन की अपेक्षाएँ पूरी नहीं हुई व्यक्ति को लगता है मर जाऊँ तो अच्छा होगा। पहले के लोग किसी को आशीर्वाद देते हुए कहा करते थे, आयुष्मान भवः , चिरंजीवी भवः , दीर्धायु भवः आजकल के लोग आशीर्वाद भी सही ढ़ंग से नहीं देते हैं। क्योंकि लोगों के भीतर यह धारणा बन चुकी है कि जिन्दगी पाकर भी क्या हो जाएगा? जल्दी मर जाएँ तो अच्छा अथवा लोग लम्बा जीते है और जीना भी चाहते है, तब भी वे इस जिन्दगी को कैसे जीना, वे इस कला को नहीं जानते।

आइए हम बात करते है आज इस विषय पर कि दीर्घआयु जीने से बेहतर है गुणवत्तापूर्ण जीवन जीना, बात या महत्व इस बात का नहीं कि हम कितने वर्ष जिएं महत्व इस बात का है कि कैसे जीएं। यह बात कि हम लम्बी जिन्दगी चाहते है तो भला क्यों चाहते हैं और नहीं चाहते हैं तो भी भला क्यों नहीं चाहते हैं? महावीर बुद्ध जैसे महापुरूष तो कहा कहते थे कि न जीने की आकांक्षा करो न मृत्यु की लेकिन ये जीवन मिला क्यों है? इसके महत्व को पहचान लो, हाँ महत्व को पहचानना ही गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने की शुरूआत होगी। जब तक हमें यह ही पता न चले कि हम इस जीवन में आए ही क्यों हैं, तब तक हम गुणवत्तापूर्ण जीवन कैसे जी पाएंगें। पहले हमारे भीतर ये तो स्पष्टता आ जाए कि हममे ये मनुष्य का जीवन क्यों प्राप्त किया है, क्यों धारण किया है?

जीवन में मनुष्य को सब कुछ अर्जित करना होता है हमने यह जो जीवन अर्जित किया है यह भी अपनी भीतर की गुणवत्ता और योग्यता के कारण अर्जित किया है। हमारे भीतर ये भी कुछ ऐसी काबिलियत रही तब इंसान हुए हैं, जानवर नहीं, रेंगने वाले जंतु नहीं, कीड़े–मकोड़े नहीं, पहाड़ और वृक्ष का जीवन नहीं हुए ये जो हमें इंसानी जीवन मिला है ये भी हमारे भीतर में मौजूद जागृति और गुणवत्ता का ही परिणाम ळें

हमलोग स्वतंत्र और स्वाधीन है कि जिन्दगी को किस दिशा में ले जा रहें हैं। जिससे हमारा जीवन गुणवत्तायुक्त और खुशहाल हो जैसे कोई विधार्थी स्कूल जाता है, तो वह स्कूल से क्या चाहता है? यह भी क्लीयर है, लेकिन क्या हमें क्लीयर है कि हम इस जीवन से क्या चाहते है? और अगर नहीं है तो हमें अपने ऊपर इस दिशा में सोचना होगा। खुद को इस दिशा में जाना होगा क्या हम तैयार है? यदि हाँ तो आइए खोजें कि हमें इस जीवन से क्या चाहते हैं? तभी तो हम इस जीवन को गुणवत्तायुक्त बना पाएगें। क्योंकि जो जागृत है वही गुणवान है। जो अपने आपके प्रति बेपरवाह है वह भला कैसे गुणवान हो सकता है हम सब जो कुछ भी करते है वह खुश होने के लिए करते है। हाँ यदि हम प्रत्येक काम को मन से करना शुरू करें चाहे वह हमारी पढ़ाई, जॉब कोई भी सेवा कार्य, इन सभी को मेहनत और ईमानदारीपूर्वक करना होगा तभी हम अपनी जिन्दगी को आनन्दमय और प्रसन्नतापूर्वक जी सकते हैं

प्रसन्नता निःस्वार्थ होती है अनकंडीशनर होती है उस अनकंडीशनर हैप्पीनैस को अगर हम जीना सीख लें तो फिर ये जीवन गुणवत्तापूर्ण हो जाएगा। यानी जीने का तरीका बिल्कुल डिफरेन्ट होगा अब हमारा जीवन भी ठोस जीना नहीं होगा। हमारा जीवन ऐसा नहीं होगा कि जो कोई हमें दुखी कर सके या उदास कर सके या परेशान कर सके। नहीं–नहीं अब हम अपने जीने के खुद मालिक हो सकेंगे। वह ही गुणवत्तापूर्ण जीवन है। अब जीवन फिर ऐसा कभी नहीं होगा कि हम किस्मत के भी गुलाम बने बल्कि स्थिति ये आ जाएगी जैसा किसी शायर ने कहा है कि–

खुदा को कर बुलन्द इतना
कि हर प्रकृति से पहले खुदा,
खुद बन्दे से पूछे बता
तेरी रजा क्या है?

यानी हमारी रजा ही हमारी जिन्दगी बनेगी हमारा चुनाव ही हमारा जीवन होगा तो जीवन में हम जो भी चुनेंगे उस स्वाधीनता को चुनेंगे अस्वाधीनता की कोस्ट पर शालीनता के मूल्यों पर हम कोई तरह की स्थितियां नहीं चाहेंगे। स्वाधीनता सर्वोपरि है। वह स्वाधीनता आती तब है जब हमें जीना आता है और जीना आने का मतलब है बेशर्त्त प्रसन्न होना। आज हमने आप सवों को उस काबिलियत को बढ़ाने का शेयर किया वह है बेशर्त्त प्रसन्न रहना।

शिक्षा पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

प्रवीण कुमार
रौल न0 96
बी.एड. 2023–25

शिक्षा समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा ही हमारे ज्ञान का सृजन करती है, इसे छात्रों को हस्तांतरित करती है और नवीन ज्ञान को बढ़ावा देती है।

आधुनिकीकरण सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। यह मूल्यों, मानदंडों, संस्थानों और संरचनाओं को शामिल करने वाली परिवर्तन की श्रृंखला है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार, शिक्षा व्यक्ति की व्यक्तिगण जरूरतों के हिसाब से नहीं होती है, बल्कि यह उस समाज की जरूरतों से उत्पन्न हाती है, जिसमें व्यक्ति सदस्य होता है।

एक स्थिर समाज में, शैक्षिक प्रणाली का मुख्य कार्य सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ियों तक पहुँचाना है। लेकिन एक बदलते समाज में, इसका स्वरूप पीढ़ी–दर–पीढ़ी बदलते रहता हैं और ऐसे समाज में शैक्षणिक व्यवस्थ को न केवल सांस्कृतिक विरासत के रूप में लेना चाहिए, बल्कि युवा को उनमें बदलाव के समायेाजन के लिए तैयार करने में भी मदद करनी चाहिए। और यही भविष्य में होने वाली संभावनाओं की आधारशिला रखता है।

आधुनिक शैक्षणिक संस्थानों में कुशल लोग तैयार होते हे, जिनके वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान से देश का औधोगिक विकास होता है। व्यक्तितवाद और सार्वभौमिकतावादी नैतिकता आदि जैसे अन्य मूल्यों को भी शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षा आधुनिकीकरण क एक महत्वपूर्ण अस्त्र हो सकता है। शिक्षा के महत्व को इस तथ्य से महसूस किया जा सकता है कि सभी आधुनिक समाज शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर जोर देते हैं और प्राचीन दिनों में, शिक्षा एक विषेष समूह के लिए केंद्रित थी। लेकिन शिक्षा के आधुनिकीकरण के साथ, अब हर किसी के पास अपनी जाति, धर्म, संस्कृति और आर्थिक पृष्ठभूमि के बावजूद शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा है।

निष्कर्ष

आधुनिकीकरण का असर विद्यालयों में भी देख जा सकता हैफ। आधुनिक समय के विद्यालय पूरी तरह से तकनीकी रूप से ध्वनि उपकरणेां से लैस हैं जो बच्चों को अधिक स्पष्ट तरीके से अपनी विषेज्ञता विकसित करने में मदद करते हैं। प्रभावी सुविधाएं विकलांग व्यक्तियों के लिए बाधा मुक्त साधन प्रदानक रती हैं, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय खतरों से मुक्त होती है, छोत्रों और षिक्षकों के लिए पर्याप्त स्थान प्रदान करती हैं, और कक्षा और निर्देषात्मक उपयोग के लिए उपयुक्त तकनीक से लैस होती हैं।

वर्तमान शिक्षण प्रणाली को एक कक्षा प्रणाली की तुलना में कक्षा के स्थानों में अधिक लचीलेपन की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए, छोटे समूहों में एक साथ काम करने वाले छात्र, जिले के कुछ नए प्राथमिक विद्यालयों में कक्षाओं के बीच साझा स्थानों का उपयोग कर सकते हैं।

"शिक्षा **में कला एवं नाटक का एकीकरण**"

Shivangi Raj kiran
Roll -38
B.Ed. 2023-25

भूमिकाः–

शिक्षा हमारे समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण अंग है, जो न केवल ज्ञान के विकास मे सहायता करती है, बल्कि अभिव्यक्ति और संवाद का माध्यम भी है। बस इस तरह कला और नाटक भी शिक्षा को रोचक और सहज बनाने का एक स्वादपूर्ण जरिया है। जो छात्रों को समृद्ध अनुभव प्रदान करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाती है। कला हमारे संस्कृति और विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। यह छात्रों के मानसिक विकास, बौद्धिक विकास के कल्याण को बढ़ावा देती रही है, इसके द्वारा छात्र न केवल अपनी रचणात्मक योग्यता को निखारते हैं, बल्कि समस्याओं का समाधान भी ढूंढते है। जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझाने तथा नाटाको के माध्यम से अलग–अलग सामाजिक और मानसिक संवाद का सामना करने के तरिके सीखाते है। विभिन्न भूमिकाएँ निभाते हुए बच्चे बिना किसी चिंता के सहज तरीका से अपनह सच्ची भावनाओं और व्यक्तित्व को व्यक्त करना सीखते है। कला और नाटक के द्वारा छात्र अपनी हृदय में सुखद भावपूर्ण, अर्थपूर्ण तथा आनंद की अनुभूति उत्पन्न करती है, तथा अपली भावनाओं को सहज रूप में व्यक्त करतें है। इससे छात्रों की भावनाओं का संतुलन बना रहता है तथा उनमें नैतिकता का विकास होता है।

"जीवन **ही कला है**,
कला **ही जी**वन **है**।"

शिक्षा **में कला एवं नाटक का एकीकरण :–**

शिक्षा में कला एवं नाटक के एकीकरण से बच्चों का अधिगम प्रणाली सरल, सुगम एवं रोचक है, और बच्चों में समझ विकसित होता हैं और उनकी उलझन दूर होते चले जाते है। जैसे की हम अगर बच्चो को तस्वीर या नाटक के रूप में कोई टॉपिक समझाएँ तो वो ज्यादा अवलोकन करेंगे, मौखिक तरीका के मुकाबले। क्योंकि जितना बच्चे देखकर चीजों का अवलोकन करते है, समझते है। उतना सुनकर नही कर पाते है। बच्चो को कला एवं नाटक से जोडने के लिए कला के क्षेत्र में कहानी कहने, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सांसकृतिक भागीदारी सहित, विभिन्न प्रकार की शैलियाँ शामिल की गयी है। कला में संगीत, नृत्य, नाटक, लोक कला, वास्तु कला, रचनात्मक लेखन, चित्रकला और संबंधित क्षेत्र जैसे, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, ग्राफिक और शिल्पकला, पोशाक, साथ ही फैशन डिजाइन शामिल है, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं है आमतौर पर लोग कला की उपेक्षा करते हैं क्युकी वो मानते हैं बच्चों के जीवन में सिर्फ सौख है। नाटक और कला बच्चों की शिक्षा और विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है इसलिए, ये सिलेबस छात्रों को एक विषय के लिए नई दृष्टिकोण की पहचान करने और खुद को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का मौका देती है।

यह बच्चों को बड़ी तस्वीर देखने और समस्या सुलझाने की क्षमता विकषित करने की अनुभूति देता है। कला गारंटी नहीं देती है, बच्चों को अनुशासन की परवाह किये बिना एक साथ काम करने का मौका देती हैं। इससे उन्हें समाज में उच्च स्तरीय समर्थ विकसित करने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष

शिक्षा में कला एवं नाटक का एकीकरण छात्रों के सर्वांगिण विकास होता है। इससे छात्रों के समस्याओं का समाधान करने की क्षमता, चिंतनषिलता, रचनात्मकता, तार्किकता, समप्रेषण कौशल और समाज में सहयोग करने का अवसर मिलता है। इसलिए शिक्षा प्रणाली में कला और नाटक के एकीकरण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है ताकी छात्रों में सामाजिक, बौद्धिक संवेगात्मक और भवनात्मक विकास को बढ़ावा मिल सके।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का महत्त्व

शिवम् कुमार
रौल न0 57
बी.एड. 2023–25

किसी भी राष्ट्र के विकास का संबंध शिक्षा से होता है, अगर आज अमेरिका विकसित राष्ट्र है, तो इसका सीधा संबंध शिक्षा से है। शिक्षा मनुष्य में ज्ञान कौशल को मजबूत बनाने में सहायक होती है। शिक्षा केवल मानसिक ज्ञान तक ही सीमित नहीं है, अपितु यह मानव के सर्वागीण विकास करती है। भारत देश में विभिन्न संस्कृति, भाषा, जाति, समुदाय के लोग निवास करते हैं, उन्हें शैक्षिक रूप से मजबूत बनाने हेतु अच्छे अध्यापकों को तैयार करने की आवश्यकता होती है। इन्ही उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु 19वीं सदी में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना की गई ताकि वहाँ से प्रशिक्षत होकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार हो सके। शिक्षण प्रशिक्षण में अध्ययनरत् प्रशिक्षुओं को सह–शैक्षणिक एवं शिक्षणोत्तर गतिविधियों, प्रायोगिक कार्य, एवं शिक्षण कौशल के विकास के लिए उन्हें विभिन्न विद्यालयों में अध्यन – अध्यापन के लिए भेजा जाता है, जहाँ पर प्रशिक्षु अपने ज्ञान अनुभव एवं विषय वस्तु के अनुरूप शिक्षण कौशल का अभ्यास करते हैं। अध्यापन कार्य को बेहतर बनाने के लिए वे कक्षा में जाने से पहले अभ्यास–पाठ योजना के आधार पर वर्ग कक्ष का संचालन करते हैं। वर्ग कक्ष के दौरान वहाँ पर मौजूद पर्यवेक्षक उनकी सारी गतिविधियों का अवलोकन करते हैं। कक्षा समाप्त होने के बाद अभ्यास पाठ प्रस्तुत करने वाले छात्रों को सकारात्मक रूप से वे उनका मार्गदर्शन करते हैं, जिससे छात्रों का मनोबल बना रहता है। इसी तरह पाठ प्रस्तुत करने में छात्रों के उत्साह में वृद्धि होता है। पर्यवेक्षक के प्रति छात्रों का सकारात्मक संबंध उन्हें उनके प्रशिक्षण को मजबूती प्रदान करने में काफी सहयोग देता है। कुशल प्रशिक्षण लेने के लिए अगर प्रशिक्षण संस्थान संकल्पित हो तो निश्चित रूप से एक बेहतर राष्ट्र की परिकल्पना की जा सकती है। एक शिक्षक के गुणों से युक्त शिक्षक के लिए बेहतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जिससे शिक्षकों को स्वयं अभिव्यक्त करने की कला में मदद मिलता है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह अपने प्रशिक्षुओं में एक सौम्य, अनुशासित, सुशील छवि और शील गुणों व कौशलों का विकास करें। छात्राध्यापिकाओं में उन गुणों का प्रादुर्भाव करे जो उनमें दबे पड़े हैं, उनकों पता लगाकर उन्नत बनाएँ, जिसके माध्यम से वह एक प्रभावी शिक्षक बन सके। शिक्षक केवल पढ़ता ही नहीं है, वरन स्वयं भी पढ़ता और सीखता है। किसी भी प्रशिक्षण महाविद्यालय की पहचान उसके प्रशिक्षुओं से होती है। प्रशिक्षण संस्थान अपने प्रशिक्षुओं को एक कुशल, जागरूक, प्रशिक्षित, संस्कारित व निष्ठावान बनाता है। प्रशिक्षुओं का भी यह उत्तरदायित्व होता है कि वे अपने सर्वागीण विकास के लिए महाविद्यालय परिसर में उपलब्ध सभी साधनों का उपयोग करना चाहिए। क्योंकि प्रशिक्षुओं का उत्कृष्ट योगदान से ही प्रशिक्षण संस्थान को नई ऊँचाइयों तक पहूँचने में मदद मिलती है। एक शिक्षक ही है, जो हमेशा चाहता है, कि हर स्त्री–पुरूष पढ़ा लिखा हो और जीवन में सफलता प्राप्त करके आगे बढ़े। जिससे वह स्वयं का, अपने परिवार का, मानव समाज का और देश का विकास करें।

शिक्षा का महत्व

अनिष कुमार
रौल न0 45
बी.एड. 2023–25

शिक्षा मनुष्य का वह गुण है जो उसे सही में मनुष्य बनाता है । जितनी शिक्षा ग्रहण करते जाते हैं उतनी ही अपनी आज्ञान्ता का अहसास हमें होता जाता है। शिक्षा एक ऐसा समुन्दर है जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई वो गहराई का कोई पैमाना नहीं है। जिसने इसे जितना पी लिया उसके लिए उतना ही कम है। शिक्षा सभी के लिए स्वतंत्र है और स्वतंत्र शिक्षा हमें यह बोध कराती है कि हम ज्यादा से ज्यादा शिक्षा ग्रहण है और शिक्षित बनकर अपने परिवार, समाज और देश के विकास में अपना योगदान दें।

शिक्षा हमें ज्ञान और बुद्धि के साथ–साथ अपने आस–पास की दुनिया को बदलने का अवसर भी प्रदान करती है। शिक्षा हमारी भीतर दुनिया को देखने का एक नया नजरिया और जीवन को देखने का एक नया दृष्टिकोण विकसित करती है। शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं देती बल्कि हमें यह भी बताती है कि हमारी जिन्दगी का असली मकसद क्या है, हमें अपने जीवन में क्या करना चाहिए और नहीं करना चाहिए। शिक्षा ग्रहण करते हुए हम अपनी तमाम तरह की मुश्किलों का हल खुद ही निकाल सकते है। शिक्षा हमें जीवन के पाठ के बारे में भी बताती है। शिक्षा हम सभी के जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है और शिक्षा जीवन से नहीं बल्कि शिक्षा से जीवन है।

शिक्षा अंधकार में प्रकाश की किरण है। यह निश्चित रूप से एक अच्छे जीवन की आशा है। इस ग्रह पर शिक्षा प्रत्येक मनुष्य का मौलिक अधिकार है और इस अधिकार को नकारना सही नही है। अशिक्षित युवा मानवता के लिए काफी खराब है। इन सबसे उपर सभी देशो की सरकारों को शिक्षा का प्रसार सुनिश्चित करना चाहिए और जन जन तक शिक्षा की लहर पहुँचानी चाहिए क्योकि विकास तभी संभव है जब राष्ट्र शिक्षित है।

हौसलों की उड़ान

चाँदनी कुमारी,
क्रमांक :– 74,
बी.एड. :– 2023–2025

एक बचपन का जमाना था, जिसमें खुषियों का खजाना था, चाहत चाँद को पाने की थी, पर दिल तितली का दीवाना था, खबर ना थी कुछ सुबह की, ना शाम का ठिकाना था, थक कर आना स्कूल से, पर खेलने भी जाना था, माँ की कहानी थी, परियों का फसाना था, बारिष में कागज की नाव थी, हर मौसम सुहाना था।

अध्ययन का उद्देष्य

सफलता एक दिन में नहीं मिलती है, लेकिन मेहनत करने वाले को एक न एक दिन जरूर मिलती है। जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए हौसला सबसे बड़ी जरूरत है। जहाँ हौसला होता है, वहीं मंजिल भी होती है। हमें अपने आप को इस कदर मजबूत बनाना होगा, कि कोई भी नाकारात्मक भाव हमारे अन्दर न आ पाए। क्योंकि हर इंसान के अन्दर कुछ न कुछ करने की हौसला और जुनून होता है। वह अपने हौसलों से सब कुछ कर सकता है। क्योंकि हौसला हमारे षक्ति को बढ़ाने में मदद करता है।

एक गाँव में एक छोटी–सी लड़की अपने परिवार के साथ रहती थी। उस गाँव में दौड़ प्रतियोगिता की घोषणा हो रही थी, तब वह लड़की उसे ध्यान पूर्वक सुन रही थी, और उसके बाद वो लड़की उस प्रतियोगिता में शामिल होने का निष्चय किया, और अपने माता–पिता से आज्ञा लेकर वह उस दौड़ प्रतियोगिता के स्थान पर पहुँची, और वहाँ के स्थल संचालक से बात की और अपना नाम लिखवा ली। जब दौड़ शुरू हुआ तो वह लड़की दौड़ में सबसे आगे निकल चुकी थी, और जीत के बहुत करीब थी। तभी अचानक उसे किसी के गिरने की आवाज सुनाई दी, तब वह वहीं पर रूक गई, और पिछे मुड़कर देखने लगी, तो उसे पता चला की उसी के दौड़ प्रतियोगिता की एक लड़की गिरी हुई थी। तब वह लड़की वहाँ से वापस आकर उस लड़की को अपना सहारा देते हुए, उठाई और उसे किनारे में ले जाकर बैठा दी, और वह छोटी–सी लड़की फिर से दौड़ना प्रारंभ की, और उस ''दौड़ प्रतियोगिता'' की विजेता घोषित हुई।

निष्कर्ष

उपर्युक्त प्रसंग से हमें यह षिक्षा मिलती है, कि संघर्ष करते समय इंसान को घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि संघर्ष के दौरान ही इंसान अकेला होता है। इसलिए जब हम अपने अन्दर हिम्मत और हौसला रखेंगे, तो कठिन से कठिन समस्या को आसानी से समाधान करते हुए अपनी मंजिल को पा सकते है। यही है, ''हौसलों की उड़ान''।।

हमारी संस्कृति

अभिज्ञान रंजन
रौल न0 23
बी.एड. 2023–25

भूमिका :–

हमारी संस्कृति विश्व की सबसे अनोखी अतुलनीय संस्कृति थी जिसे अंग्रेजो ने तथा मैकाले की शिक्षा पद्धति ने काफी क्षतिग्रस्त कर दिया।

हमारी संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है, जो 5 हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी है। हमारे देश भारत को विविधतापूर्ण देश भी कहा जाता है, जहाँ विभिन्न संस्कृति और परम्परा के लोग शांतिपूर्वक एक साथ रहते है। हमारी संस्कृति की वजह से पहले हमारे यहाँ संयुक्त परिवार होता था और संबंध मजबूत होते थे। अंग्रेजो के आने के बाद अंग्रेजो ने हमारी संस्कृति को इस तरह बर्बाद किया कि पहले मानसिक रूप से शोषण किया फिर आर्थिक रूप से उसके बाद शारिरिक रूप से शोषण किया। मुगलो ने जितना 800 साल में हमारी संस्कृति को नुकसान नहीं पहूँचाया उतना नुकसान अंग्रेज 200 साल में पहूँचा दिया।

हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हो भी गया फिर भी हम अपना संस्कृति नहीं बचा पायें। इसका प्रमुख कारण मैकाले का शिक्षा निति है हमारे भारत के कुछ काले अंग्रेज आजादी के बाद भी मैकाले का शिक्षा निति को अपना लिये। ये उस समय की सबसे बड़ी गलती थी। मैकाले ने शिक्षा को एक ऐसे तवायफ की श्रेणी में डाल दिया जिसको चाहता सब है पर वो किसी का घर नहीं बसा सकती है।

आज मैकाले शिक्षा पद्धति से पढ़ाई तो सब कर लेता है, डिग्रीयाँ भी बड़ी–बड़ी सबको आसानी से मिल जाती है हुनरमन्द कोई नही बनता।

प्रतिभावान कोई नहीं बनता, किताबी कीड़ा सब बन जाने समाजिक विकास किसी का नहीं होता। हर कोई अपने आप को अंग्रेज बनाने के पीछे पागल है। समाज को कुछ काले अंग्रेज, अुंग्रेजों जैसी छोटी और नीच हरकत करते है, जैसे– काले–गोरे में भेद करना, समाज के अन्दर फुट डालना, जात–पात की राजनिति करना, इत्यादि। यही कारण है कि पहले परिवार संयुक्त होता था, जबकि आज परिवार एकल हो गया है। पहले मुसिबत आती थी तो पुरा परिवार मिलकर सामना करता था जबकि आज एकल परिवार या तो डर कर भाग जाता है या आत्महत्या करता है।

मैकाले शिक्षा पद्धति में नौकर बनने के लिए लोग आत्महत्या तक कर लेते है, जबकि हमारी संस्कृति में हर प्राणी खुद का सम्राट होता है। हमारी संस्कृति में घर–गृहस्थ से दूर एक गुरूकुल होता था जिसमें एक गुरूदेव होते थे। गुरूकुल का वातावरण शांत एवं स्वच्छ होता था। गुरूकुल में पढ़ने वाले विधार्थी शास्त्र के साथ– साथ शस्त्र में भी निपुण होते थे। गुरूकुल का हर विधार्थी किसी न किसी कला में महारथ हासिल कर लेता था। उस समय कोई बेरोजगार नहीं था जबकि आज मैकाले शिक्षा पद्धति के कारण भारत की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हमें अपनी संस्कृति बचानी होगी। इसके लिए हमें अपनी शिक्षा निति अपनानी होगी। हमें महात्मा गाँधी की शिक्षा निति अपनानी होगी। जिससे बच्चे पढ़ाई के साथ–साथ हुनरमन्द और प्रतिभावान भी बनें। तब देश में कोई बेरोजगार नहीं रहेगा। देश तरक्की करेगा। हमारा भारत विश्वगुरू बनेगा।

ऑनलाइन शिक्षा के फायदे और नुकसान

Jyoti Kumari
Roll - 01
B.Ed 2023-25

भूमिका

विगत समय को देखते हुए हमलोग ऑनलाइन शिक्षा की महत्व को अनदेखी नहीं कर सकते हैं। हमलोगों ने देखा कि आपातकाल की स्थिति में हर तरह कि प्रणाली (System) प्रभावित हुई, उसमें शिक्षा प्रणाली (Education System) भी लेकिन समय रहते उस आपातकाल स्थिति में भी डिजिटल उपकरण (digital tools) कि मदद से शिक्षा प्रणाली (Education system) आपतकाल कि प्रभाव से बचा रहा।ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली भी विकास (Evolution) कि तरह है जो आपातकाल के बाद भी प्रभावी रहा। विषेष रूप से उच्च स्तरीय शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा का योगदान बढ़ा है। बुनीयादी और माध्यमिक स्तरीय शिक्षा में ऑफलाइन (offline) शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है और आगे भी रहेंगी। शुरूआती शिक्षा में सिर्फ इस विषय कि शिक्षा नहीं दी जाती है जिसकी पुर्ती ऑनलाइन शिक्षा से हो सके, शुरूआती शिक्षा में बच्चों को विषय के साथ–साथ मानसिक ज्ञान पे भी ध्यान दिया जाता है। अनेकों तरह कि कला शैलियों में बच्चें अपना रूचि दिखाते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के फायदे :–

''ऑनलाइन शिक्षा साबित हुई इक वरदान
माध्यम से इसके शिक्षण क्षेत्र में आई नई जान''

ऑनलाइन तरीका से अध्ययन के कई फायदा है यह बहुत सुविधाजनक है इस सुविधा के उपयोग से आप अपने घर पर ही रहकर अध्ययन कर सकते हैं। प्राकृतिक आपदा या आपातकालीन स्थिति में ऑनलाइन अध्ययन की प्रक्रिया का महत्व और भी बढ़ जाता है। इसमें यात्रा नहीं करनी पड़ती है जिससे काफी समय बच जाता है, आप खेल संगीत, चित्रकला, आदि पर भी ध्यान दे सकते हैं। ऑनलाइन अध्ययन बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने में मदद कर सकती हैं। इ–लर्निंग में बच्चें खुद फैसला करते हैं कि उन्हें कब और कौन–सा विषय पढ़ना है। बच्चें अपनी पढ़ाई के लिए खुद से टाइम तैयार करते हैं। जिससे उनके बेहतर मानसिक विकास में मदद हो सकता है। वैष्विक स्थान पर किसी भी समय ऑनलाइन बढ़ाया जा सकता है आपको केवल एक उपकरण जैसे कंप्यूटर और इंटरनेट कनेक्षन की जरूरत होती है। ऑनलाइन स्क्रीन को शेयरिंग का उपयोग करके विषय को समझना आसान हो गया है, इसमें छात्रों को विभिन्न प्रकार के षिक्षकों से पढ़ने का मौका मिलता है। तकनीकी प्रोद्योगिकी के कारण ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में एक नया बदलाव देखने को मिला है। ऑनलाइन शिक्षा एक उत्कृष्ट शिक्षा का उदाहरण है।

ऑनलाइन शिक्षा के नुकसान

जब बच्चे स्कूल में शिक्षक के पास पढ़ते हैं तब बच्चा एक अध्ययन सूची के मुताबिक निश्चित अवधि के लिए पुस्तकों के साथ पढ़ने बैठता है। यह वर्षो से चली आ रही परंपरा है। स्कूल में छात्र हमेषा अनुषासन का पालन करते हैं। एक निर्धारित समय पर अपना कक्षा कार्य और गृह कार्य पूरा करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा में एक निष्चित अनुषासन का पालन नहीं किया जाता है।

सामान्यतः एक षिक्षक कक्षा में आपको सीधी तरीके से समझा सकते हैं, कक्षा में आपकी बोलचाल और आपकी प्रतिक्रिया देखकर समझ सकता है कि आप विषय को कितने समझ पर रहे हैं। Body Language को पढ़ सकते हैं और उसके आधार पर आपको समझ सकते हैं। दूसरी और ऑनलाइन शिक्षा में प्रत्यक्ष रू‍ से आमने – सामने बात करने का मौका नहीं मिलती है। छात्रों को समझने और प्रगति की निगरानी ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा कठिन होता है। हमने अक्सर देखा है कि छात्र जब समूह में पढ़ते हैं तो वह अधिक सतर्क होते हैं बच्चे अपनी काबिलियत साबित करने के लिए ज्यादा मेहनत करते हैं और प्रतिस्पर्धा का माहौल रहता है। स्कूल में बच्चों की योग्यता जानने के लिए परीक्षाएं और Home work दी जाती हैं उसके मूल्यांकन कर, बच्चे कहां पिछड़ गए हैं और कितने जान पाए हैं, जानने के बाद बच्चों की कमी को पूरा करते हैं जो ऑनलाइन शिक्षा में नहीं हो पाती है।

निष्कर्ष

मेरा मानना है कि ऑनलाइन शिक्षा में बच्चे केवल किताबी ज्ञान ही प्राप्त कर सकते हैं परंतु ऑफलाइन शिक्षा में कक्षा में विद्यार्थी व्यवहारिक ज्ञान और अनुषासन भी सीखता है।

Youth: Social Inclusion and Responsibilities

Rajnisha Kumari
Roll - 25
B.Ed 2023-25

Introduction:-

"The Power of youth is the common wealth for the entire world"Youths are the hope of our Future. The Faces of young people are the faces of our past our present and our Future. No segment in the society can match with the power, idealism, enthusiasm and courage of the young people. The foundation of every state is the education of its youth. Young people who thrive on having their own opinions pave the way for social reformation and liberal thinking. As a result, of these Opinions, society improves.

Role of youth in bringing social change:-

Youth are alike the backbones of a society or country because of a society or country because. They have the propensity to change the dynamics of new paradigm shift in the society for ther more, youths are expected to advance the current situations of society towards bringing solutions through technology, education, Policies and peace in the society. Youth people take an active roles before, jurying and after conflict, deliver humanitarian support, and participate in post conflict peace, trust reconciliation action process.

Responsibilities of youth:-

Youth development specialists coordinate and supervise programs designed to help adolescents discover personal development.

(i) **Create sustainable development:-** A development which is not reckless and is not based on the smallish picture of today. We are taking about the development which will change the economic and social land scape of the country.

(ii) **Taking the country forward:-** In any nation the youth represent the most vital and energetic elements of the population. Statistics indicate that developing nations with sizable youth populations might see significant development in all areas of their economics if they invest in young people's right, education, and health.

(iii) **Exploring new Ideas:-** If youth explore all avenues, we try out every possibility in order to obtain a result on find a solution.

"It is difficult thing to do but if we really want it done,We have to explore all avenues".

Conclusion:-

To conclude, the youth has the power to build a nation that will only help in its development.

"We cannot always build the future for our youth,
But we can build our youth for the Future".

Youth of our country should be supported by friends, teachers and family members. To pursue careers in various fields such as cinema, arts and whatever they wants.

सफलता का मंत्र

शिक्षांजली कुमारी
रौल न0 05
बी.एड –2023–25

मैं कभी कभी सोचती हूं! क्या ऐसा हो सकता है की हम इसे अपनाकर सफलता की राह पर दौड़ पड़े ! मतलब की हमे कुछ जानना चाइए हम इसको सफलता का मंत्र भी कह सकते हैं. या एक सफलता की राह ! कुछ ऐसी बात की जाएगी जो बेहद जरूरी हो ! हमे ऐसा मालूम हो जाये की हमे अपने आप को सफलता की ओर ले जाना बहुत जरूरी है. जिस इंसान को खुद पर भरोसा होता है वो जिंदगी में कुछ ना कुछ मुकाम हांसिल कर ही लेता है। बिना भरोसे किसी चीज़ को करते रहना ऐसा ही है जैसे किसी हारे हुए खेल को बार बार खेलते रहना। जिस तरह सफलता के लिए मेहनत जरूरी है। उसी तरह खुद पर भरोसा होना भी जरूरी है। अगर आप किसी परीक्षा की तैयारी करते हैं और दिन रात पढ़ाई करते हैं लेकिन मन ही मन आप ये भी सोचते हैं की, ये परीक्षा मुझसे नहीं निकल पाएगा, तो उस परीक्षा को पास करना आपके लिए बहुत मुश्किल होगा क्योंकि आप पढ़ाई तो कर रहे हैं लेकिन आपका भरोसा पास होने की तरफ कम और फेल होने की तरफ ज्यादा हो जाता है। भरोसा किसी अज्ञानी व्यक्ति को भी पार लगा देता है लेकिन भरोसे की कमी ज्ञानी व्यक्ति को भी डूबा देती है। अगर आपके अंदर भी भरोसे की कमी होगी तो आप भी जीवन में कामयाब नही हो पाएंगे।

अगर आपके अंदर भरोसा होगा की आप किसी चीज को हासिल कर सकते हैं तो आपका दिमाग कभी भी गलत के बारे में नहीं सोचेगा बल्कि आपका दिमाग हमेशा अपनी सफलता पर फोकस करेगा। इसलिए खुद पर भरोसा रखे। बस ये सोचो की, हाँ मैं ये कर सकती हूँ। कुछ भी नामुमकिन नहीं है। जब आप ऐसी सोच रखोगे तभी आपका खुद पर भरोसा बढेगा और आप उन कामों में भी सफलता पा लेंगे जो अभी आपको नामुमकिन लगते हैं। अगर आपने ये बाते अपने मन में ठान ली तो सफलता आपके पास आयेगी ही उसे आने से कोई नहीं रोक सकता। कुछ लोग हैं जो सिर्फ जेब भरने में लगे हैं, वो बहुत पैसा जमा करना चाहते हैं, उसके लिए वो ना परिवार पर ध्यान दे पाते हैं और ना ही अपने रिश्तों पर जब उन्हें इस बात का ज्ञान होगा की पैसा ही सब कुछ नही है जीवन में बुरे वक्त में अपने ही लोग काम आते है तब उन्हे अपने लोगो का एहसास होगा ! और उसके बाद वो इंसान जो कुछ नही करना चाहते या बस यही तो तुम्हारे सवाल का जवाब है।जब तुमसफलता को भी इतनी ही तीव्र इच्छा से पाना चाहोगे जितनी तीव्र इच्छा से तुम सांसे लेकर अपनी जान बचाना चाहते थे, तब तुम्हें सफलता जरूर प्राप्त होगी। एक बार की बात है, सुकरात किसी काम से अपने शहर से दूसरे शहर की तरफ जा रहे थे। रास्ते में उन्हेंएक व्यक्ति मिला। दिखने में गरीब सा था और हालत भी बहुत खराब थी। शुकरात को देखकर वो सीधा उनके पास गया और बोला,सुकरात, आप तो बहुत बड़े फिलॉस्फर हैं। ज्ञान का भंडार आपके पास है। लोगों को हर तरह का ज्ञान देते हैं। आप आज मुझे भी ज्ञान दीजिए और बताइए की मुझे सफलता कब मिलेगी।उसकी बातें सुनकर सुकरात को लगा की ये कोई पागल है और उनके साथ मजाक कर रहा है। वो उसकी बात का जवाब दिए बिना वहां से निकलने गए। लेकिन उस व्यक्ति ने उन्हें जाने नही दिया और अपने सवाल पर अड़ा रहा। उससे तंग आकर सुकरात ने उसे बोला । पास में एक नदी है कल सुबह तुम वहां पर आ जाना। मैं अपने साथ एक दो और ज्ञानी लोगों को लेकर आऊंगा और तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब दे दूंगा।' अगले दिन वह व्यक्ति नदी के पास पहुंच गया और सुकरात भी दो लोगों के साथ वहां आ गए। सुकरात ने उस व्यक्ति से कहा, चलो नदी में उतरकर इसकी गहराई नापते हैं और वहीं मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दे दूंगा। जैसे ही वो लोग नदी में थोड़ा आगे बड़े तो सुकरात ने अपने दोनों साथियों के साथ मिलकर उस व्यक्ति को पानी में डूबा दिया। पानी में डूबते ही वो व्यक्ति इधर उधर हाथ पैर मारने लगा। उसको छटपटाता देख थोड़ी देर में सुकरात ने उसे छोड़ दिया और वह व्यक्ति तेजी से तैरता हुआ नदी से बाहर आया और जोर जोर से सांसें लेने लगा। थोड़ा देर बाद जब वह सामान्य हुआ तो उसने सुकरात से कहा, अपने मुझे यहां मेरे सवाल का जवाब देने बुलाया है या फिर मेरी जान लेने के लिए। उसकी बात सुनकर सुकरात ने पूछा, जब तुम पानी के अंदर डूब रहे थे तो उस वक्त तुम क्या चाहते थे? वो व्यक्ति बोला, उस वक्त में बस किसी भी तरह पानी से बाहर निकलकर सांस लेना चाहता था और अपनी जान बचाना चाहता था। कहानी हमें सिखाती है कि जब तक अपने लक्ष्य को पाने के लिए हमारे अंदर तीव्र इच्छा नहीं होगी, तब तक हम सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। दोस्तों, हम लक्ष्य तो बना लेते हैं लेकिन उस लक्ष्य को पाने की हमारे अंदर इच्छा नहीं होती। हमारे मन में ये होता है कि ये मिल गया तो ठीक, नहीं मिला तो भी क्या करना। कुछ और देख लेंगे। बस जब तक हमारी सोच ऐसी होगी तब तक हम किसी भी काम में सफलता नहीं पा सकते। किसी भी काम में सफलता पानी है और किसी भी लक्ष्य को पूरा करना है तो उस काम में इस तरह लग जाए कि यही जिंदगी का आखरी काम है और इसके बाद कुछ नहीं हो सकता।

जब हमारे अंदर ऐसी इच्छा जागेगी तभी हमारे अंदर उस लक्ष्य को पाने की उम्मीद बढ़ेगी और उसी के अनुसार हम काम करेंगे और जब चाह बढ़ेगी तभी हमें सफलता मिलेगी वरना हम सिर्फ लक्ष्य बनाते रह जाएंगे। इसलिए अपने अंदर लक्ष्य के प्रति तीव्र इच्छा जगाए की मुझे यह पाना ही है तब जाकर कहीं आप उस लक्ष्य तक पहुंच पाएंगे। थैला वो है हमारा जीवन और जो जेल है वो है हमारे जीवन के आंखिरी दिन यानी की हमारा बुढ़ापा । इस समय में हम जीवन के बगीचे में , हम अपने जीवन को जिन चीजों से भरेंगे, वहीं चीजें अंतिम समय में हमारे जीवन को अच्छा और बुरा बनाएंगी। अब आप खुद से ये पूछे की आप इस जीवन के थैले में क्या भर रहे हैं। किसी ने बड़े कमाल की बात कही है, एक ही गलती हम सारी उम्र करते रहे, धूल चेहरे पर थी, और हम आइना साफ करते रहे।

जंतु विज्ञान का महत्व

लक्ष्मी कुमारी
रौल न0 47
बी.एड. 2023–25

जंतु विज्ञान का मानव के जीवन में काफी महत्व है। चिकित्सा के क्षेत्र में जंतु विज्ञान अहम भूमिका निभाती है। मनुष्य के चारों ओर नाना प्रकार के जंतु रहते हैं। वह उन्हें देखता है और अपनी जरूरत के हिसाब से उनसे काम करवाता है। जिसमें अनेकों जीव जंतु मानव के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। अनेक जीव जंतु मनुष्य का आहार लेते हैं। जंतुओं से हमें दूध प्राप्त होती है। जंतुओं से ही रेशम, मधु, लद्दाख आदि बड़ी उपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं। जंतुओं से ही अधिकांश खेतों में जुताई होती है। बैल ,घोड़े तथा गधे इत्यादि परिवहन का काम करते हैं। कुछ जंतु मनुष्य के शत्रु होते हैं। और यह मनुष्य को कष्ट पहुंचाते हैं। फसल नष्ट करते हैं और पीरा देते है। और कभी–कभी मार भी डालते हैं अतः जंतु विज्ञान का अध्ययन हमारे लिए महत्व रखता है। जंतु विज्ञान के अध्ययन से हम प्राकृतिक दुनिया की समझ हसीन कर सकते हैं। जंतु विज्ञान में मनुष्य के साथ अन्य जीव जंतु का भी शारीरिक संरचना का ज्ञान एवं चिकित्सा का अध्ययन जंतु विज्ञान के अंतर्गत ही आता है। संसार में करोड़ों जीव जंतु है। जिनमें से कुछ हमारे महत्व के हैं जिनको मनुष्य प्राचीन काल से ही उपयोग के लिए पालता है जो निम्न है।

1. गाय – गाय का पालन दूध उत्पादन के लिए किया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम बोस इंडिक्स एवं बोस तोरस है। जिस का जीवनकाल लगभग 20 वर्ष है।

2 बकरी – कुछ जगहों में दूध की कमी को दूर करने के लिए बकरी का पालन किया जाता है इसका वैज्ञानिक नाम इसका जीवन काल लगभग 13 वर्ष है।

3 भेड़ – भेड़ को दूध एवं उनके लिए पाला जाता है बेर का वैज्ञानिक नाम ओवीस अराइस है इसका जीवन काल लगभग 12 साल होता है।

4 मुर्गी – मुर्गी पालन मुख्य रूप से अंडा और मांस के लिए किया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम गैलस डोमेस्टिका है। इसका जीवनकाल 8 से12साल होता है। मधुमक्खी पालन मधुमक्खी पालन शहद के लिए किया जाता है ।एक सामान्य बड़े छत्ते में 40 से 50 हजार मधुमक्खियां पाई जाती है। इसका जीवन काल 3 से 5 साल होता है।

निष्कर्ष

मनुष्य हर तरह से जीव जंतुओं पर निर्भर होता है। यह जीव जंतु पारितंत्र की विधि व्यवस्था को बनाए रखती है। शाकाहारी जंतु जहां पौधों पर निर्भर होते हैं वही मांसाहारी जंतु शाकाहारी जंतु पर निर्भर होते हैं। पालतू जानवर मनुष्य के लिए हर तरह से उपयोगी होते हैं। यह भोजन के लिए अथवा खेती एवं सवारी इत्यादि कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

आदर्श शिक्षक

वंदना कुमारी
रौल न0 58
बीएड 2023–25

प्रस्तावना

मनुष्य को गुणवान बनाने के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि बिना पढ़ा मनुष्य पशु के सामान होता है। मनुष्य के कार्य और व्यवहार में सुन्दरता और शिष्टता शिक्षा के द्वारा ही आती है। शिक्षा जगत में शिक्षक का एक गौरवपूर्ण स्थान है। बच्चों की शिक्षा का पूर्ण दायित्व शिक्षक पर ही निर्भर करता है। समाज और देश के निर्माण में शिक्षक का महान योगदान होता है। यदि शिक्षक चाहे तो देश को रसातल में पहुंचा दे और चाहे तो देश को स्वर्ग बना दे। एक शिक्षक ही देश के लिए योग्य नागरिक का निर्माण करके देश के भविष्य को बनाता है। अतः शिक्षक को समाज में गौरवपूर्ण और सम्मानपूर्ण स्थान मिलना चाहिए। एक विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक एक ऐसा महत्वपूर्ण इंसान होता है जो अपने ज्ञान, धैर्य, प्यार और देख–भाल से उसके पूरे जीवन को एक मजबूत आकार देता है।

अध्यापक का महत्व

अध्यापक का महत्व सर्वविदित है। राष्ट्र का सच्चा और वास्तविक निर्माता अध्यापक ही है क्योंकि वह अपने विद्यार्थियों को शिक्षित और विद्वान् बनाकर ज्ञान की एक ऐसी अखंड ज्योति जला देता है जो देश और समाज के अन्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाती है।

प्रत्येक देश के विद्यार्थी उस देश के भावी निर्माता होते हैं। उनका नैतिक, मानसिक और सामाजिक विकास अध्यापक पर ही निर्भर करता है। अध्यापक उस कुम्हार के सामान होता है जो शिष्य रुपी घड़े को अपने प्रयत्नों द्वारा सुन्दर और सुडौल रूप प्रदान करता है।

आदर्श अध्यापक के कर्तव्य है कि उनके व्यवहार में नम्रता एवं विनम्रता का भाव हो, उनमें सहजता गंभीरता एवं विद्वता झलकता हो ,उनकी वाणी ऐसी हो कि बच्चे के मन को जीत ले ।

वैसे तो शिक्षक का पद अत्यंत गरिमा पूर्ण होता है, क्योकिं "जिस प्रकार खेती के लिए बीज, खाद एवं उपकरण के रहते हुए, अगर किसान नहीं हैं, तो सब बेकार है।उसी प्रकार विद्यालय के भवन, शिक्षण सामग्री एवं छात्रों के होते हुए, शिक्षक नहीं हैं तो सब बेकार है।" शिक्षक शब्द तीन अक्षरों के मेल से बना है लेकिन शिक्षक का अर्थ व्यापक है।

शि–सीखाने वाले।
क्ष–क्षमा करने वाले।
क– कामयाबी पर पहुंचाने वाले।

अर्थात् सीखाने वाले, क्षमा करने एवं कामयाबी प्रदान कराने वाले शिक्षक आत्मज्ञानी एवं महान होते हैं।

आदर्श अध्यापक (The ideal teacher) के निम्न गुण होते हैं :–

1)समय का पालन करना :–

वो हर कामयाब इंसान जो आज सफलता के उस मंजिल को प्राप्त किये हैं। वे समय का पालन करके ही उस मंजिल को प्राप्त किये है। जो इंसान समय का कद्र किया,समय भी उसका कद्र किया है, इसलिए समय का पालन बच्चों को सीखाना बहुत जरूरी है। ऐसे अध्यापक समय का ध्यान रखें तो बच्चे उनके अनुकरण से ही सीखते हैं।

2) नम्र भाषा का प्रयोग करना :–

अध्यापक को कक्षा कक्ष में या कहीं भी नम्र भाषा का प्रयोग करना चाहिए। ऐसे भी नम्र भाषा का प्रयोग कर के कठिन से कठिन कार्य आसानी से करवाया जाता है। छात्र/ छात्रा को भी नम्र भाषा का ज्ञान कराना चाहिए।

3) सहयोग की भावना :–

अगर विद्यालय को सुचारू रुप से चलाना चाहते हैं, तो सहयोग की भावना शिक्षको में होनी चाहिए। जिसे देख कर बच्चे भी आपस में सहयोग करने की भावना सीखेगें।

4) जाति एवं धर्म की बातें ना करना :–

किसी भी अध्यापक का कोई जाति नहीं होता है। उसका एक ही जात है वह शिक्षक। एसे पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा पूर्वक विषय के ज्ञान कराते हुए ,पढ़ाना चाहिए और कक्षा कक्ष में या कहीं भी जाति या धर्म संबंधित बातें नहीं करना चाहिए। यह शिक्षक को शोभा नहीं देता।

5) विषय का पूर्ण ज्ञान :–

जो विषय पढ़ाना है, उस विषय के अध्याय को पहले से पढ़कर विद्यालय जाएं, ताकि बच्चे को उस 40 से 45 मिनट के समय अंतराल में आप अच्छे तरीके से बिना इधर–उधर बातें करते हुए प्रभावी ढंग से बच्चे को अधिगम करा सके।

6) इमानदारी पूर्वक कक्षा कक्ष का संचालन :–

कक्षा का संचालन पूरे आत्मविश्वास के साथ करना चाहिए । ताकि बच्चे ध्यान पूर्वक सुने एवं पूरी निष्ठा के साथ पढ़े।

7) **सृ**जनात्मक **हो**ना :–

अगर अध्यापक सृजनशील हैं , तो बच्चे भी सृजनशील होंगे। क्योंकि अध्यापक बच्चों को सृजनशीलता के बारे में बताते रहते हैं। इससे बच्चे सृजनशील रहते हैं। बच्चों में धीरे धीरे सृजनशीलता आने लगती है।

8) **क्रि**यात्मक **एवं र**चनात्मक **हो**ना

अध्यापक कक्षा में बच्चों को क्रियात्मक एवं रचनात्मक विधि से सिखाते हैं तो सीखा गया ज्ञान हमेशा मददगार होता है। बच्चों में जरूरी है कि वह खुद से प्रयोग करके ज्ञान अर्जित करे।

निष्कर्ष

आदर्श अध्यापक के कर्तव्य(Duties okthe ideal teacher) बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। वह आत्मविश्वासी ,सृजनशील कर्मो पर विश्वास, नम्र , सरल एवं सीधा स्वभाव के होते हैं । वह सहजतापूर्ण अपने विषयों के ज्ञान छात्र–छात्रों तक आसानी से पहुंचते हैं।विद्यालय के छात्र छात्राओं के साथ खेल–खेल में अधिगम कराते हैं । वह समय पर विद्यालय आते हैं, समय पर सब काम करते हैं। वह समय के महत्व के बारे में विद्यालय के बच्चों को बताते हैं, वह कहते हैं कि एक – एक मिनट कीमती है , जितना हो सके उतना ज्ञान अर्जित कर लो।(Time is money) समय ही धन है। वे हमेशा नम्र भाषा का प्रयोग करते हैं। वह हमेशा फॉर्मल कपड़े पहनते हैं उनका पहनावा एक सीधा सदा होता है। उनसे बच्चे हमेशा खुश रहते हैं, क्योंकि विषय के ज्ञान कक्षा को देखते हुए पढ़ाते हैं।

असली **शां**ती

शालिनी **कु**मारी
रौल **न**0 **9**8
बी.एड. **2**022–24

गुरु को लेकर लोगो की अपनी–अपनी धारणायें हैं , पर गुरु हैं कौन? कई गुरु हैं जो संसार की बातें बताते हैं ! मनोकामना पूरी हो जाये, मन के पीछे भागने की क्या जरुरत हैं ? कुछ ऐसे भी गुरु हैं जो कहते हैं हम तुम्हारी मनोकामनाएं पूरी कर देंगे ! मनोकामना पूरी होने से शांति नहीं होगी ! यह बात हम भूल जाते हैं ,और मनोकामना में बह जाते हैं ! संसार का ज्ञान तो हम समझतें हैं , पर ऐसा ज्ञान जो हमें हमारे बारे में बताये उसको हम नहीं समझते हैं ! संसार के बारे में ज्ञान है, पर अपने बारे में ज्ञान नहीं है फिर फायदा क्या हुआ ? जब तक आप जीवित है दुःख–सुख ,रिश्ते–नाते बने रहते है ! एक दिन ऐसा होगा सबकुछ खत्म हो जायेगा ! जब शरीर ही नहीं रहेगा तो रिश्ते–नाते कैसे ! कोई बुरा भी बोले , तब भी कुछ नहीं होगा ! जब तक आप जीवित है अगर कोई पूछे की आप स्वर्ग जाना चाहते है , आप अपना शिर हिला सकते है ! परन्तु जब वह अंतिम दिन आ जायेगा ,तो कोई अगर यह भी पूछेगा की आप स्वर्ग जाना चाहते है , तो अपना शिर भी नहीं हिला पाएंगे और नहीं कह पाएंगे ! जब तक हम जीवित है ,तभी तक ये सबकुछ हो रहा है !इस संसार में हमेशा बदलाव होता रहता है ! कोई वस्तु स्थायी नहीं है ! संत–महात्माओं ने यही कहा है की असलियत बहुत सुन्दर है! जो मन कल्पना करता है उसीको हम सुन्दर मानते है ! जो असलियत है उसको हम देख नहीं पाते है ! इसके लिया ज्ञान का दीप चाहिये! ऐसा दीपक चाहिये जो घर के अंधियारे को दूर कर दे ! प्रार्थना यही हो की इस अंधेरे को ख़त्म करने के लिये मेरे अंदर जो ज्ञानरूपी दिया है ,उसको आप जगा दीजिये ! अगर मेरे जीवन के अंदर प्रकाश हो जाये , तो मैं देख सकुंगी की जिन वस्तुओं के पीछे मैं पड़ी हूँ ,पड़ने की जरूरत नहीं है ! मैं अपने जीवन में सचमुच आनंद का अनुभव कर सकती हूँ !अगर ऐसी जीवन संभावना ,जीवन में हो जाये ,तो वाह–वाह है ! फिर मनुष्य को असली शांति का अनुभव हो सकता है!

आधुनिक युग में नारी शिक्षा का महत्व

Sushma Swaraj
Roll: 65
B.Ed, 2023-25

आधुनिक युग की नारियों ने शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज की नारी पढ़ी लिखी और समझदार होती है। अध्यापक के रूप मे बच्चों को शिक्षा प्रदान करती है। हमारे समाज तथा राष्ट्र के उन्नति में भी नारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

उन्होंने बच्चों का उज्जवल भविष्य के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। आज के युग मे स्त्री शिक्षा बहुत ही जरूरी है जिससे समाज के व्यवहार में सरलता आएगी। जैसे हम सबको पता है कि महिलायें पुरुषो से किसी क्षेत्र में कम नही हैं। एक नारी ही अपने बच्चौ के संस्कार और शिक्षा के लिए उत्तरदायी है। जहाँ एक शिक्षित नारी अपने–घर–परिवार को एक रखने में अपना अहम भूमिका निभाती है। तो वहीं दुसरी तरफ नारी बच्चो को आदर्श और अच्छा इंसान बनाने का काम भी करती है।

नारी शिक्षा नारियों को शिक्षित बनाने की एक अवधारणा है, जो नारी और शिक्षा को जोड़ती है। वर्तमान समय में स्त्री को भी शिक्षित होना उतना ही जरूरी है जितना कि पुरुष को।

स्वरूप और महत्व :–

अगर महिलाएँ शिक्षित हो तो वे अपने घरो की सभी समस्याओ का सामाधान करती हैं। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय विकास में मदद करता है। आर्थिक विकास और एक राष्ट्र के सकल घरेलु उत्पाद की वृद्धि में मदद करता है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में भी मद्द करता है। आधुनिक युग में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बहुत बदलाव हुआ है।

आधुनिक समय के दौरान, महिलाओं की स्थिति में एक स्थिर विकास हुआ था। भारत मे कई महिला सुधारक भी थी, जिन्होंने अपनी महिला समकक्षों के उत्थान और बेहतरी के लिए काम किया। एक शिक्षित नारी अपने पूरे परिवार को साक्षर बनाती है।

शिक्षा के कारण वह स्वयं के अधिकारों को सुरक्षित रखती है और स्वयं को सक्ष्म बनाती है। आज की शिक्षित नारी कल की कुशल गृहिणी है। महिलाओं को शिक्षित करना बहुत ही जरूरी है। जैसे कि हमारे समाज में समाजिक बुराइयों जैसे– दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या जैसे कई बुराइयों को दूर करती है। नारी के बिना समाज का कोई अस्तित्व नहीं है। –चरित्रनिर्मात्री नारी मनुष्य को केवल जन्म ही नहीं देती, उसका पालन पोषण, संस्कार दृ दान और चरित्र दृ निर्माण का दायित्व भी पूरी निष्ठा से निभाती है। माता के रूप में बच्चों का वह प्रथम गुरू होती है। स्त्री की शिक्षा गरीबी पर नियंत्रण करने का एक प्रभावी उपाय है। आज प्रत्येक क्षेत्र में नारी सबसे आगे है जिसका मुख्य कारण नारी की शिक्षित होना है।

कॉलेज की तरफ से भी छात्राओं को शिक्षित करने के लिए हरसंभव प्रयास किया जाता है। गाँवों में रैलियाँ निकालकर महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाता है।

निष्कर्षः–

"नारी शिक्षा" मानवीय समृद्धि और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षित लड़कियाँ समाज में समानता और समरसता की दिशा में प्रबलधारण करती हैं। शिक्षित लड़कियों का समाज में योगदान उनके सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा में सुधार लाता है। उन्हें अधिक समझदार, स्वावलंबी, और सशक्त बनाती है जो उन्हें सफलता की ओर अग्रसर करता है।लड़कियों की शिक्षा के माध्यम से उन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने का मौका मिलता है, जिससे समाज की धारा में बदलाव आता है। वे न केवल खुद को, बल्कि अपने परिवार और समाज को भी सशक्त बनाती हैं।

शिक्षित लड़कियाँ अधिक जागरूक, संवेदनशील, और समाजसेवा की दिशा में उत्तरदायित्व भाव विकसित करती हैं। उनकी शिक्षा से वे अपने आत्मविश्वास को मजबूत करती हैं और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती हैं। इसलिए, हमें लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए ताकि हम एक समृद्ध, समानता से भरपूर, और सशक्त समाज का निर्माण कर सकें।

बिजली चमकती है तो आकाश बदल देती है,
आंधी उठती है तो दिन रात बदल देती है,
जब गरजती है नारी शक्ति तो इतिहास बदल देती है।

Destiny of a nation is shaped in its classrooms.

Kajal Kumari
Roll No. – 97
B.Ed. 2023-25

" Life is about making right things and going on", said RK Narayan in Malgudi Days. Nothing else can be more right than getting right kind of education. As Kothari Commission said, the destiny of India is being shaped in the classroom. It is true, to have a better tomorrow for the nation one has to start working on the building blocks; the children. If children are trained to be the best, they will form the best nation. Education with a difference can make a nation of a difference. Just have a look at the countries investing in their educational system intelligently. They are on the top in the work in every field like America, which spends 6.1% of GDP on education, while Germany spends 4.66%. More the resources are spent, better the classrooms become. Meagre resources not only produce poor quality teachers and students, but also lead to outdated curriculum and traditional teaching methodologies. Gone are the days when teachers used to teach whatever they had learnt in the school. In the 21st century, teachers have to learn continuously. The advent of technology has made it possible for the students to get anything at the click of a mouse. Therefore, a teacher needs to be updated and should keep a track on happenings in the education front. If 20th century was of, for and by teachers, 21st century is of the students where everything will revolve around them. The education given in the 19th Century lasted for lifetime, in 20th century it is lasted for 20-40 years, but today education doesn't sustain for two months due to rapid developments on the technological front. If our teachers stop learning, then development will also stop and our pupils will not be able to match the global competition. The modern nation needs children who can think, experiment, create, explore and express.

एक फासला :सफलता और असफलता के बीच

ज्योति कुमारी
बी.एड. 2022:24

प्रस्तावना

कहते है की अगर ईश्वर जिन्दगी के हर दरवाजा बंद कर भी दे तो एक ना एक दरवाजा जरूर खोल देते है जरूरत होती है तो सिर्फ उसे पहचानने की मैंने अपने नजरो से सफलता और असफलता के बीच पनपी गहरी खायी को चंद कदमो में ही नाप लिया या फिर यों कहे की एक नारी जिसने कभी हार नहीं मानी "सुबह नंगे पैर ओस की बूंद पर चल कर मैंने तन की गरमाहट के साथ साथ मन की कडवाहट को भी धोयी हूँ मैं खुद को सागर से भी विशाल बनायीं चाहे कोइ कितने भी कंकड़ फेक दे पर वो आखिर में मेरे तली में ही बैठ जायेगा याद करती हूँ अपने बचपन को जो आज भी मुझे सबक सीखाती है कि देर से सही पर सफलता तो जरूर मिलती है जब बचपन में चलना सीखी थी तो झुक – झुक के खड़ी हुए थी मै , फिर से झुकने के बजाय अब उड़ने की बारी है।

"एक नारी जिसने कभी हार ना मानी"

जीवन में चाहे संघर्ष जैसा भी हो मैंने कभी वक्त और हालत के आगे घुटने नहीं टेके बल्कि मैंने सफलता और असफलता को खुद से खुद के लिए मापा है मुझे कभी भी ऐसा लगा ही नहीं की मै असफल हूँ बल्कि हमेसा मुझे ऐसा लगा मेरे पास जो है वो किसी सफलता से कम नहीं जब भी किसी ने अपने जिक्र में मेरे संघर्ष को शामिल किया मै बस इतना ही कह पायी की अगर मै एक सोना हूँ तो संघर्ष में निखर जाउंगी अगर मै कृत्रिम हूँ तो बिखर जाउंगी हर संषर्ष में मेरे हसीं से मेरा बहुत साथ दिया ,मेरे हसी ने मुझे कभी अकेलेपन का कोई एहसास नहीं होने दिया और मेरे नींद ने हमेसा मुझे नींद से जागने के बाद एक नयी सुबह दिया मै खुद में अपने आप को बहुत सफल महसूस करती हूँ पर मेरे लिए मेरे अपनों को यह समझाना की मै सफल हूँ या बहुत मुश्किल सा लग रहा है यह है "एक नाड़ी जिसने कभी हार ना मानी'' की एक बहुत ही छोटी सी कहानी जिसने स्वयं को अपराजित मानी मै फिर से अपने जीवन का एक नया अध्याय शुरू की हूँ क्यों की शिक्षाविदों की तरह मेरा भी मानना है की वातावरण अच्छा हो तो कोइ सब कुछ कर सकता है फिर वो वातावरण चाहे बाहरी परिवेश हो या स्वयं के अन्दर का य हा मै हूँ एक अपराजित नारी।

निष्कर्ष

परिस्थिति चाहे जैसी भी हो हमेशा खुश रहना चाहिए और हालातों से कभी हार नहीं मानना चाहिए जीवन एक तपस्या है जितना तपोगे उतनी सफलता मिलेगी विशाल ह्रदय रखना चाहिए तानो के डर से कभी भी सच कहने की आदत नहीं छूटनी चाहिए आप जो भी पाते है वह ही असली सफलता है।

शिक्षा में समानता

नेहा कुमारी
रौल न0 – 06
बी.एड. 2023 –25

शिक्षा में असमानता का तात्पर्य होता है। शैक्षणिक संसाद्यनों का असमान वितरण। अतः हम इसे इस प्रकार समझ सकते है। कि समाज के सभी लोगों को एक समान शिक्षा प्राप्त नही होना। वैसे तो शिक्षा में असामनता के बहुत सारे ऐसे कारण हैं जो हमारे समाज मे विद्यमान हैं लेकिन आज मैं बालिकाओं की शिक्षा के बारें में बताना चाहती हूँ कि भारत मे व्यापक विषमता दृष्टिगोचर हैं। बालकों का जो प्रतिशत हैं,उसकी तुलना में बालिकाओं का शिक्षा का प्रतिशत का ग्राफ नीचे हैं।

इसके प्रमुख व मूलभूत कारण निम्नलिखित हैं

जन समानताः बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा मे असमानता के मुख्य कारण मे से एक हैं, हमारे समाज की मानसिकता हमारे समाज में यह मानसिकता व्यापक तौर से फैल चुकी हैं बालिकाओं की शिक्षा आवश्यक नही हैं उन्हें कौन सी नौकरी करानी हैं, वे थोड़ा बहुत पढ़ना– लिखना आ जाए ताकि घरेलू कार्य संभाल सकें। लेकिन लड़कों को उच्च शिक्षा दिलाऐगें तो वह नौकरी करके घर को चलाऐगें, बुढ़ापे का सहारा बनेगा । बस इसी मानसिकता के कारण बालिकाओं की शिक्षा अतीत से लेकर आजकल प्रभावित होती रही है।

कुप्रथाऐः–बालिकाओं की शिक्षा मे असमानता का एक कारण यह हैं, क्योंकि हमारे समाज मे बहुत सारे ऐसी कुप्रथाऐ मौजूद है, जैसे–बाल–विवाह, प्रदा–प्रथा, दहेज प्रथा इत्यादि। जिसके कारण बालिकाओं की शिक्षा प्रभावित होती है।

बालिकाओं से छेड़छाड़ की घटनाये :– हमारे समाज में बालिकाऐ इसलिए विद्यालय नही जा पाती है, क्योंकि हमारे समाज के अनेक क्षेत्रों मे ऐसे असमाजिक तत्व मौजूद होते है,जिसके कारण बालिकाऐ उच्च शिक्षा को प्राप्त नही कर पाती है, और ऐसे असमाजिक तत्व बालिकाओं की शिक्षा की प्रगति की दिशा मे अवरोधक का कार्य करती है।

निर्धनता या गरीबी :– बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा मे असमानता का प्रमुख कारणों मे से एक ये है, क्योंकि बहुत से माता–पिता ऐसे होते है, जो आर्थिक दृष्टिकोण से उतने संपन्न नही होते है, कि वह अपने सभी बच्चों को समान शिक्षा या उच्च शिक्षा प्राप्त करा सके ।

सक्त कानून का अभाव :– इसे हम शिक्षा मे असमानता का कारण मान सकते है, क्योंकि सरकार तो कानून लागू कर देती है, कि सभी के लिए शिक्षा अनिवार्य है, किंतु वास्तविक जमीनी स्तर पर न होकर कानून के कागजों मे अधिक दिखाई देती है, कारण बालिकाये शिक्षा से वंचित रह जाती है। इस प्रकार अनेक ऐसे कारण हमारे समाज मे विद्यमान है, जिससे बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में असमानताऐं पाई जाती है । अतःजबतक ये सारे कारक हमारे समाज मे समानता नही ला सकते है अतः हमारे समाज को अपनी मानसिकता को बदलनी होगी और लड़के एवं लड़कियो को समान दृष्टिकोण से देखना होगा क्योंकि हमारा समाज विकाशील से विकसित राष्ट्र की ओर तभी जा सकता है जब यहॉ पर बालक–बालिकाओ को समान रूप से शिक्षा प्रदान की जाएगी और रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएगे क्योंकि राष्ट्र विकसित तभी हो सकता है जब उसके विकास मे बालक एवं बालिकाओ दोनो की भागीदारी समान हो । उदाहरण के तौर पर हम देख सकते है कि जो राष्ट्र वर्तमान समय मे विकसित है वहॉ पर बालक एवं बालिकाओ का उसके विकास में समान योगदान होता है। अतः हमे अपने राष्ट्र को विकासशील से विकसित राष्ट्र की ओर ले जाने के लिए हमे अपनी मानसिकता को बदलना होगा और अपने बालक एवं बालिकाओ को समान शिक्षा एवं रोजगार के अवसर को प्रदान करने होगे जिससे हमारा राष्ट्र विकसित हो सके।

अर्थशास्त्र और इनके महत्व

चाँदनी कुमारी
क्रमांक– 70
बी0एड0– 2023–25

अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण विनिमय और उपयोग का अध्ययन किया जाता है।अर्थषास्त्र षब्द संस्कृत षब्दों अर्थ (धन) और शास्त्र की संधि से बना है। जिसका शब्दिक अर्थ है। – धन का अध्ययन किसी विशय के संबंध में मनुश्यों के कार्ये के क्रमबद्ध ज्ञान को उस विशय का शास्त्र कहते है। इसलिए अर्थशास्त्र में मनुश्यों के अर्थ संबंधी कार्ये का क्रमबद्ध ज्ञान होना आवश्यक है। अर्थशास्त्र का प्रयोग यह समझते के लिए भी किया जाता है कि अर्थशास्त्र किस तरह से कार्य करती है और समाज में विभिन्न वर्गे का आर्थिक संबंध कैसा है।

अर्थशास्त्र का प्रयोग

समाज से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है। जैसेः– अपराध, शिक्षा, परिवार, स्वास्थय, कानून, राजनीति, धर्म, समाजिक, संस्थान और युद्ध इत्यादि

अर्थशास्त्र का महत्व

अर्थषास्त्र का सैद्धन्तिक एवं व्यावहारिक महत्व है।

- विधि ज्ञान हेतु
- ज्ञान में वृद्धि
- सिद्धांतो में वृद्धि करना
- तर्कषक्ति में वृद्धि करना
- विष्लेशक षक्ति में वृद्धि करना
- अन्य षास्त्रो से संबंध का ज्ञान

व्यवहारिक महत्व के अन्तर्गत निम्नलिखित लाभ है।

- उत्पादको को लाभ
- श्रमिको को लाभ
- उपयोक्ताओं को लाभ
- व्यापरियो को लाभ
- सरकार को लाभ
- समाज सुधारकों को लाभ
- राजनीतिज्ञो को लाभ
- विद्याार्थियों को लाभ

मूल अवधारणाएँ

मुल्यः– मूल्य की अवधारणा अर्थषास्त्र में केन्द्रीय है। इसको मापने का एक तरीका वस्तु का बाजार भाव है। वस्तु का मूल्य उसके उत्पादन में प्रयुक्त श्रम के बराबर होता है।

अधिकांष लोगो का मानना है कि इसका मूल्य वस्तु के दाम निर्धारित करता है।

माँग और आपूर्ति

माँग आपूर्ति की सहायता से पूर्णतः प्रतिस्पर्धी बाजार में बेचे गये वस्तुओं की कीमत और मात्रा की विवेचना, व्याख्या और पूर्वानुमान लगाया जाता है। यह अर्थषास्त्र के सबसे मूलभूत प्रारूपों में से एक है।

माँगः– किसी नियत अवधि में किसी उत्पाद की वह मात्रा है। जिसे नियत दाम पर उपभोक्ता खरीदनपा चाहता है और खरीदने में सक्षम माँग को सामान्यतः एक तालिका या ग्राफ के रूप में प्रदर्षित करते है जिसमें कीमत और इच्छित मात्रा का संबंध दिखाया जाता है।

आपूर्तिः– वस्तु की वह मात्रा जिसे नियत समय में दियि गये दाम पर उत्पाद या विक्रेता बाजार मे बेचने के लिए तैयार है। आपूर्ति को सामान्यतः एक तालिका या ग्राफ के रूप में परिवत्तीत किया गया है।

निश्कर्शः–

अर्थषास्त्र का अध्ययन हमें अतीत भविश्य और वर्तमान माँडलो को समझने और उन्हें समाजो, सरकारों, व्यवसायों और व्यक्तियों पर लागू करने में सक्षम बनाता है।

Biomedical waste management

Sharda Kumari
Roll No- 60
B.Ed.2023-25

Role biomedical engineers of focus on advances in technology and medicine to develop new devices and equipment for improving human health. For Example, they might design software to run medical equipment or computer simulations to test new drug therapies.

Introduction:

The last century witnessed the rapid mushrooming of hospitals dictated by the need of the expanding population, and the advent and acceptance of "has made the generation disposable" of hospital waste a significant factor in biomedical waste management.

Definition of Biomedical waste management:

Biomedical waste kind of waste containing infection if biomedical waste may solid or liquid. Examples of infectious waste sharps, includes discarded blood samples, Sharps, unwanted, microbiological cultures and Stocks, identifiable body.

Party (Surgical or malignancy)

Sources of Biomedical waste.

1.) Major Sources.

* All hospitals.
* Labs
*Research Centers
*Animal Research
* Blood Banks.
* Nursing homes.
*Mortuaries
* Autopsy centers.

2.) Minor Source

* Clinics
    Canonistic centers.
    Home Care
    Para Medics

Types of Biomedical waste

1. Red Bag (Infectious, Recycle waste)
2. Green Bag (recycle waste)
3. Yellow Bag (Non Recycle Infections)
4. Black Bag (All General waste)
5. Blue Bag (Broken Glassware & Metal waste)
6. White Container (All Infected Sharps waste)

Explain of types.

* White. Container Sharps waste (All Infected sharps waste) Surgical blade,IV canola etc.
* Yellow Bag (Human & Animal body parts) Tissues, Organs, fetus etc.

Red Bag (Infections Recycle waste)- Tubings, plastic Bottles, Urine Bags Syringes without needle etc.

Green Bag (Recycle waste)- Paper, Plastic etc.

Black Bag (All general waste) food waste Mineral water bottles, Paper waste etc.

*Blue Bag (waste sharps including Metals.). Needles, Syringes with fixed Needles, Needles from needle tip Cutter, and Scalpels.

Conclusion:- Importance biomedical waste is very important to protect and maintain hygienic environment.

As biomedical waste management rules are good because in this management infectious wastes are proper dispose It is very important to dispose off biomedical waste, in right way to prevent hazardous to human organisms. Beings and other living

गुरू की सलाह का महत्व

सिम्पी कुमारी
रौल नं0–33
बी.एड. 2023–25

पहले गुरू–शिष्य की परंपरा कुछ अलग थी। आज यह काफी बदल गई है। शिक्षक पहले छात्रों के अभिभावक तुल्य हुआ करते थे। लेकिन आज के छात्र शिक्षकों का सम्मान नहीं करते हैं। आज के शिष्य आधुनिकता के प्रभाव में आकर नैतिक शिक्षा को भूल जाते हैं। कई बार क्षणिक सफलता उनके मस्तिष्क पर चढ़ जाता है। कुछ शिष्य गुरू से अच्छा काम करने लगते हैं तो उन्हें इस बात का घमंड हो जाता है और वे गुरू की सलाह की कद्र करना बंद कर देते हैं। जबकि ऐसा नहीं करना चाहिए। इस संबंध में एक लोक कथा प्रचलित है। कथा–पुराने समय में गुरू और शिष्य, दोनों खिलौने बनाकर बेचते थे और जो धन मिलता था, उसेमें दोनों का जीवन चल रहा था। गुरू के मार्गदर्शन में शिष्य अच्छे खिलौने बनाने लगा था और उसके खिलौनों से ज्यादा पैसा मिलता था।

गुरू के खिलौने औसत मूल्य पर बिकते थे। लेकिन, गुरू रोज शिष्य से यही कहते थे कि तुम्हारे खिलौने में सफाई की जरूरत है। रोज–रोज गुरू यही सलाह देते थे। कुछ ही दिनों बाद शिष्य की ये सलाह बुरी लगने लगी।

शिष्य सोचने लगा कि मेरे खिलौने तो गुरूजी के खिलौनों से अच्छी कीमत में बिकते हैं, शायद इस वजह से 'गुरूजी' को जलन हो रही है। इसीलिए वे रोज मुझे ही सलाह दे रहे हैं।एक दिन गुरू की सलाह से तंग आकर शिष्य गुस्सा हो गया। शिष्य ने गुरू से कहा, 'गुरूजी' मैं आपसे अच्छे खिलौने बना रहा हूँ, मेरे खिलौने के ज्यादा पैसे मिल रहे हैं, फिर भी आप मुझे ही अच्छे खिलौने बनाने के लिए कहते हैं। जबकि मुझसे ज्यादा तो आपको अपने काम में सुधार करने की जरूरत है। गुरू समझ गए कि शिष्य में घमंड आ गया है। उन्होंने शिष्य से धीमी वाणी में कहा, 'बेटा जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तब मेरे खिलौने भी मेरे गुरू के खिलौने से ज्यादा पैसों में बिकते थे। एक दिन मैं भी तुम्हारी ही तरह मेरे गुरू से भी यही बातें कही थीं। उस दिन के बाद गुरू ने मुझे सहाल देना बंद कर दिया और मेरी कला में और ज्यादा निखार नहीं आ सका। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे साथ भी वही हो जो मेरे साथ हुआ था।'

गुरू ने शिष्य पर गुस्सा नहीं किया और धीमी आवाज में जो बातें कही, वह शिष्य को बहुत अच्छी तरह समझ आ गई। उसने गुरू से क्षमा माँगी और अपनी कला को निखारने में लग गया।

अगर हम किसी काम में परफेक्ट होना चाहते हैं तो गुरू की सलाह का पालन हमेशा करना चाहिए। अगर आप काम थोड़ा बहुत अच्छा करने लगे हैं तो अपनी कला पर घमंड न करें, वरना कला का विकास नहीं हो पाएगा और व्यक्ति महान कलाकर नहीं बन पाएगा।गुरू का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। उनके कारण ही सकारात्मक विचार आजीवन हमारे अंदर आ पाती है। कभी निराश की तरफ कदम बढे तो उचित मार्गदर्शन मिल पाता है। हमारी जीत उनके चेहरे की खुशी बढ़ा देती है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि एक गुरू ही अपने शिष्य को खुद से अधिक सफल बनता देखना चाहते हैं। जो शिष्य गुरू की सलाह को जीवन में उतारते हैं, उन्हें सफलता की असीमित ऊँचाइयाँ हासिल होती है। इसलिए हमें अपने गुरू का सम्मान करना चाहिए, और गुरू की सलाह को जीवनपर्यंत पालन करना चाहिए।

प्रकृति और समाज

मो. मेराज
रौल न0 – 10
बी.एड. 2023–25

समाज को प्रकृति से जोड़ने और प्रकृति के करीब लाने की आवष्यकता है, प्रकृति हमारा धरोहर है क्योंकि उसने हमारे जीवन को संवारने के लिए हमें सूर्य, चाँद, हवा, जल, धरती, नदियाँ, पहाड़, हरे–भरे वन और धरती के नीचे छिपी हुई खनिज सम्पदा धरोहर के रूप में प्रदान किया है। मनुष्य अपनी मेहनत से धन कमा सकता है, लेकिन प्रकृति की धरोहर को अथक प्रयास करने के पश्चात् भी बढ़ा नहीं सकता, क्योंकि प्रकृति द्वारा दी गई ये सभी वस्तुएँ सीमित है।

हमलोग जिस समाज में रहते है, उसमें प्रकृति के साथ हमने बहुत कुछ छेड़–छाड़ किया है, अपने पारस्परिक प्राकृतिक संबंध को कमजोर बना दिया है, जिसमें हमने अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति को खतरे में डाला है, जल को प्रदूषित किया है, बहुत सारे पेड़ों को घर बनाने, कृषि कार्य, बड़े–बड़े फैक्ट्रियों के लगाने, उद्योग–धंधो को स्थापित करने, सड़क कार्य तथा हवाईअड्डो के निर्माण इत्यादि में तेजी के साथ विनाष किया है, जिससे पर्यावरण असंतुलित होता जा रहा है। आज के आधुनिक युग में सड़के, भवन, हवाईअड्डा इत्यादि आवश्यक है परन्तु हमें प्रकृति के नियमों का पालन करना जरूरी है, क्योंकि यदि पर्यावरण असंतुलित होता है, तो मौसम में प्रतिकूलता पाई जाती है, वर्षा की कमी महसूस की जाती है, जैसा कि आज कल देखने को मिलता है कि वर्षा नहीं होने के कारण धरती का तापमान भी बढ़ता है और फसलों पर उनका प्रभाव पड़ता है, जिससे किसान का जीवन खतरे में पड़ गया है, जिससे देश में बहुत सारी समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। वर्तमान समय 21वीं शताब्दी का है, जिसमें जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती जा रही है, जिससे देश में बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो रही है। भारत सरकार ने जो देश को विकसित करने का संकल्प लिया है, उसमें निम्न समस्याएँ बाधा डाल रही है–

(i) किसानों की दयनीय स्थिति
(ii) बढ़ती जनसंख्या
(iii) बेरोजगारी
(iv) भुखमरी
(v) अषिक्षा

अतः हम समाज के सभी नागरिकों से आग्रह करते है अपनी मानसिकता को बढ़ाने एवं पर्यावरण को बचाने का संकल्प ले, हमें क्षणिक लाभ के लिए पर्यावरण को खतरे में नहीं डालना है, जैसा कि हम पूर्व परिचित है कि विष्व स्तर पर दो युद्ध हो चुके है और हाल के कुछ दिनों पहले रूस और युक्रेन के बीच हमने युद्ध नहीं महायुद्ध टेलीविजन, अखबारों या सोषल मिडिया के माध्यम से देखा जिसमें लोगों के साथ–साथ पर्यावरण को कितना बड़ा नुक्सान हुआ है।

निष्कर्षतः हमें प्रकृति प्रदत्त चीजों का उपयोग करना चाहिए न कि नाश, हमें ''**जल ही जीवन है**'' और ''**वन है, तो हम है**'' के तहत हमें जल को संरक्षित रखना होगा, नदियों को प्रदूषित होने से बचाना होगा, प्रदूषण रहित गाड़ियों को सड़क पर चलने से रोकना होगा और ज्यादा से ज्यादा पेड़–पौधें लगाने होंगे और लोगों को ज्यादा से ज्यादा पेड़–पौधें लगाने के लिए प्रेरित करेंगे। जैसे कि किसी का जन्मदिन हो, शादी–विवाह या अन्य कोई उत्सव हो, जिससे कि पर्यावरण संतुलित रहे और समाज का विकास हो।

नोटः– भारत के मिसाईल मैन कहे जाने वाले डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने इसी पर्यावरण की समस्या पर टिप्पणी देते हुए कहा था कि यह एक विष्व स्तरीय समस्या है, जिसका निदान अधिक से अधिक पेड़ लगाकर किया जा सकता है।

परमाणु शक्ति शांति हेतु

भव्या कुमारी
रौल न0 36
बी.एड. 2023–25

अग्नि, भाप और विधुत के समान परमाणु भी शक्ति का स्रोत है। इस शक्तिशाली ऊर्जा का उपयोग निर्माण के लिए भी कर सकता है और विनाश के लिए भी कर सकता है। अब तक इस ऊर्जा का उपयोग विनाशकारी कार्यों के लिए किया गया है। वैज्ञानिक इस ऊर्जा का उपयोग निर्माणकारी उद्देश्य के लिए भी कर रहे हैं। यदि वे सफल होते हैं तो हम एक नए संसार में प्रवेश करेंगे। वैज्ञानिक के पास एक और विकल्प है वे इस परमाणु ऊर्जा का उपयोग उद्योग कृषि और यातायात में सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

ऊर्जा की कमी – संसार पहले से ही कोयला, पेट्रोल और अन्य ईंधन के स्रोत की कमी झेल चुका है। हम इसका उपयोग विद्युत शक्ति के निर्माण में कर सकते हैं। यह मशीन एवं उद्योगों के संचालन में काफी हद तक मदद करेगी। जिसकी सहायता से हम अधिक उत्पाद कर सकते हैं। उत्पाद अधिक होने से मूल्य कम हो जाएगा और सभी जनता इसका उपयोग कर सकेगी। कुछ विकसित देश जैसे रूस, अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया इत्यादि पहले से ही इस ऊर्जा का उपयोग आरंभ कर दिया है। औद्योगिक उद्देश्य के लिए भारत ने भी परमाणु ऊर्जा का उपयोग से विद्युत शक्ति का निर्माण किया है। भले कुछ देश अहंकार के कारण इसका दुरुपयोग कर रहे हैं, जो अशांति को बढावा दे रहा है।

परमाणु ऊर्जा का उपयोग – आज हम पेट्रोल, कोयला और विद्युत से हवाई बसे, रेल, पानी के जहाज और हवाई जहाज दौडते हैं। इन शक्तियों के स्रोत के स्थान पर परमाणु ऊर्जा का उपयोग कर सकते हैं, जिससे यातायात सस्ता, तेज और आरामदायक बनेगी। वर्तमान युग में परमाणु ऊर्जा का उपयोग सारे राष्ट्र अपने–आप को शक्तिशाली प्रदर्शित करने के लिए कर सकते हैं और अधिक संख्या में परमाणु बम बनाने में लगे हुए हैं।

कृषि में परमाणु ऊर्जा – हमें खाद उत्पाद में वृद्धि के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता है। परमाणु शक्ति से बंजर भूमि खेती योग्य भूमि में परिवर्तित किया जा सकता है। आगे इस ऊर्जा का उपयोग कम समय में फसल की बुवाई के लिए किया जा सकता है। इस ऊर्जा की उपलब्धता से हम अधिक फसल उगाने योग्य बन जाएंगे।

निर्माणकारी उपयोग – परमाणु ऊर्जा का उपयोग शांति संपन्नता और मानवता लाने के लिए निर्माणकारी कार्यों में किया जाना चाहिए। यह एक अच्छा सेवक भी हो सकता है और बुरा स्वामी भी। पूरे विश्व को इसके विनाशकारी उद्देश्यों पर प्रतिबंध लगाना अति आवश्यक है। क्या प्रसन्नता की बात है कि इस दिशा में निरंतर प्रयास किया जा रहा है।

परमाणु शक्ति और विश्वशांति – विश्व में सर्वप्रथम अणु विस्फोट 13 जुलाई 1944 में अमेरिका द्वारा किया गया था। इसके पश्चात रूस, फ्रांस जैसे देशों ने अणुशक्ति प्राप्त की । यह कितनी विचित्र बात है कि परमाणु बम के साथ जब हम शांति का नाम लेते हैं तो विरोधाभास प्रतीत होता है। हम कहते हैं कि परमाणु शक्ति विश्वशांति, परंतु यह भी स्पष्ट है कि यदि मनुष्य इसका दुरुपयोग करने लगे तो यह शक्ति अशांति और आतंक का भी कारण है। आज विश्व में मानवता त्रस्त हो गई है। विश्वव्यापी दो महायुद्धओं से मानवता इतनी भयभीत नहीं थी इतनी आतंकित और त्रस्त नहीं हुई थी जितनी आज आतंकित है। तृतीय महायुद्ध का नाम लेते ही विश्व भर की मानव जाति भयभीत हो उठती है। सबसे पहले सन् 1945 ई. में अमेरिका ने जापान पर दो परमाणु बम गिराए थे जो आज के परमाणु बमों के सामने एक खिलौना था। इस बम से जापान के दो नगर हिरोशिमा और नागासाकी क्षणभर में पूर्णतः समाप्त हो गईं। मानवता ने ऐसा विनाशकारी रूप विश्व के इतिहास में शायद पहले कभी नहीं देखा था। ऐसा लगता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में जाकर निरस्त्रीकरण और परमाणु शक्ति के निषेध पर लंबे–लंबे भाषण तो सभी देते हैं और बहुत बार संधि भी करते हैं परंतु भीतर ही भीतर परमाणु शक्ति की तैयारी में लगे रहते हैं। परंतु एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब परमाणु शक्ति विश्व में शक्ति, समृद्धि और कल्याण का साधन बनेगी।

परमाणु शक्ति और भारत– आज भारत विश्व का छठवाँ ऐसा देश है, जिसके पास अणु–शक्ति का प्रचुर संसाधन है। आज भारत ने स्वयं को इस दृष्टि से अत्यधिक विकसित कर लिया है। होमी जहांगीर भाभा की अध्यक्षता में एक परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की गई। बाबा ने वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान को विज्ञान के क्षेत्र में स्थापित किया। भारतीय इतिहास में परमाणु शक्ति के सफल परीक्षण का कोई पहला मौका नहीं था। सन् 1947 ईं को प्रांत 8 बजे राजस्थान के पोखरण नामक स्थान में भारत ने सफल परमाणु शक्ति विस्फोट किया। भारत ने कभी भी इस शक्ति का दुरुपयोग करने की चेष्टा नहीं की, सदैव इस शक्ति का विकास और रचनात्मक कार्यों में ही किया।

उपसंहार – अमेरिका और रूस के माध्य परमाणु दौर समाप्त हो गई लेकिन चीन परमाणु बम बनाने मे सफल हुआ। परंतु संसार ने माना है कि परमाणु शक्ति संपन्न भारत विश्व शांति का प्रबल समर्थक है। सरकार को परमाणु परीक्षणों पर रोक लगाना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो बहुत ही उचित कदम होगा।

आधुनिक समाज में शारीरिक शिक्षा का महत्व

Julee Kumari
Roll no. :- 91
B.Ed, 2023-25

आज के समय में पढ़ाई के साथ साथ विद्यार्थी को शारीरिक शिक्षा पर ध्यान देने की भी बहुत जरूरत है। आज का समय ऐसा है फि आप केवल किताबी कीडा बनकर नही रह सकते। आधुनिक समाज में शारीरिक शिक्षा महत्व होना भी उतना ही जरूरी है जितना की किताबी ज्ञान का होना। अगर आप पढ़ने मे अच्छे है लेकिन आपका शरीर कमजोर है तो ऐसी पढाई का कोई फायदा नहीं है। आधुनिक समाज मे शारीरिक शिक्षा का महत्व भी किताबी ज्ञान के बराबर है।

शारीरिक शिक्षा से तात्पर्य :–

शारीरिक शिक्षा से सीधा तात्पर्य है कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए शारीरिक श्रम को महत्व प्रदान करना। शारीरिक शिक्षा शब्द का इस्तेमाल शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए की जाने वाली गतिविधियों से है।

आधुनिक समय में शारीरिक शिक्षा का महत्व काफी ज्यादा बढ़ गया है इसलिए लोग अब शारीरिक शिक्षा से जुड़ी बहुत सी क्रियाएँ करने लगे हैं। वे क्रियाएं इस प्रकार है– व्यायाम, खेलकूद, एडवेंचर, स्पोर्टस इसके अलावा व्यक्तिगत स्वास्थ्य और जन स्वास्थ्य भी शारीरिक शिक्षा का ही एक हिस्सा है।

शारीरिक शिक्षा क्यों जरूरी है

शारीरिक शिक्षा के महत्व को हम इस तरह समझ सकते है:–

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन फा वास होता है। अगर आप शरीर से स्वस्थ नहीं रहेंगे हो आपका मन भी अंदर से दुर्बल महसूस करेगा और कोई भी चीज मे मन भी नहीं लगेगा। अतः कहा जा सकता है कि स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मन का वास होता है।शरीर को बीमारियो से लड़ने लायक बनाता है। शारीरिक शिक्षा मानव की बिमारियों से लड़ने के लिए मजबूत बनाता है। यह मनुष्य की इम्युनिटी को अंदर से मजबूत बनाने के लिए जरूरी है। खासतौर पह कोरोना के बाद शारीरिक शिक्षा और महत्व बढ़ गया है।

कमाई का जरिया

शारीरिक शिक्षा आज के समय में कमाने का अच्छा जरिया बन गया है शारीरिक शिक्षा, शिक्षक के रूप किसी भी कॉलेज या विद्यालय में आपना कैरियर बना सकते हैं या फिर आप रहेंगे तो कोई भी काम आसानी कर सकते हैं।

स्कूल या कॉलेजों में शारीरिक शिक्षा का महत्व

- विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास का माध्यम
- भविष्य में वीरो को तैयार करने का माध्यम
- भविष्य के खिलाड़ियों को तैयार करने का माध्यम
- शारीरिक शिक्षा के बारे में महापुरुषों का कथन
- बाबा रामदेव– एक बीमार शरीर मन को स्वस्थ बनाता है
- अरमन स्पेक्टर दृ हमारे स्वास्थ्य से ज्यादा जरूरी कुछ नहीं है। यह हमारी निजी सम्पति है
- जिम रोन दृ अपनी शरीर की देखभाल करो क्योंकि यह वह जगह है जहाँ हमें रहना है।

निष्कर्ष

शारीरिक शिक्षा ही मानव को हर प्रकार के संघर्ष का सामना करना सीखाती है। शारीरिक शिक्षा ही मानव को किसी भी प्रकार के समस्याओं का सामाधान करना सिखाती है। शारीरिक शिक्षा ही आप में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है, जिसके माध्यम से आप चुनौतियों को भी हँसकर स्वीकार कर लेते है। इंगलिश में कहा गया है "HEALTH IS WEALTH" यानी की "स्वास्थ्य ही धन है।"

Terrorism - A threat to Global peace

Shambhvi
Roll - 28
B.Ed, 2023-25

"it is clear once again that terrorism is a global threat. Terrorism is a threat to peace, freedom, human dignity and civilization. Terrorism is cowardice armed at innocent. It is fed on hatred and cynicism."

Dr Manmohan Singh
(Ex Prime Minister)

Terrorism is in it's broadest sense the use of intentionally indiscriminate violence in order to achieve a political, religious or ideological aim. It is classified as fourth generation warfare and as a violent crime. In modern times, terrorism is considered a major threat to society. There was a time when terrorism was a distant concept and to some extent was confined to the state of Jammu & Kashmir and central India. But now-a-days, no one seems to be safe in this world. No continent, no nation is exceptional to terrorism attacks. Events over the last few years have made terrorism the focus of the world attention. The attack across the world, especially the appalling 9/11 attack in 2001, in which terrorists belonging to a terrorist organization named Al- Qaida group, hijacked four planes and had three of them crash into America's most prominent buildings, namely The Twin Towers of World Trade Centre at New York and the Pentagon at Washington within a span of 60 minutes. The fourth hijacked plane didn't succeed in it's mission as it crashed into a desolate place near Pittsburg, probably after a fight between the passenger and the hijackers. No other event in America's recent history has had so much impact on American establishment, economy and political leadership as this event. Following this, the November 2015 Paris attacks were a series of coordinated terrorist attacks that occured on Friday 13th November 2015 in Paris, France and the city's northern suburb, Saint- Denis. There were total eight explosions in different parts of the city, followed by several mass shootings and suicide bombings. The attackers killed 130 people. The attackers were deadliest on France since World War II. The Islamic state of Iraq and the Levant (ISGL), claimed the responsibility for the attacks. The recent attack by four heavily armed terrorists on 18th September 2016 around 5.30 am, near the town of Uri in the Indian administered state of Jammu and Kashmir, was reported as the heinous attack on Security forces in Kashmir in two decades. No group has claimed the responsibility for the attack though a terrorist group is suspected of being involved in the planning and execution of the attack. India hits out at Pakistan after this attack. So, in order to make this world a better place to live in, countries must come forward to the growing menace i.e. terrorism and stop the violence, fear and bloodshed. It is a mammoth task and certainly not an easy one and nations would have to collaborate and reach consensus on how to achieve their goal of a terror free nation and in turn a terror-free world. Peace is the only lasting solution to many of the problems hampering the nations across the globe.

शिक्षा एवं मानव

रागनी कुमरी
रौल न0 83
बी.एड. 2023–25

बिना शिक्षा का मनुष्य पशुतुल्य है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य को न अपने कर्तव्य का बोध होता है, और उसकी आंतरिक और वाह्य शक्तियों का विकास ही हो पाता है। अतः मानव वृत्तियों के विकास तथा आत्मिक शांति के लिए शिक्षा परमाश्यक है। शिक्षा से मनुष्य की बुद्धि परिष्कृत और परिमार्जित होती है। शिक्षा मनुष्य को कर्तव्यबोध कराता है, उसे सत् और असत् के बीच अंतर समझने को विवेक प्रदान करता है। शिक्षा मानव को अज्ञानान्धकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश में विचरण करने हेतु विकसित करता है।

प्रत्येक देश का भविष्य विद्यार्थी होता है, क्योंकि विधार्थी ही देश का भावी नागरिक होता है। देश की आशा और आकांक्षा देश के नवयुवकों पर टिकी होती है नवयुवक की जैसी शिक्षा होगी, देश का भविष्य भी वैसा ही होगा । प्रत्येक देश का उत्थान उसकी शिक्षा और उसके विद्यार्थियों पर आधारित होती है मनुष्य एक ऐसा चेतन संपन्न, तर्कयुक्त और विवेकशील प्राणी है, जो सदा विकास की ओर अगसर होने का प्रयत्न करता है । वह अपनी तथा अपने संतति के स्वावलंबन हेतु प्रयासरत रहता है। मनुष्य की उन्नति अवनति उसके शिक्षा पर निर्भर करती है। विद्यार्थी का परम कर्तव्य विद्याध्ययन ही है, उन्हें अपनी पूरी शक्ति ज्ञानार्जन में ही लगानी चाहिए। देश और समाज के प्रति भी नवयुवकों का कर्तव्य है। देश और समाज का भी इनसे बड़ी अपेक्षा रहती है। विद्यार्थी का समस्त जीवन केवल अपने लिए ही नहीं, समाज और देश के लिए भी है। देश को इन्हीं में से योग्य इंजीनियर, कुशल चिकित्सकों, वैज्ञानिकों, साहित्य मर्मज्ञ विद्वानों, कुशल शिक्षकों और सफल व्यापारियों की तलाश होती है। देश की संपूर्ण उन्नति एवं पूर्ण समृद्धि के लिए इन सब का होना परमावश्यक है। शिक्षा एक ऐसा साधन है, जिससे समाज और देश का सर्वांगीण विकास हो सकता है। कल्पना कीजिए किसी परिवार का अब कोई छात्र कोई बड़ी प्रतियोगिता परीक्षा उत्तीर्ण कर बड़ा अधिकारी बनता है, तो पूरा समाज गौरवान्वित होता है। अब कोई, राजेन्द्र प्रसाद, डा० राधाकृष्णन,ेज्ज अब्दुल कलाम, अमर्त्य सेन, कल्पना चावला जैसा प्रतिभाशाली अपनी प्रतिभा से पूरे विश्व को सुरभित करता है, तो पूरा देश गौरवान्वित होता है। कोई एक छात्र किसी भी क्षेत्र में चाहे वो विज्ञान का क्षेत्र हो, साहित्य का क्षेत्र हो, कला का क्षेत्र हो या खेल अथवा गीत–संगीत का क्षेत्र हो विश्वस्तर पर अपनी प्रतिभा से ख्याति अर्जित करता है तो हमारा देश विश्व पटल पर प्रतिष्ठापित होता है, और तरक्की के रास्ते पर अग्रसर होता है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन नहीं अपितु समस्त शक्तियों का स्वाभाविक, संतुलित और प्रगतिशील विकास है। जितने भी विकसित देश है, या विकसित समाज है, उसका आधार शिक्षा है शिक्षा ऐसी नीव है, जिसपर हम एक सशक्त और समृद्ध जीवन की इमारत खड़ी कर सकते है। शिक्षा हमें 'क्या करना है' और 'क्या नहीं करना है' का विवेक पैदा करता है। जीवन में हमेशा आपकी सफलता आपके निर्णय लेने की क्षमता है पर निर्भर करती है। सात Word हैं, यथा – What,When, Why, Where, How (उच्चारण के अनुसार Wh) Which, Who ये हमेशा मेरे सामने आकर निर्णय लेने की क्षमता की परीक्षा लेती है। यदि हम परीक्षा मे सफल होते है तो जीवन में भी सफल होते हैं। अर्थात शिक्षा ही सफल व्यक्ति, सशक्त और समृद्ध समाज का निर्माण करता है। इतना ही नहीं, समाज में व्याप्त सभी बुराईयो कुरीतियों एवं असमानताओं का उपचार शिक्षा ही है। शिक्षा समाज में एकरसता, एकता एवं अनुशासन का संचार कर एक आदर्श समाज का निर्माण करता है।

सेंट पाल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में हुआ सत्रारंभ

प्रशिक्षुओं को शिक्षक बनने का दिया गया टिप्स

सेंट पाल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में काउंसिलिंग

कार्यक्रम को संबोधित करते अतिथि ● जागरण

समस्तीपुर, वि. : संत पाल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज वीरसिंहपुर में करियर काउंसिलिंग सेल के तत्वावधान में महाविद्यालय के सभी बीएड और डीएलएड के प्रशिक्षुओं की काउंसिलिंग कराई गई। उद्घाटन कालेज की प्राचार्या डा. रोली द्विवेदी, विभागाध्यक्ष डा. एपी सिंह एवं प्रो. शैलेंद्र कुमार वर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया। डीएलएड के विभागाध्यक्ष ने अपने संबोधन में छात्रों को सरकारी नौकरियों का परिचय देते हुए उससे मिलने वाले समस्त लाभ से अवगत कराया। मुख्य अतिथि प्रो. शैलेंद्र कुमार वर्मा ने संबोधन में बताया कि हमारे पास नालेज है तो हम कभी भी बेरोजगार नहीं रह सकते हैं। समन्वयक सहायक प्राध्यापक मो. निजामुद्दीन, मीना कुमारी, मिथिलेश कुमार सहित सभी प्राध्यापक उपस्थिति रहे।

शिक्षक प्रशिक्षण कॉ...

अभियान में शामिल लोग।

कल्याणपुर : संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज वीरसिंहपुर में ... जागरूकता दिवस मनाया गया। होमी जहांगीर भाभा कैंसर ... मुजफ्फरपुर के तत्वाधान में प्राचार्या डॉ रोली द्विवेदी एवं वि... सिंह ने छात्र-छात्राओं को कैंसर के कारणों के निदान पर ... मनीष कुमार झा एवं डॉ खुशबू ने कहा कि तम्बाकू आदि ... कारक है। उन्होंने कहा कि अगर आप अपनी गलत आदतों ... किसी प्रकार के कैंसर से बच सकते हैं।

टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में संविधान दिवस

कार्यक्रम को संबोधित करते अतिथि ● जागरण

समस्तीपुर, वि. : संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज वीरसिंहपुर में संस्था के प्राचार्या डा. रोली द्विवेदी के निर्देशन में कार्यक्रम प्रभारी डीएलएड के विभागाध्यक्ष डा. एपी सिंह के द्वारा संविधान दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें शपथ ...ण के साथ भारतीय संविधान की ...िका (प्रस्तावना) का वाचन किया ... संचालन प्राध्यापक आदित्य प्रकाश ने किया। ... प्राध्यापक तह... चंद्रभूषण मिश्र... कुमार, संतो... अर्पणा कुमारी...

प्रशिक्षु शिक्षकों को दिये गये योग के टिप्स

प्रशिक्षु शिक्षकों को कैंसर से बचाव के दिये गये टिप्स

टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में हुई विज्ञान प्रतियोगिता

कल्याणपुर। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर संत पाल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज बिरसिंहपुर में मंगलवार को रमन इफेक्ट राष्ट्रीय विज्ञान फ्यूचर ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एवं इनोवेशन पर विज्ञान प्रदर्शनी लगाई गई। मौके पर कॉलेज की प्राचार्य डॉ.रोली द्विवेदी ने बच्चों के जीवन में साइंस एवं टेक्नोलॉजी की ...मिका पर प्रकाश डाला। प्रतियोगिता में ...थम स्थान अमर कुमार, द्वितीय स्थान ...ालिनी कुमारी को व तृतीय स्थान अंकित कुमार सिन्हा ने प्राप्त किया। उन्हें पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में तहसील आलम कादरी, अर्पणा कुमारी आदि मौजूद थे।

संत पाल के संस्थापक की मनी 77 वीं जयंती

नयी शिक्षा नीति भावी पीढ़ी के लिए उपयोगी

TWO DAY
NATIONAL SEMINAR

EDUCATIONAL TOUR

TWO DAY

GPS Map Camera
kalyanpur birsinghpur, Bihar, India
St. Paul Teacher's Training birsinghpur
samastipur Bihar
Lat 25.941309° Long 85.734134°
28/02/23 01:50 PM GMT +05:30
Google

Amit Memorial Rural Institute For Transformation (AMRIT)
14 फरवरी 2023
आयोजककर्ता
सह-शैक्षिक समिति